मुक्ति यात्रा

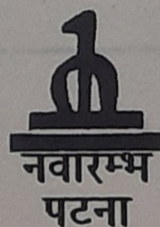
आनन्द कुमार झा



मुक्ति यात्रा

(मैथिली नाटक)

आनन्द कुमार झा



पोथी विक्रय केन्द्र
मिथिला स्टेशनरी आ मैथिली पुस्तक केन्द्र
जनता कॉलेजक समीप, कोर्ट चौक, झंझारपुर
जिला- मधुबनी- 847404
मो. - 09939041881
Email : anandmehath@gmail.com

ISBN : 978-93-82013-76-1

मुक्ति यात्रा
(मैथिली नाटक)

आवरण : मृत्युंजय कुमार

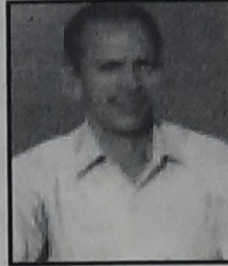
प्रथम संस्करण : 2017
मूल्य : 150 रु.

प्रकाशक
नवारम्भ
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
मधुबनी : वार्ड न.-2, विवेक पुरम्
Email : navarambhprakashan@gmail.com
lekhakajitazad@gmail.com
मो.-08434680149, 09631459988

मुद्रक
आर.के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

Mukti Yatra
Maithili Play By **Anand Kumar Jha**
Edition : 2017, Price : Rs 150/-

श्रद्धांजलि



अभय कान्त झा

11 जून, 1944-08 फरवरी, 2006

हे पिता, अहाँ जे सर्जनाक बाट हमरा संकल्पपूर्वक धरा गेलहुँ, ओही बाटपर एखन पर्यन्त दृढ़तापूर्वक हम चलि सकलहुँ अछि। अहाँ हमरा आशीर्वाद दिअ, आगहुँक मार्ग कठिनसँ कठिन सन परिस्थितिओमे, दुख, अभाव आ विफलताकेँ नकारैत निर्वाध, निर्विकार निर्भय बनि दायित्वक निर्वहण करैत सतत् चलि सकी।

अहींक पुत्र

आनन्द कुमार झा

चिन्ता आ चिन्तन लेल प्रेरित करैत नाटक

मैथिली साहित्यक गौरवशाली इतिहासक जड़िमे नाटक अछि। एक समय एहनो छल जखन सम्पूर्ण भारतवर्षमे, खास क' उत्तर भारतमे मैथिली नाटकक डिगडिगिया बाजि रहल छल। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक 'धुर्त समागम', विद्यापतिक 'मणिमंजरी' आ 'गोरक्ष विजय' एवं उमापति उपाध्यायक 'पारिजात हरण' समस्त भारतीय भाषाक नाटकक मध्य मैथिली नाटकक ध्वजा बनि फहरा रहल छल। लोकगाथाक जड़ि त' एहूसँ पुरान अछि किन्तु इतिहासक बहुत रास पन्ना हमरा लोकनिक भूल अथवा अनभिज्ञताक कारणे आर पाछू धरि जाइ देबाक बाट छेकने रहल जखनकि हमरा लोकनि आसानीसँ 'चर्यापद' धरि जाइए सकैत रही। बौद्धगान असलमे हमरे सभक सम्पति थिक किन्तु पछता रोटी खयबाक कारणे अथवा अगधायल मोनक दंभक कारणे 'वर्णरत्नाकर'केँ मैथिली साहित्यक प्रस्थान-विन्दु मानि लेलहुँ अछि।

वर्णरत्नाकरमे वर्णित विषय एकर प्रमाण अछि जे लोकनाट्य (नाच आदि)क मामिलामे हमरा लोकनि अदौसँ समृद्ध छी। वर्णरत्नाकरकेँ मैथिलीक आदि-ग्रन्थ मानि लेबाक ऐतिहासिक भूल हमरा लोकनिसँ भेल अछि। एहि सन्दर्भ पर पुनर्विचार हेबाक चाही।

आनन्द कुमार झाक नाटक 'मुक्ति यात्रा' पर विचार करैत इतिहासक पुरना अध्याय सभ दृष्टि-पटल पर आबि तुलायल अछि। प. जीवन झाक नाटक 'सुन्दर संयोग'सँ आरम्भ भेल आधुनिक मैथिली नाटकक यात्रा अपन अनेक पड़ावकेँ पार करैत आइ जतय धरि पहुँचल अछि ताहि पर गर्व करबाक समुचित आधार अछि। एहि मध्य प. इशनाथ झा, प. गोविन्द झा, महेन्द्र मलंगिया, उदय नारायण सिंह 'नचिकेता', रोहिणी रमण झा, विभूति आनन्द अरविन्द अक्कू, छत्रानन्द सिंह झा, उषाकिरण खान, रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', परमेश्वर कापड़ि, रमेश रंजन, कमल मोहन 'चुन्नू', विभारानी, कुमार गगन, ऋषि वशिष्ठ आदि नाट्य-लेखन परम्पराकेँ विस्तार देबामे अशेष योगदान देलनि किन्तु क्षोभक संग इहो कहय पड़ि रहल अछि जे एकैसम शताब्दी मैथिली नाटकक सन्दर्भमे लिलोह भेल अछि। एकर मूल कारणमे अछि, व्याप्त होइत जा रहल सांस्कृतिक प्रदूषण। नाटक लेल अजबारल मंच सभ पर

ऑर्केस्ट्रा उतरि आयल अछि। पाबनि-तिहारमे नियमसँ होइबला नाटक सभकेँ धकियाक' नेपथ्यसँ बहुत दूर क' देल गेल अछि। दर्शक लोकनिक अभिरूचि पर 'नंगा नाच' लादि देबाक कुचक्रमे नवका पीढ़ी अपसियाँत अछि। एहि मामिलामे हमरो लोकनि कम दोषी नहि छी। नाटककेँ शहरिया रंगमंचक अनुरूप बनेबाक अनपेक्षित लिलसामे ग्रामीण रंगमंचक अबहेलासँ वर्तमान परिदृश्यक निर्मिति भेल अछि। गामकेँ चाही सहज, सुलभ आ सस्त नाटक। शहरी रंगमंच एहि माँगक अतिक्रमण करैत अछि। नाटककार लोकनि जाबत धरि सम्हरितथि, ताबत धरि विलम्ब भ' चुकल छल। ई क्षतिपूर्ति एखनहुँ सम्भव अछि किन्तु एहि लेल एकल प्रयासक नहि, सामूहिक संगोरक खगता छैक। नाट्यालोचक लोकनिकेँ सेहो अपन चश्माक नम्बर बदलय पड़तनि, तखनहि दूरक ई कौड़ी लग बुझना जायत।

आनन्द कुमार झा युवा पीढ़ीक प्रतिनिधि नाटककार छथि। कोलकाता प्रवासक क्रममे ई अनेक नाटक लिखलनि। हिनक अनेक नाटक मंच सभ पर सफलतापूर्वक मंचितो भेल। उद्देश्यपरक नाटक लिखबाक अभिलाषामे ई कहियो हल्लुक नहि भेलाह। विषयक चयन आ मंचीय उपस्थापनमे अपनाकेँ ई बेर-बेर साबित कयलनि। 'हठात् परिवर्त्तन' लेल साहित्य अकादेमीक प्रतिष्ठित युवा पुरस्कार सेहो भेटलनि। नाटकसँ भगैत दर्शककेँ प्रेक्षागृह धरि अनबाक आ पूरा नाटक मोन लगाक' देखबाक लेल विवश करयबला ई नाटककार बादमे किछु ठमकि सन गेलाह। हिनक ठमकब, मैथिली नाट्य-साहित्यक नुकसान कयलक। रंग-अभियानसँ जुड़ल अनेक लोक हिनक खोज-खबरि लेलकनि किन्तु ई निजी समस्याक समुद्रमे भासल चलि जाइत रहलाह। पिताक मृत्युक बाद कोलकाता छूटि सन गेलनि। सुभ्यस्त चाकरीक अभावमे रने-बने बौआइत ई लेखक कचकैत हृदयक संग नाटकसँ दूर होइत चलि गेलाह। लगभग सभ गोटे ई मानि लेलनि जे आब आनन्द जी नहि घुमि सकताह!

मुदा नहि, आनन्द जी घुमलाह आ निस्सन डेग संग घुमलाह अछि। 'शो मस्ट गो ऑन'क सिद्धान्तक अनुरूप हिनका भीतरक नाटककार पतनुकान लेने छल, मुइल नहि छल। विषयक अन्वेषणमे हिनक मोन-प्राण लागल-भीड़ल छल। 'मुक्ति-यात्रा' ओही अन्वेषणक सुपरिणाम थिक। समाजमे व्याप्त कुरीति पर प्रहार करब हिनक नाटकक केन्द्रीय तत्व रहल अछि। एहू नाटकमे हुनक उक्त आक्रमण-शैलीक दिग्दर्शन होयत मुदा नव रूपमे, नव ढंगसँ। एहि

नाटकमे जे विषय उठाओल गेल अछि से सर्वथा नव अछि। सीमा पर लड़य बला सैनिकक मादे आइ सगर देश सोचि रहल अछि किन्तु साहित्यक लेल ई विषय अनठिया सन बनल रहल अछि। शहीद सैनिकक परिवार कोना जीबैत अछि तकर चिन्ता ने सरकार करैत अछि आ ने समाज। ई एकटा दारुण स्थिति थिक। मुदा एहूसँ कष्टकर स्थिति तखन बनैत अछि जखन दुश्मन देश ओहि शहीद सैनिकक परिवारकेँ अपन निजी दुश्मन मानैत ओकरासँ बदला लेबाक हर सम्भव प्रयास करैत अछि। आइ अनेक भारतीय सैनिकक परिवार एहने कुचक्रक शिकार बनि काहि काटि रहल अछि। सैन्य परिवारक किछु लोक त' आत्महत्या तक करबा पर विवश भेलाह अछि। ई नाटक एही गंभीर विषय पर चिन्ता आ चिन्तन करबा लेल प्रेरित करैत अछि।

नाटकमे, आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कार सभक प्रति जुगुप्सा सेहो जगाओल गेल अछि। रोबोटिक कौआ एहने एकटा यांत्रिक युक्तिक रूपमे सोझाँ आयल अछि। स्त्री स्वतंत्रताक मुद्दा एहि नाट्कक अन्तर्लय थिक। एक-दोसरा पर संदेह करब, जासूसी करब आ अन्तमे दुश्मनकेँ देखार-चिन्हार करबाक क्रममे ई नाटक अपन मनोरंजनीय स्वभाव नहि छोड़ैत अछि। नाटक अन्ततः एकटा मनोरंजन थिक। एहि निकष पर ई नाटक सटीक उतरैत अछि। ग्रामीण रंगमंच हो अथवा शहरी रंगमंच, ई नाटक दुनू ठाम सहजताक संग मंचित कएल जा सकैत अछि। एकटा बात विशेष रूपसँ इहो कहब जे एहि नाटकमे पठनीय गुण सेहो अछि। एहि कारणसँ 'मुक्ति यात्रा'क महत्व आर बढ़ि जाइत अछि।

आनन्द जी अपन व्यक्तिगत समस्या सभक ओझराहटिसँ कने बाहर निकललाह अछि। हमर शुभकामना अछि जे सभ प्रकारक समस्या सभसँ ई पूर्ण रूपेण फारकति पाबि जाइथि आ नाट्य-लेखन करैत रहथि। नीक लोककेँ परेशानी अधिक अबैत छैक, से हिनको अयलनि अछि किन्तु नीके लोक नीक काज करैत छैक। नाटक नीक लोकक काज थिक। हिनक नाट्य-लेखन यात्रा निरन्तर निर्वाध चलैत रहनि से कामना करैत अन्तमे ई आग्रह करय चाहब जे ई पोथी कीनी, पढ़ी आ मंचित करी।

आनन्द जी मैथिली नाट्कक नवोन्मेष छथि।

—अजित आजाद

कहब किछु हमहुँ

मैथिलीक नव पीढ़ीक शीर्षस्थ प्रतिभावान नाटककार आनन्द कुमार झाक छठम कृति 'मुक्ति यात्रा' पोथी लए नाट्यसाहित्य अनुरागी पाठक, निर्देशक, रंगकर्मी आ विशिष्ट दर्शकवृन्दक समक्ष उपस्थित भए हमरा लोकनि अति आह्लादित अनुभव कए रहलहुँ अछि। प्रस्तुत नाटक 'मुक्ति यात्रा' वर्तमान परिस्थितिमे विश्व मानस पटलपर प्रमुख ओझराहटि, आतंकवादक चिन्तनमे, समाधानक आशयसँ लिखल गेल अछि। एहि नाटकमे रंगमंचीय सभ स्वरूपक विस्तार कलात्मक ढंगसँ नव कलेवरक संग भेल अछि। नाटकक कथ्य आधुनिकतासँ भरल-पुरल, रोमान्चकारी अछि। शील्प, संवाद प्रभावोत्पादक आ समीचीन अछि। शीर्षक शिक्षाप्रदक आ विषय-वस्तुसँ प्रतिक्षण सम्बन्ध स्थापित कएने रहैत अछि जे नाटककेँ प्रशंसनीय ओ प्रतिस्पर्धावान बनबैत अछि।

एहिसँ पहिने हिनक नाटक 'हठात् परिवर्तन' अखिल भारतीय स्तरपर साहित्य अकादेमीक प्रथम युवा पुरस्कार प्राप्त कए मैथिली रंगमंचकेँ प्रतिष्ठित कए चुकल अछि।

इहो नाटक 'मुक्ति यात्रा' अखिल भारतीय स्तरपर अपन खुट्टा गाड़ि उत्कृष्ट नाटकक पाँतिमे जगह बनाओत एवं एकटा अभूतपूर्व रचना-वस्तुक प्रादुर्भाव कए सकत, एही आशाक संग अपने सभक हाथमे पोथी थम्हाए रहल छी। आनन्द कुमार झाक एहि टटका नाटक 'मुक्ति यात्रा' पोथी पढ़िकेँ, मंचन कए अपने लोकनि अति सन्तुष्ट होएब, से हमरा विश्वास अछि।

–रिंकू देवी
झंझारपुर

लेखकीय अभिव्यक्ति

सर्वप्रथम अपन सुधि पाठक, रंगकर्मी, रंगमंचीय निर्देशक, समीक्षक, साहित्यानुरागी आ हजार-हजारक संख्यामे जुटिनिहार दर्शक लोकनिकेँ अन्तरात्मासँ प्रणाम जनबैत छी। हम बहुत-बहुत आभार प्रकट करैत छी मिथिलाक गाम-गामक मैथिली रंगमंच सभक जे विगत बारह बरखमे हमर एकहुँटा नाटकक पोथी नहि छपलाक उपरान्तो बोल-भरोस दैत रहि पछिले प्रकाशित नाटक 'टाकाक मोल', 'कलह', 'बदलैत समाज', 'धधाइत नवकी कनियाँक लहास' आ 'हठात् परिवर्त्तन' सभकेँ दोहरा-तेहरा कए-कएकेँ बेर-बेर मंचन करैत रहलाह।

प्रिय मित्र-बन्धु एहि कठिन समयमे अपन पिताक स्वर्गारोहण देखलहुँ, जिनक अथक प्रयाससँ पोथी प्रकाशन सम्भव भए पबैत छल। दुनू छोट भाइ त्रिलोक आ अमरेन्द्र मानसिक रोगी बनि गेलाह जाहिसँ अपन नोकरी छोड़ि गाममे रहए पड़ल। तकरा बादसँ घोर आर्थिक संकटक दौड़ शुरू भए गेल। फलस्वरूप, बिकाए लागल खेत-पथार, कलम-गाछी जे सिलसिला एखनहुँ पर्यन्त चलिये रहल अछि। सत्तरि बरखक माए, ओहो आब ओतेक नहि सकैत अछि तेँ सेवा-परिचर्या, दुनू भाइक बेस टहल-टिकोरा, ताहि सभक खातिर अधिक खन गामहि पर रहए पड़ैत अछि। दुनू बच्चा दीपाली आ अनुभव आनन्दकेँ लए पत्नी झंझारपुर ओगरि ओतहि एकटा छोट-छिन किताबक दोकान चलबैक लाथे एहि विश्वासक संग रहि रहलीह अछि जे एक दिन एहि मैथिली पुस्तक केन्द्रक दिन अवश्य फिरत। तेँ कतबो अथाह आर्थिक, दैहिक, पारिवारिक कष्टक समय किएक नहि आबि गेल होइक मुदा हमहुँ अपन रचनाधर्मिता पर विद्यमान रहि सकलहुँ अछि एखन पर्यन्त। तकरहि प्रतिफल थिक 'मुक्ति यात्रा' नाटकक पोथी स्वरूप अपने सभक हाथ तक पहुँचा सकलहुँ अछि।

एहिमे नवारम्भ प्रकाशनक योगदानकेँ बिसराएल नहि जाए सकैत अछि। विशेष कऽ भाइ श्री अजित आजाद जीक प्रति, जिनक अथक प्रयासक कारणहि हमर पोथी प्रकाशनक स्वप्न बारह वर्षक बाद एकबेर फेरसँ सम्भव भए सकल अछि। संगहि प्रकाशनक मादे बैंक ऑफ बड़ौदा, दरभंगा शाखाक सेहो आभारी छी, जिनक सहयोगसँ बिनु कोनो फिरीसानीक हमरा मायकेँ

व्यक्तिगत ऋण प्राप्त भए सकलैक आ हमर अनपढ़ माय एकोरती देरी नहि करैत पोथी प्रकाशनक अनुमति दैत एकर कुल खर्चा तत्काल दए देलक। हम आभार प्रकट करए चाहैत छी साहित्यकार मित्र-मंडलीक, मिथिलेश कुमार झाजी, विनय भूषणजी, अंजय चौधरी जी आ रंजीत जीक जे सहानुभूतिपूर्ण वचन बाजि-बाजिकेँ हमर मनोव्यथाकेँ कम करैत रहलाह अछि। युवा साहित्यकार आमोद कुमार झा, राजीव रंजन मिश्र, भाष्करजी, चन्दन कुमार झा, प्रवीण कुमार मिश्र, रूपेश त्योंथ, विद्याचन्द्र झा 'बमबम', सुशान्त 'अवलोकित' आदिक प्रति आभार प्रकट करैत छी जे मैथिली साहित्यक उत्थानक लेल नितान्त रचनाशील बनल छथि।

अन्तमे, अपन प्रस्तुत पोथीक कथा-वस्तु पर चर्चा नहि करैत प्रख्यात नाटककार विजय तेन्दुलकर जीक अभिव्यक्ति– 'रचनाकारकेँ अपन रचनाक विषयमे विशेष नहि कहबाक चाही, रचना स्वयं बजैत अछि आ सएह सत्य थिक।'

–आनन्द कुमार झा

पात्र परिचय

महिला पात्र

पात्र	भूमिका
आरती नारायण	महिला मण्डली संगठनक नेत्री
बुआजी	महिला मण्डली संगठ्नक संस्थापिका
मालती दीदी	महिला मण्डली संगठनक सदस्या
निरीक्षिका पद्मा पाकड़ि	निरीक्षिका, खुफिया विभाग
पीड़ित महिला	बलत्कृता आ तेजाब पीड़िता
कलीमक माए	महिला आतङ्कबादी

पुरुष पात्र

धननजी	डी.सी.पी. तरुण प्रकाश
चतुर चौपाल	ए.सी.पी., खुफिया विभाग
महामालिक	आतङ्कबादीक सरगना
अवधेश (छद्म नाम)	दुर्दान्त आतङ्कबादी

बाल पात्र

प्रभव	आरतीक गामबालीक बेटा

अन्य पात्र

गीत गओनिहारि	ग्रामीण गीत गओनिहारि महिलाक झुण्ड
सैन्यदल	चारिसँ पाँच सदस्यक पलटन
कौआ	एकटा कौआरूपी आधुनिक यन्त्र जे खुफियागिरी करैत अछि।

मुक्ति यात्रा

अंक पहिल : दृश्य पहिल

(बैंक प्रबन्धक अवधेशक शहरी निवास स्थानक बैसार गृह जे आधुनिक सुविधा-सामग्रीसँ सुसज्जित अछि। ओकर भीतरका भागक छटा सेहो मनोरम लगैत छैक। मुनहारि साँझक मद्धिम झिलमिल इजोतसँ नहाएल घरमे अवधेश एकल्ला सोफापर बैसल अछि। ओकर आन्तरिक भावनाक शारीरिक अभिव्यक्ति विश्वस्त करबैत अछि जे ओ बेसी घबराएल आ ककरो अबैक आशामे काल-यापन कए रहल अछि। ओ कखनहुँ खिड़की तऽ कखनहुँ मुख देहरि दिस जा-जाकेँ अएनाइ-गेनाइक स्वरकेँ अकानैत रहैत अछि, तऽ फेर आपस आबि सोफा पर व्याकुलतासँ बैसि जाइत अछि। ओ सतत् इतस्ततः छन घर, छन बाहर करैत अस्थिर रहैत अछि। आब ओ फोनसँ सम्पर्क साधैक प्रयास करैत अछि, जाहिमे सफल नहि भए पओला कारणे ओकरा छिलमिली छुटए लगैत छैक। एहि बातक आभास ओकर ठोर पर दाँत बैसाए क्रोध देखबैत फोन राखैत भाव-भंगिमासँ दृष्टिगत होइत अछि। ओ अनायास खिन्न होइत उठि बालकनीसँ निघुड़ि-निघुड़ि नीचाँ दिस मुड़िआरी दए-दएकेँ ताक-हेर करए लगैत अछि कि तत्क्षण क्रमशः स्वचालित सीढ़ीक नीचाँ दिससँ ऊपर आबि रूकबाक आ फेर ओकर पट फुजबाक ध्वनिक संग-संग ककरो घरक मुखदेहरि दिस अएबाक पदध्वनि सुनल जाइत छैक। ओ चट ध्वनिक संग कान पाथि ओहि आहटिकेँ सुनए लगैत अछि। ओकरा मोनमे सहज सन्तोष भावक उत्पत्ति होइत छैक। ओ पूर्ण विश्वासक संग मुखदेहरि लग पहुँचैत अछि। सम्प्रति देहरिक घण्टी बजैत छैक। ओ झटसन केबाड़ खोलैत अछि तऽ सोझाँमे आरतीकेँ ठार देखैत अछि। किछु क्षण निरखिकेँ देखलाक बाद ओकरामे आरतीक प्रति रुष्टताक भावना देखार होएत छैक। ओ सहज गतिएँ सोफा पर आपस आबि बैसि जाइत अछि। आरती अबिते देरी अपन हाव-भावसँ देरीक लेल खेद प्रकट करैत अछि। ओ हबड़-हबड़ अपन काँखमे लटकल पर्सकेँ उतारि चाहक टेबुलपर राखैत अछि। जाहि टेबुलपर अवधेशक बैग पूर्वहिसँ राखल

छैक। फेर ओ बिजलीक बटन पट लग जाए ओकर बटन टिपैत अछि, जाहिसँ समुच्चा घर प्रकाशित भए उठैत अछि। किछु कालधरि दुनू गोटेक चुप्पी लधबाक बाद आरती असह्य होइत हारि मानि अपन गुम्मी तोड़ैत अछि।)

आरती : अहाँ चाह पीबि लेलहुँ?
(अवधेश कोनो उतारा नहि दैत छैक।)
अवधेश, हम अहींसँ पुछि रहल छी।
(एखनहुँ कोनो प्रत्युत्तर नहि भेटल। एहि बीच अवधेशक बैगसँ मध्याह्न भोजनक टिफिन निकालि खोलैत अछि। खोलिते आरतीक बेथा तामसमे परिवर्त्तित भए उठैत छैक।) अहाँ फेर लंच आपस अनलहुँ। ई भोजनक डिब्बा ओहिना जसकेँ तस आपस लए अनबाक कोन नवीन आदतिक शुभारम्भ भेलहेँ? हमरा बुझल अछि, पुछला पर हमरा कोन तरहक प्रतिक्रिया देब। अहाँ बैंकक व्यवस्थापक छी। पूरा बैंकक दायित्व अहीं पर अछि। पलखति कहाँ निकालि पबैत छी खएबाक? आइ हम अहाँक संग विशेष बाताबाती नहि करए चाहैत छी। मुदा एकटा प्रश्न फेर दोहराएब जे अहाँक दफ्तरमे काज कएनिहार कर्मचारी लोकनि दोपहरिआक भोजन करैत छथि कि नहि? बेर-बेर बुझओलहुँपर अहाँ नहि बुझब। (अवधेश एखनहुँ अपन मुँह बन्ने रखने अछि। आरती खुजल टिफिनकेँ बन्न करैत, बजैत-बजैत भनसाघर दिस चलि जाइत अछि। अवधेश एहि बीच आरतीक पर्सक तलासी लैत अछि। ओ फटाफट किछु कागज-पत्तर निकालि पढ़ैत अछि कि तखनहि भनसाघरसँ बरतन-बासन ढनमनएबाक आवाज अबैत छैक। अवधेशक ध्यान भंग होइत छैक। ओ झट दए कागजात पर्समे रखैत, पूर्वक मुद्रामे आपस भए अबैत अछि। ताबत धरिमे आरती सेहो पानिसँ भरल गिलास आनि प्रस्तुत करैत अछि। अवधेश ओकर अनदेख करैत अछि। आरती जलक

गिलास रखैत अनुरक्त भए अवधेशक टाइ खोलऽ लगैत अछि। ओकर गरदनि आ काँखक आसपास आरतीक हाथक स्पर्श होइते गुदगुदीक भान होइत छैक। एतेक मेलाक उपरान्तो अवधेशक मुँहक शोभा आपस नहि अबैत अछि। आरतीकेँ बुझाएमे भांगठ नहि रहल जे आइ अवधेश प्रेममे आसक्त नहि भए पाओत तऽ ओहो अपन उपेक्षाक प्रतिक्रियामे स्वाभिमानक रक्षार्थ रुसैत-फुलैत नब बाना बन्हैत अछि।)

दस दिनसँ कौआ जकाँ काँओं-काँओं कए रहल छी, एकटा प्लम्बरकेँ बजाए आनू। बेसिनक पाइपमे भूर भए गेल छैक। सगरो भनसाघरमे लगैत अछि जेना बाढ़ि आबि गेल होइक। छप-छप पानिमे छपर-छपर कएकेँ पाक उतारनाइ, सेहो समयपर! केओ देखनिहार अछि हमर पएरक नतीजाकेँ? सभ आँगुरमे पानि एतेक लागल अछि जे पकाएल करू तेलो नहि सुनबाह करैत अछि। अहाँकेँ की, अहाँ तऽ वातानुकूलित घरमे बैसैत छी। जकरा भनसाघरक परिधिमे रहबाक छैक से रहए। हम कतबो टाँहि-टाँहि करब, टिटही जकाँ टिटिआएब, अहाँ पर कोनो प्रभाव नहि पड़त।

(आरतीक उच्च होइत खिन्न भावकेँ परेखैत अवधेश अपन मौन तोड़ैत अछि।)

अवधेश : घरमे केओ रहए तखन तऽ। की जानि, प्लम्बर आबिकेँ आपस चलि गेल होइक।

आरती : पहिल बेर अहाँ हमरा बाहरसँ घर अबैत की देखलहुँ, सभटा आसमानी आफद एखनहि खसल होएत।

अवधेश : हम प्लम्बरकेँ कहि चुकल छी। ओकरा कागतपर साफ-साफ अक्षरमे पता-ठेकान सेहो लिखिकेँ दए देने छी। आब अएबाक तऽ ओकरे छैक।

आरती : तऽ अहाँक कहबाक अभिप्राय जे आब प्लम्बरकेँ ताकक लेल हम जाएब? हमरो गमन करब तऽ अहाँकेँ नीक नहि लागत।

अवधेश : आरती आब एहि विषयकेँ तत्क्षण विराम देल जाए। आउ,

आब घरक कोनो नव खगताक बारेमे चर्चा करू।

आरती : घर...घर...घर। घरक बातक अलावा हमरा अपन जीवनमे दोसर तरहक बात करबाके की अछि। भिनसरसँ साँझ धरि घर-आँगन, भानस-भात, टहल-टिकोरा करैत-करैत असोथकित भऽ जाइत छी। हमर सभटा सख-मनोरथकेँ अहाँ डाहि देलहुँ।

अवधेश : आरती! घरमे काज करएबाली दाइ अबैत छल। भनसिआ अलगे राखल छल। ओकरा सभकेँ बेरा-बेरी अहीं निकालैत गेलहुँ। आइ ओ सभटा काज करय पड़ैत अछि तऽ खिसिआए उठैत छी।

आरती : ओ सभटा हमर उचित निर्णय छल। जँ ओकरा सभकेँ काजसँ नहि हटबितहुँ तऽ एकसर बैसल-बैसल अपनहि पागल भए जइतहुँ। कमसँ कम ई सभ काज करैत समय तऽ निकलि जाइत अछि। ओनामे तऽ अपनहि घर अनभुआर लगैत छल, जे कटाह कुकुर जकाँ काटए दौड़ैत छल। अहाँकेँ कोन प्रयोजन अछि एहि बात सभसँ। हरदम अपन उद्देश्यकेँ सफल बनएबाक अथक प्रयासमे भोरसँ साँझधरि निरन्तर बाझल रहैत छी। पानि पिबैक पलखति पर्यन्त नहि। जेना लगैत रहैत अछि संसारक सभटा दायित्व पुरुष जातिएकेँ भेटि गेल होइक। एकटा हम ठहरलहुँ महिला जकरा कोनो तरहक काजे नहि। भरि दिन घरक केबाड़-खिड़कीसँ विक्षिप्त सन गप्प करैत रहैत छी। आब तऽ अहाँ रवि दिनक छुट्टी सेहो सभा-सोसाइटी, अधिवेशनक बहन्ने निगृहित कएने जा रहल छी।

(आरती बजैत-बजैत खिड़कीक समीप चलि अबैत अछि। पाछाँ-पाछाँ अवधेश सेहो अबैत अछि। ओ खिड़की दिस दृष्टि दैत अछि, जतए रोटीक टुकड़ा पहिनेसँ राखल छैक। ओ ओहि रोटीक टुकड़ाकेँ हाथमे लैत आरतीकेँ देखबैत अछि।)

अवधेश : ई रोटीक टुकड़ा एतए किएक राखल छैक?

आरती : बुझाइत अछि कौआ पूरा नहि खाए सकल होएत। ओतहि

राखि दिऔक। काल्हि आओत तऽ खाए लेत।

अवधेश : कौआ काल्हि आओत तऽ रोटी खाए लेत! ई सभ कोन तरहक खिस्सा-पिहानीमे हमरा ओझराबए चाहैत छी?

आरती : एकटा कौआ अहाँसँ बेसी बुझैत अछि। रोटियेक प्रलोभनँ सही। मुदा नित्य अपन समयसँ अबैत अछि।

अवधेश : ओ...। तऽ आब अहाँक नव सम्बन्ध कौआसँ जुड़ल अछि?

आरती : किएक नहि जोड़ब हम कौआसँ सम्बन्ध। हमरा सभ सन निकम्मा महिलाकेँ कौआ-मैना आ गिरगिटे सभक संग तऽ जिनगी बितेबाक अछि। नारीक संसारे कतेक दूरक! भोरसँ साँझ धरि पति परमेश्वरक आगमनक प्रतीक्षामे अपन अनमोल समय गमएबाक बादहुँ ओ पति परमेश्वर प्रसन्नँ रहता तकर कोन विश्वास!

(अवधेश बातक गम्भीरताकेँ अँकैत, हल्लुक बनबैक प्रयास करैत अछि।)

अवधेश : आब हमरा बुझएमे कोनो भांगठ नहि रहि गेल जे ओ कौआ अहाँकेँ हमरोसँ बेसी प्रियगर मित्र अछि। तखनहि तऽ ओकरा अहाँ नित्य रोटी दैत छी।

आरती : किएक नहि रोटी देबै हम! ओकरामे हमरा प्रति कोनो खोट नहि छैक, इर्ष्या-द्वेष लेस मात्र नहि छैक। शुरू-शुरूमे हम तऽ ओकर ध्याने नहि राखि पबैत छलहुँ मुदा ओकर ध्यान हमरा प्रति कहिओ भंग नहि भेलैक। ओकरा हमरा ऊपर अटूट विश्वास छैक। रोटी दएमे कनिओ देरी भेल तऽ कोठलीक भीतर आबि जाएत। जेना ओकरा हमरासँ भेंट-घाँट करबाक विशेष प्रयोजन रहैक। आ़ब तऽ ओ हमर सभ तरहक व्यथा-कथासँ भिज्ञ रहैत अछि। हमरा-ओकरा बीच आब मात्र रोटीयेक सम्बन्ध नहि रहल। ओ हमरा सभ दिन उकसाबैत कहैत रहैत अछि, आरती अपन धाखक बन्धनसँ मुक्त भए तोंहों उड़ ने हमरे संग, एहि निर्मल नील आकाशमे हमरे जकाँ।

(अपन स्वप्नक अवलोकनमे धाराबद्ध भेल...।)

सत्य कतेक नीक आ सार्थक अछि ओकर जीवन। कोनो

आरि-पाटि नहि, कोनो तरहक आँकुस-बन्धन नहि, रोक-टोक नहि। कतेक स्ववश अछि ओकरा लोकनिक जीवन। हम ओकरा बेर-बेर बुझबैत रहैत छी, हमर जीवन यापन करबाक सीमित सीमा निर्णित अछि। तेँ ओकरा हम नहि नाँघि सकैत छी। **(बैसल अवधेशक दुनू कान्हपर अपन दुनू हाथ रखैत)** हाँ अवधेश, जे किछु होइक मुदा हमरा बहुत पसीन अछि ओकरा रोटी देनाइ आ ओकर हमरासँ रोटी लेनाइ...।

(एहि बीच अवधेश उठि आरतीकेँ पकड़ि ओकर स्वप्नक प्रवाहकेँ रोकबाक प्रयास करैत अछि।)

अवधेश : आरती! परी लोकक कथाकेँ सामान्य जीवनमे नहि समटल जा सकैत छैक। एकटा कौआ आ मनुखमे कनेको फरक अछि कि नहि?

आरती : फरक तऽ बहुत बड़का अछि। ओ ठहरल कारी खट-खट, अहाँ कतेक गोर-दपदप, गोर-रतरत। हम अपन गोरका चुट्टीकेँ छोड़ि ओहि कारी कलुठबाक बातमे ओझराएल छलहुँ। जकर कोनो समाज नहि, सभ्यता नहि, संस्कृति नहि, ककरोसँ कोनो सर-सरोकार नहि। कतए हम सभ ठहरलहुँ सभ्य समाजक आधुनिक निर्माता।

अवधेश : शान्त...आरती शान्त...अहाँक मोन-मति अपन अधीनमे अछि ने?

आरती : बिल्कुल। मुदा एहन प्रश्नक तात्पर्य?

अवधेश : हम एखन हास-परिहाससँ बाहर निकलि किछु बात करए चाहैत छी।

आरती : हम अनुभूति कए सकैत छी, जे अहाँ अतिशय गम्भीर छी। अभिप्राय प्रकट कए सकैत छी?

अवधेश : आरती। आइ-काल्हि जेना लागि रहल अछि अपना दुनू गोटे दू तरहक बात सोचए लागल छी। संग-संग रहितहुँ कोसहुँ दूर होइत चलि जाय रहल छी।

आरती : कमसँ कम हम तऽ एहन सन अनुभव नहि कए रहल छी।

अवधेश : तऽ फेर हम ई प्रश्न किएक नहि करी कि अहाँ मुनहारि साँझ बितलाक उपरान्तो एखन धरि कतए छलहुँ?

(अवधेशक ई असंगत प्रश्न आरतीकेँ भीतर तक हिला देलक। कनेकालक लेल तऽ ओकरा बकोर लागि गेलै। ओ अवधेश दिस टुकुर-टुकुर ताकए लगैत अछि।)

आरती : खरापो बातकेँ नीक तरहें तैआर कए उपस्थापित कए सकैत छलहुँ। प्रश्न ओतेक अधलाह नहि छल, जतेक अतर्कित भाषा आ भाव अहाँक छल।

अवधेश : भए सकैत अछि अहाँ एहि बातकेँ अतर्कित मानैत होइ?

आरती : हमरा लेल अतर्किते नहि, अमर्यादित सेहो अछि, संग-संग पति-पत्नीक बीच एहन अनसोहाँत वातावरणक सर्जना करब अनिष्ट थिक। आकाशमे अनठेकानी ढेपा फेकब एहि आशासँ जे कोनो मनपसन्द मुद्दा हाथ लागि पड़त, ई सभटा अशुभ लक्षण थिक।

अवधेश : (नरम पड़ैत) श्रीमती आरती नारायण, अहाँ बातकेँ घुमएबाक सुर-सारमे छी। सोझ-साझ हमर प्रश्न छल एतेक साँझ धरि अहाँ कतए छलहुँ?

आरती : कतेक सुभग मोने एखन बजलहुँ कि नहि! हम कतए जाएब! इएह सामनेबाली मालती दीदीक आँगन गेल रही।

अवधेश : (अकचकाइत) मालती दीदीक आँगन?

आरती : हँ... कहैत तऽ छी, मालती दीदीक आँगन।

अवधेश : किएक? आइ हुनका आँगनमे सत्यनारायण भगवानक पूजा छलै की?

आरती : (आश्चर्य करैत) सत्यनारायण भगवानक पूजा?

अवधेश : हँ...हँ...सत्यनारायण भगवानक पूजा...!

आरती : कहबाक अभिप्राय केओ ककरो आँगन सत्यनारायण भगवानक पूजा होएत तखनहि जाएत? अनदिना सामान्य दिनमे केओ कतहु नहि जाए सकैत अछि?

अवधेश : हमर अभिप्राय से नहि छल। ओ तऽ हम प्रदोषक समय देखि अँटकर लगाकेँ कहलहुँ अछि। ओना जएबाक कोनो ने कोनो खगता तऽ जरूर रहल होएत?

आरती : मालती दीदीक मुम्बइबाली बुआजी आबए बाली छलखिन।

अवधेश : (विस्मय भावे) मुम्बइबाली बुआजी?
आरती : हँ...हँ...मुम्बइबाली बुआजी...सएह तऽ हमहुँ बजलहुँ...।
अवधेश : मालती दीदीकेँ बुआजी महोदया...।
आरती : हँ, मालती दीदीक बुआजी।
अवधेश : माने महिला मण्डली...।
आरती : हँ बाबा हँ, माने महिला मण्डली...।
अवधेश : आब हमरा बात बुझएमे कोनो दुविधा नहि रहल...।
आरती : अहाँ ठहरलहुँ लाल बुझक्कड़।
बाजू-बाजू ने कि सभ बात भेल होएत?
अवधेश : बात इएह भेल होएत अहाँ सर्वप्रथम बालकनीसँ ताक-झाँक कएने होएब...
आरती : बालकनीसँ ताक-झाँक?
अवधेश : हँ, बालकनीसँ ताक-झाँक।
आरती : बालकनीसँ ताक-झाँकक बाद आगुओ किछु भेल होएत कि नहि?
अवधेश : फेर कि होएत! मालती दीदी झटसँ अपन छतपर आबि गेल होएतीह।
आरती : वास्तवमे सर्वोत्तम... पार ऐक्सलेन्स... बहुत नीक...आर की-की भेल होएत?
अवधेश : आब बाँकिए की रहि गेल! नोतक संग बिजहो सेहो पड़ि गेल। ओ उच्च स्वरमे चिकरि-चिकरि अहाँकेँ कहलनि, मुम्बइबाली दीदी आबहि बाली छथि, मिल जाइयो।
आरती : आ हम अहाँक बिनु अनुमतिक अपन परिखाकेँ पार करैत परोमिन नहि, परोपकारी पड़ोसीक घर तक यात्रा आरम्भ कए मालती दीदीक ओहिठाम उपस्थित भए गेलहुँ।
अवधेश : पड़ोसीक घरमे उपस्थित तऽ भए गेलहुँ मुदा बात आब मालती दीदीक घरे तक नहि रहि सकल।
आरती : अजी रहितए कोना...! हम तऽ अपन छोटछिन शहरकेँ छोड़ि स्मार्ट सीटी दिस निकलि चललहुँ। कहबाक तात्पर्य मुम्बइसँ बुआजीक जे अबैआ छलनि।

अवधेश : सोलह आना सत्य।

आरती : **(बातकेँ ऐंठन दैत)** ठहरली हुनकर बुआजी, जिनकर आएबमे अड़सट्टा लागि गेल। आब अओती, तब अओती तकर आसाबाटी तकैत-तकैत आँखि पथरा गेल। अन्ततोगत्वा हमरा रहैत ओ नहिए अएलीह। मोन नंगो-चंगो भए गेल। हारि-थाकि बुआजीक बिनु दर्शनक बिदा भए गेलहुँ।

अवधेश : मलिकानि। मानलहुँ हुनक अएबाक प्रतिक्षा अनवरत चलैत रहल जे नहि रूकल। **(घड़ी देखबैत)** एम्हर कालसूचक यन्त्र सेहो तऽ रूकैक नाम नहि लेलक। छह बाजल, बण्डाराम घरमे हाजिर। अहाँकेँ समय सीमाक भीतर बीच सभामे भाषण छोड़ि, राशन देबाक खातिर घर आपस आबि जएबाक चाही छल।

आरती : सत्ते। अहाँ मुँह-हाथ धोउ। ताबत धरिमे हम भानसघर जाए गरमा-गरम चाह बना प्रस्तुत करैत छी।

(आरतीक बाट छेकैत अवधेश ओकरा लगीच आनैक प्रयास करैत अछि।)

अवधेश : आइ भानसघर अहाँ एसकर नहि दुनू गोटेसँ संगे जाएब। मुदा ओहिसँ पहिने अपन प्रिय मित्रसँ भेंट-घाँट कराबहि पड़त।

आरती : **(दूर हटैत)** अहाँकेँ हमरा ऊपर भरोस नहि रहल। एतेक उत्कट बात बाजि कोना सकलहुँ अहाँ!

अवधेश : आरती! एतेक अनुरागहीन होएबाक आवश्यकता नहि। हम अहाँक कोनो पुरुष मित्रक नहि, चिड़ै-चुनमुनी मित्र माने कौआक बात कए रहल छी।

आरती : अच्छे, तखन तऽ अपनेकेँ पूरा-पूरी एक दिनुक छुट्टी करए पड़त।

(अवधेश एक ठेहुनक बले आरतीक सम्मुख बैसि, अपन दुनू हाथ ओकर हाथमे सौंपैत समर्पण भावसँ प्रस्तुत होइत अछि।)

अवधेश : अहाँ जँ कही तऽ सभ दिनक छुट्टी लए घर बैसि जाएब...!

आरती : **(स्वीकारोक्तिक भावमे)** अति विलक्षण अछि अहाँक ई समर्पण। सत्तहि भए चुकल छी अहाँ हमर कल्पतरू।

(आरती-अवधेशक बीच एकटा एहन अविरल प्रेमक प्राकृतिक छटाक अवतरण होइत अछि जाहिमे भाव-विभाव परिवेशक प्रादुर्भाव होइत अछि। धीरे-धीरे मंच अन्हारमे अलोपित भए जाइत अछि।)

दृश्य : दोसर

(स्थान पूर्ववत आरतीक घर। समय झल-फल साँझ। आरती आ मालती दीदी कोनो गहन चिन्तनमे लागल छथि। ताहीखन बुआजी प्रवेश करैत छथि। दुनू गोटए आगाँ बढ़ि हुनका अरिआतिकेँ आगत-स्वागतक संग भीतर अनली। एक क्षणक लेल आरतीक सुरेबगर देहदशा आ आकर्षक मुखशोभा देखि बुआजीकेँ चकचोन्ही लागि गेलनि। ओ आरतीकेँ संयोगवश पाबि सन्तुष्ट होएबाक भावक प्रदर्शन कए मालतीक पीठ पर हाथ राखि प्रसन्नता व्यक्त करैत छथि।)

बुआजी : आरती! अहाँकेँ सभ बात मालती बुझाए देने होएतीह। हम चाहै छी महिला मण्डली, महिलाक एकटा एहन समूह बनए जे ओकर सर्वांगीण विकासक संग, सर्वाधिकार सम्पन्न बनबैक चिन्तन करए। ओकरा निर्भय भए जीवनक निर्वहन करैक उद्देश्यसँ आधुनिकतम जीवन-यापनक साधन सभसँ परिचिति करबए। ओ सभ निकृष्टतासँ नीक अवस्थामे आबि पूर्ण स्वतन्त्रता, स्वस्थताक बोध करए। इएह सभ परिकल्पनाक सनेस लऽ हमरा लोकनि यात्रा प्रारम्भ कएलहुँ अछि। जाहिमे अहाँ सभ सन नव विचारक धारणा बाली प्रतिभावान ललनाकेँ जोड़ि महिला मण्डलीक छवि प्रतिबिम्बित होएत।

मालती दीदी : अहाँ जे एहि संगठनसँ जुड़ब तऽ हमरा सभ सन बएसबालीक लेल संजीवनी औषधि भेटब सन होएत।

बुआजी : हम बुझि सकैत छी अहाँक तितिर-बितिर होइत मोनक दशाकेँ। मुदा आरती सत्यक बाट पर चलनिहारक प्रतिद्वन्द्वी घरेसँ शुरू होइत अछि।

मालती दीदी : तेँ अहाँ शंका-संशयक भयकेँ परिमार्जित कए एहि जागरूक यात्रामे अपन योगदान दिअ।

बुआजी : देखू बेटी, पतिक प्रेम-जालमे फँसि समाज कल्याणक मानसिक

सर्जना करब कठिन होइत छैक। हम मानैत छी...स्त्रीकेँ प्राणाति पातेनसँ नव-नव धारणाक कल्पना-सृष्टिक निर्माण होयब सम्भव अछि। एहि पुरुष प्रधान समाजमे नारीक स्थान फूल जकाँ अछि। जकरा मौलाइते गाछ भूमिपर खसा दैत अछि।

मालती दीदी : एखने थोरबहि काल पहिनहि अस्पतालमे किलोल काटैत ओहि महिलाकेँ हमरा लोकनि देखलहुँ। ओकरा लेल गाम-समाजक बात छोड़ू, बिपत्तिक समयमे ओकर परिवार आइ ओकरा संग नहि ठार छैक। ओकर जीवन आकाश-कुसुम सन भए गेल छैक।

बुआजी : किएक? किएक तऽ आब ओ पवित्र नहि रहल। आब ओकर शरीर ऐंठि भए गेल। ई समाजक ढोंगी लोक सभ नारीक शरीरकेँ पवित्र-अपवित्र, ऐंठि-निरैंठि सन अपमानक शब्दसँ अलंकृत कए ओकरा शोभाक वस्तु बनौने अछि।

मालती दीदी : बस करू बुआजी, हमर कान ई सभ शब्द सुनि बहीर भेल चलि जा रहल अछि। नहि, एकरा हम कदापि नहि स्वीकारब। एहन अवाच्य कथा सुनि हमरा पश्चाताप होइत अछि। हमर शरीर नाम मात्र काव्यक अलंकार नहि बनैत रहत।

बुआजी : एतबे नहि, समाचार-पत्रमे हम रोज बनैत छी शीर्षक, जाहिमे मोट-मोट अक्षरमे सभसँ ऊपर छापल रहैत अछि... नाबालिग छात्रा संग सामुहिक बलात्कार। एकसर महिलाकेँ समूहमे आनि शील-हरण। ततबे नहि, शील-हरणक बाद ओकरा ऊपर तेजाब उझलल गेल। किएक? हम पुछैत छी ऐना किएक भए रहल अछि? ओहि अविचारी, आततायी बहेड़क समूह अछि, अहाँ सभक किएक नहि? एकसर-एकसर जीवनकेँ जोड़ि-जोड़िकऽ मिलि एकटा हेड़ नहि बना सकैत छी? **(आरतीक दुनू बाँहि पकड़ि ओकरा जागृत करैक ध्येयसँ जोर-जोरसँ बेर-बेर झकझोरैत छथि।)** ई दल अहाँकेँ बनबैक अछि। हँ आरती नारायण, एहन समूहक निर्माण करू जे सन्देश दैक जे इज्जति-प्रतिष्ठा जँ जेबे करत तऽ एकमात्र

स्त्रीगणे सभक नहि।

(बुआजी अपन आँखि आरतीक आँखिक सम्मुख आनैत छथि। हुनक आँखिक दिव्य प्रकाश पाबि आरतीक श्वास-प्रश्वासक गति तीव्र होइत अछि। ओकर छाती उत्तेजित होइत उधकए लागल छैक।)

मालती दीदी : हमरा सभ कतेक चुप रहब। नारी निःशब्दताक एहिसँ पैघ दृष्टान्त की भेटि सकैत अछि। हमरा लोकनिक पूर्वज नहि जानि किएक शोभादायक उपमा सभ दए-दए माल-जाल जकाँ नाथि अति दुर्बल बना देलनि।

बुआजी : हँ आरती, फुरसति भेटलापर अएनामे अपन मुँह देखब। कोन अवस्थामे अछि अहाँक नाक-कान आ गरा। माल-मवेशीसँ एतबहि फराक जे ओकरा सभक नाक-गारामे डोरीक प्रयोग अछि तँ हमरा अहाँक लेल सुन्नर-सुन्नर गहना। की अहाँ पूर्वसँ चलि आबि रहल एहि अधलाह परिपाटीकेँ वर्तमानो समयमे स्वीकारब? जखन कि हमर तरुणी सभ फाइटर पायलट बनि आसमानमे तेजस आ सुखोइ सन सुपरसोनिक युद्धक विमान उड़ाबय लेल तैआर भए रहली अछि। तेँ एकटा आधुनिक तेजस्वी नारी सौन्दर्यक सामान बनि रातुक क्षणिक दैहिक सुखक लेल अपन मूल्यवान दिनकेँ नहि गमाओत। आरती, महिला मण्डलीकेँ अहाँ सभ सन दीप्तिक आवश्यकता अछि जे भोतिआएल, दिशाहीन नारी समाजकेँ नव जागरणसँ जगाए मुख्य धारासँ जोड़ैक काज करत।

मालती दीदी : आगू बढ़ू आरती। जागृत करू अपन भीतरक चेतन तत्वकेँ। शुरू करू आइसँ लिखब अपन जीवन-चरित अपनहिसँ। देखू ने बुआजीकेँ, ओ कतेक आतुर छथि अहाँक हाथ धरैक लेल।

(आरती ततमतमे पड़ि जाइत अछि। ओकर हृदय धड़कबाक ध्वनिक गति तेज भए जाइत अछि। ओ बुआजी आ मालती दीदीक प्रेरणा ओ परिवेक्षणमे तथास्तु कहए चाहैत अछि। मालतीकेँ एहि बातक अनुभव

हुअए लगलनि तऽ ओ आरतीक दुनू हाथ बुआजीक हाथमे थम्हबैत छथि। जकरा बुआजी अपन दुनू हाथसँ मुट्ठीमे बलपूर्वक गसि लैत छथि। तखनहि देबाल घड़ीक घण्टा तेज ध्वनिसँ बजैत अछि। सभक दृष्टि टाँगल घड़ीपर पड़ैत अछि।)

आरती : **(बुआजीक मुट्ठीसँ हाथ छोड़बैत आँगा बढ़ि स्वतः बाजि उठैत अछि।)** एहि घण्टाक स्वरकेँ हम खूब नीक जकाँ बुझि पाबि रहलहुँ अछि। आब संध्याक छह बाजि गेल। आब जे घड़ी, जे पहर ने अवधेश आओताह।

(ओ थोरे असमंजसमे पड़ैत अछि। एकाएक ओकर मुँह मलिन होमए लागल अछि। ओकर चेतना भग्न होइत अछि। ओ असहज भावे बुआजी आ मालती दीदीक मुँह ताकय लगैत अछि। बुआजी ओकर आनन देखि ओकर विवशताकेँ परेखैत छथि।)

बुआजी : आरती... एकाएक अहाँक मुँहक शोभा बिलाए किएक लागल हैँ ?

(एहि तरहक प्रश्न सुनि ओ अपनाकेँ सुव्यवस्थित करैत कृत्रिम सहज स्थितिक निर्माण करैत अछि।)

आरती : **(ठोस संकल्प लैत)** बुआजी, हम वचन दैत छी। आइसँ हमर जीवन महिला मण्डलीक लेल अहाँक सहचर रहत।

(बुआजी आ मालती दीदी एक-दोसरक दिस ताकि अति प्रसन्न होइत छथि।)

बुआजी : आरती, संगठनक सदस्य बनैक लेल हम-अहाँक संग-संग मालतीक सेहो आभार प्रकट करैत छी। हम चाहैत छी अहाँ सभ ओहि महिलाक केसकेँ अपन अधीन सम्हारि सत्यताक तह तक जाउ। हमरा तऽ ई केस उच्च श्रेणीक लागि रहल अछि।

आरती : बुआजी अहाँ निश्चिन्त भए जाउ। कोनो कीमतपर हम ओकरा न्यायक कोठली तक पहुँचाएब। संगहि ओहि नारीक दुर्दशा केनिहार दुर्जन सभकेँ सेहो समाजक सोझाँ चिन्हार करब।

बुआजी : तऽ एहि आशयक संग आजुक बैसारक समापन होइक घोषणा करैत छी। हमरा सभकेँ अगिला बैसारमे भेंट-घाँट होएबाक तक लेल जएबाक आदेश देल जाए?

(बुआजी आ मालती दीदी जएबाक लेल तैआर होइत छथि। आरती अतिथिकेँ आदरक संग बिदा करैत बाहर तक जाइत अछि। बाहरसँ स्वचालित सीढ़ीक पट फुजबाक, बन्द होइक आ फेर नीचा दिसकेँ जाइक आवाज ओहिना सुस्पष्ट अबैत अछि। अरिआति कऽ आपस अबिते देरी आरती झट दए केबाड़ बन्द करैत, केबाड़क पल्लामे ओंगठैत सन्तोष भावक दीर्घ साँस छोड़ैत अछि।)

आरती : हम अपनाकेँ धन्य-धन्य बुझैत छी जे कल-कुशल बुआजी आ मालती दीदी अवधेशक अएबासँ पूर्वहि चलि जाए गेलीह। **(इएह सभ ततमती ओकर अन्तःकरणमे प्रत्यावर्तित भइए रहल छल कि नीचाँ दिससँ सीढ़ीपर ऊपर दिस अबैत पदध्वनि सुनल जाइत अछि। आरतीक ध्यान भग्न होइत छैक। ओ एक बेर फेरो सशंक होइत अछि)** कहूँ ई अएबाक पदध्वनि अवधेशक तऽ नहि थिक। जँ से सत्य भेल तऽ नीचाँमे स्वचालित सीढ़ीसँ निकलैत काल बुआजी आ मालती दीदीकेँ अवधेशसँ भेंट-घाँटने भए गेल होएनि?

(एहि अशुभक आशंकासँ ओकर हृदय काँपए लगैत अछि। ताबतमे देहरिक घण्टी बाजि उठैत छैक। ओ डेराइत-घबराइत अनिर्णयावस्थामे केबाड़ खोलैत अछि। अवधेश भीतर अबैत अछि। आरती एकबेर फेरसँ झट दए केबाड़ बन्द करैत अछि।)

अवधेश : आरती! अहाँ केबाड़ खोलबाक लेल पहिनहिसँ ठाढ़ छलहुँ? **(आरती सत्य नुकएबाक ध्येयसँ संग-संग जवाब नहि दए पबैत अछि। ओ शब्दकेँ दोहराबैत-तेहराबैत आ बीच-बीचमे रूकैत उच्चारण करैत अछि।)**

आरती : **(तोतराइत)** नहि...नहि तऽ...ओ...छः...छः...कखन...कखन कहाँ...बाजल...एखन धरि...अहाँ...नहि ने...आएल...आएल

छलहुँ। अहाँकेँ ...केओ...केओ...नीचाँ...नीचाँमे...ककरोसँ...भेंट...घाँट...।

अवधेश : **(आरतीकेँ बैसबैत)** आरती अहाँ बहुत बेसी घबराएल लगैत छी। हमरा तऽ लगैत अछि, काल्हुक कहा-सुनीक असरि एखनहुँ धरि नहि उतरल अछि। नीचाँमे केओ अछिए नहि तऽ भेंट-घाँट ककरासँ होएत!

आरती : देखू...आइ...काल्हि...शहरक...स्थिति...ठीक...ठाक...नहि चलि... रहल अछि तेँ सबेर-सकाल घर आपस आएल...करू।

(ओकर मोन धीरे-धीरे स्थिर भेल जाइत अछि।)

अच्छा छोडू...जे भेल...से भेल। हम...अहाँक लेल...शीतल जल आनि प्रस्तुत करैत छी।

(आरती भीतर भानसघर दिस जाइत अछि। अवधेश अवसर पाबि आरतीक प्रसंगे स्वतः ओकर अनुकृति प्रदर्शित करैत अछि। ततबा कालमे आरती जलक गिलास नेने अबैत अछि। अवधेश स्टाइलसँ गिलास उठबैत, पानि पीबिकेँ खाली गिलास थम्हाबैत अछि।)

अवधेश : अहाँक चिन्ता करब समय अनुकूले जाएज अछि। अजुकेँ घटना देखू ने, पूरा शहर यत्र-तत्र स्त्रीगण सभसँ आटल-पाटल छल। ओ सभ चहुँदिसक बाट बन्द कए देने छलीह।

(आरतीकेँ सभ बात बूझल रहलहुपर ओ आश्चर्यित होइत अछि।)

आरती : **(अरथाबैत)** सड़क बन्द?

अवधेश : आइ-काल्हि कोनो घटना घटित होएबापर सड़क बन्द करब तऽ प्राथमिकता भए गेल अछि। बाट-घाट अवरुद्ध भेलासँ सर्वसाधारण लोकक कतेक नोकसान होइत अछि! प्रशासन द्वारा बेर-बेर बुझओलहुँपर नहि केओ बुझैत अछि।

आरती : मानलहुँ बाट-घाट छेकब नियमक विरुद्ध भेल, मुदा ओकरो सभक प्रतिवाद व्यक्त करबाक इच्छाक कोनो ने कोनो ओजह होएत!

अवधेश : ई प्रतिवाद करैक सीमाक उल्लंघन थिक।

आरती : प्रतिवादक प्रदुर्भाव तऽ उचित अछि। एकटा निरीह महिलाकेँ निशीथ रातिमे घरसँ उठा निर्जन जगहमे लए जा ओकरा संग सामुहिक बलात्कार कएल गेल। ओतबे नहि, ओकर सर्वांग शरीरपर तेजाब उझलि देलक। एखन अस्पतालमे ओ महिला असह्य व्यथा सहन करैत तिल-तिलकेँ जीवनक लेल मृत्युसँ लड़ि रहल अछि। ओहिठामक दृश्य असहनीय, हृदयविदारक अछि।

अवधेश : **(आवेशमे)** हमरा ओहि महिलाक उत्पिड़ित होएबाक आ ओकर निरपराधी होएबाक सूचना अहाँ जुनि दिअ। हम ओकरा बरखहुसँ जनैत छी। ओकरा जे किछु सजाए भेटल से कमतरि अछि। ओकरा तऽ एखन आरो घिघरी कटबाक छैक।

आरती : अहाँ ओहि महिलाकेँ जनैत छी? ओकरा संग भेल षड्यन्त्रक सम्बन्धमे अहाँकेँ जानकारी अछि?

(आरती द्वारा पूछल गेल प्रश्नसँ अवधेश अपनाकेँ फँसैत देखि अवाक् भए जाइत अछि। जखनकि ओकरा पूर्वहिसँ बुझल छैक जे एहन कथा ओकरा अझकोमे नहि बजबाक छलै।)

अवधेश : **(अपन ओझराहटिसँ निकलबाक चेष्टा करैत)** हम ओहि महिलाकेँ दूर-दूर तक नहि जनैत छी। ओ तऽ हम घर आपस आबह काल अस्पताल लग भीड़-भड़क्का देखलहुँ तऽ जिज्ञासार्थ भीतर जाए ओहि व्यथित महिलाक खोज-पुछारी कएलहुँ।

आरती : **(आतुरतासँ)** अहाँ एखन अस्पतालसँ आबि रहल छी? ओहि महिलाकेँ होश आएल?

अवधेश : अहाँकेँ ओहि कारिणीसँ कोन लागि अछि? एतेक जानकारी ओकरा बारेमे कतएसँ बटोरलहुँ अछि?

आरती : **(अकबकाइत)** ओ तऽ हम अखबारमे...।

अवधेश : **(आश्चर्यपूर्वक, आरतीक मुँहक बोल छिनैत)** की कहलहुं... अखबारमे...? रातुक बारह बजेक घटना भोरुका अखबारमे?

आरती : **(पछिला बातकेँ झाँपन दैत)** भिनसरसँ सभटा समाचार चैनल सभ अनवरत अनघोल कएने अछि। महिला सभक

आन्दोलन जोर कएने अछि।

अवधेश : अरे ई जनीजाति सभ की आन्दोलनमे ठठती! पुलिस आएल, डण्टा भाँजलक, सभ तितिर-बितिर होइत पड़ाइत भेलीह छू मन्तर...!

आरती : **(सत्यताक दृढ़ निश्चयक संग)** नीरस बोल! पुलिस पूरा असोआस देलकहेँ, जे महिलाक मोकदमा तीव्र गतिए चलाय, कुकर्मी सभकेँ जहलखाना पहुँचाएल जाएत।

अवधेश : आरती, एक-एक कए सभ काण्ड भेलाक बाद पीड़ितक असोधारा रोकक लेल पुलिस प्रशासन दिससँ एहिना आवश्यक वक्तव्य देल जाइत अछि। अहाँकेँ की बुझना जाइत अछि, ओहि महिलाकेँ उचित न्याय भेटि पाओत?

आरती : **(ठोस दायित्वक संग)** अवधेश, न्याय भेटबासँ आब ओकरा केओ वंचित नहि कए सकैत अछि।

अवधेश : तऽ अहाँ ओकर ओकालतनामा भरब?

आरती : हम जँ ओकर ओकालतनामा नहिओ भरब तऽ केओ दोसरो तऽ भरि सकैत अछि।

अवधेश : आरती... अहाँकेँ बुझल अछि कि नहि, प्रथमदृष्टया जकरापर सम्भावित शक सुबहा कएल जाए रहल अछि, ओकरा लोकनिक तार अण्डरवर्ल्डसँ जुड़ल छैक।

आरती : तऽ एहि बातकेँ अहाँ नीक मानैत छी? आखिर ओहि महिलाक की कसूर छल?

अवेधेश : चहुँदिस चर्चामे ई बात अछि जे हमलावर, हमला करैसँ पहिने विवाहक प्रस्ताव देने छल। जकरा ओकर परिवार स्वीकार कएने छल। किएक तऽ किछुए दिन पहिने विवाहक प्रस्ताव देनिहारक संग ओ बिनु कोनो सूचनाक नापता भए गेल छल। लोक-लाज बचेबाक खातिर ओकर परिवार ई निर्णय लेने छल। मुदा ओ अगरजित बनैत ओकरा थुकारि, अपन नबकबारि प्रेमीक संग खुलेआम विवाह कए लेलक।

आरती : ई सभटा ओकरा लेल तैयार कएल गेल चक्रचालिक हिस्सा थिक। दोसर डेराए-धमकाएकेँ ककरहुसँ केओ विवाह करत?

जँ प्रस्ताव स्वीकार नहि केलक तऽ तकरा संग सामुहिक बलजोरी कराओल जाएत? ओकर शक्ल-सूरत, अंग-प्रत्यंगकेँ विकट बनबैक उद्देश्यसँ ओकरा ऊपर तेजाबसँ आक्रमण कराओत? आब एहि विवेकहीन दुर्जन सभमे पशुताक लक्षण आबि गेल अछि जे ओकरा सभमे अपकर्म करैक दुर्दान्त साहस बढ़ि गेल अछि। जकरासँ एसकर-एसकर लड़िकऽ पार उतरब कठिन अछि। आब ओ समय आबि गेल अछि। एहि निर्लज्ज उत्पीड़क सभकेँ परास्त करक लेल महिलाकेँ एकटा अपन हेंज बनबहि पड़तैक।

अवधेश : तऽ आब अहाँ ओहि माहिलाक हितक खातिर नेतागिरी करब?

आरती : अहाँक कहब इएह ने जे स्त्रीगण एहन उदण्डताक सामना करैत अप्रभावित होइक अभिनय करैत रहए। ओ सभ दिन निरमाल बनि निर्वासन सहैत रहए। नहि, आब नहि। आब जमाना बदलि गेल अछि। स्त्री समाजकेँ पोखरिक पानि जकाँ बान्हि-छेकिकऽ नहि राखल जाय सकैत अछि।

अवधेश : देखू, जमाना कतबो किएक नहि बदलि जायत, स्त्रीगण-स्त्रीगणे रहत। अहाँ लोकनिकेँ सुरक्षा दृष्टिएँ पूर्वसँ चलि अबैत परिपाटी सभपर बिचारबाक चाही।

आरती : अहाँ कोन परिपाटीक बात करै छी? ओ स्कूल, कॉलेज, बैंक, बजार जाएब-आएब बन्द कए दैक? ओ अपन धन्धा नहि सम्हारए? हम पुछैत छी पति-पत्नीक दैहिक सम्बन्धक अतिरिक्तो अपन-अपन जीवन छैक कि नहि?

अवधेश : **(प्रतिवाद करैत)** बकबास बन्द करू। अहाँ ओहिना उपस्थापन कए रहल छी जेना हम अहाँ ऊपर तेजाब ढारि देने होइक। हमरा कोन मतलब अछि एहि फालतू बात सभसँ!

आरती : अवधेश, हमरा बहुत सरोकार अछि, अहाँक फालतू बात सभसँ। तेँ तऽ हम बक-बक कए बजने चलि जाए रहल छी। काल्हि राति हमर शहरमे ई घटना घटित भेल अछि। आइ हमरा टोल-पड़ोसमे घटित भए सकैत अछि। काल्हि ने परसू हमर

नम्बर आओत। एक-एक कए बेरा-बेरी सभक नम्बर आओत...।

(ओ आवेशमे बजैत-बजैत एकाएक शान्त भए जाइत अछि। ओ एकटक भए दीनतापूर्वक अवधेश दिस ताकए लगैत अछि।)

जखन हमरा संग घटना घटत तखन अहाँ की करब?

(ओकर दुनू आँखिसँ दहोबहो नोर बहए लगैत छैक। अवधेश आरतीक दशाकेँ देखि द्रवित होइत अछि। ओ आरतीकेँ स्नेहपूर्वक सम्हारैत अछि।)

अवधेश : हम, अहाँ एकर निराकरण कए सकैत छी?

आरती : **(निर्भर होइत)** अवधेश, हम-अहाँ मिलिकेँ की नहि कए सकैत छी। एकटा एसकर ओ बूढ़ की-की नहि भोगलक देशक खातिर देश आजाद भए गेल।

(तखनहि देहरिक घण्टी बजैत अछि।)

अवधेश : **(देहरि दिस जाइत)** के थिकहुँ?

(बाहर दिससँ स्वर अबैत अछि, 'हम छी प्लम्बर...')

अवधेश : **(आरतीसँ)** लिअ, आरती जकरहि नाम लाल छड़ी सएह चलि आबए...। प्लम्बर आबि गेलाह... अहाँक बेसिनक पाइपक भूर मुनबाक खातिर!

(आरती बिन मुँह खोलनहि मन्द-मन्द हँसैत अछि। अवधेश केबाड़ खोलैक लेल उद्धत होइत अछि। धीरे-धीरे मंच अन्हारमे अलोपित भए जाइत अछि।)

दृश्य : तेसर

(स्थान पूर्ववत। समय दोपहरिआ। चाहक टेबुलसँ लागल सोफापर आरती आ बुआजी बैसि चाह पिबैत गप-सरक्कामे लागल छथि। तखनहि गरामे स्कूलिया बस्ता टाँगने प्रभवक प्रवेश होइत अछि। ओ अबिते आरतीकेँ 'मौसी नमस्ते' कहैत प्रणाम करैत अछि। आरती ओकर माथपर हाथ राखि आशीर्वाद दैत अछि।)

आरती : (इंगित करैत) प्रभव, बुआजीकेँ सेहो प्रणाम करिअनु। (ओ बुआजीकेँ सेहो पएर छूबि प्रणाम करैत अछि।)

बुआजी : बहादुर बुधिआर बच्चा। (ओकरा उठबैत, ओकर दुनू गाल छुबैत छथि।)

बुआजी : आरती अहाँ तऽ हमरा कहने छलहुँ घरमे बच्चा नहि अछि। मुदा ई तऽ बहुत बुद्धिमान, शूरवीर आ होनहार नेना अछि। तेहने भव्य नाम, प्रभव...!

आरती : सभटा वृतान्त सुनबैत छी बुआजी। (प्रभवसँ) प्रभव, अहाँ भीतर घर जाए गणित बनाउ गे।

प्रभव : नहि मौसी, एखन जाधरि अहाँ लोकनि गप्प-सरक्का करब, ताधरि काल्हिखन जे गेम कम्प्यूटरपर अहाँ सिखओलहुँ सएह खेलाइत छी।

आरती : अच्छा ठीक अछि मुदा गेमक अलावा कोनो आन बटम नहि टीपब।

प्रभव : नहि मौसी! नहि टिपब कोनो आन बटम। (भीतर चलि जाइत अछि)

आरती : बुआजी प्रभवसँ मेल-मेलापक कथा छगुनतासँ भरल अछि। ई हमर दूधवालीक बेटा थिक। एकर माएक नैहर हमरे गाम छलै...।

बुआजी : छलै...? एकर माए मरि गेलैक?

आरती : हँ बुआजी, प्रभव टुअर बच्चा अछि। एकर ने माए अछि आ

नहि बाप। एक मात्र पोसनिहारि एकर बुढ़िआ नानी अछि तकरो बएस अस्सीसँ ऊपर भए गेल छैक।

बुआजी : एहन अनर्थ कोना भए गेल?

आरती : एकर बाप हमर गाम बालीकेँ अवहेला करैत पुनः दोसर बियाह कए लेलक। घरमे सौतिनिआ डाहक खिस्सा-पिहानी चरितार्थ होमए लागल। ओतए ओकर गति ऐंठि-कूठिक नूर जकाँ बनि गेल। हमर गामबालीकेँ घरबाला एतेक अनदेख आ ईर्ष्या करए लागल जे पारस्परिक सम्बन्ध समाप्त भए गेलैक। अन्तमे नान्हिटा टेल्ह प्रभवकेँ लए नैहर चलि आएल। आ फेर ओतएसँ अपन माएक संग एहि शहरकेँ धए लेलक। समय बितलाक संग गामबालीक भीतरका स्वर एकबेर फेरो जागल से पतिकेँ पाबक लेल नहि, प्रभवकेँ अधिकार दिआबक खातिर। दुबारा सासुरक मुँह धेलक। मुदा ओतुका स्थिति आर बेसी खराब भए गेल छल। ओ लोकनि प्रभवकेँ सेहो आश्रय देबासँ अस्वीकार्य कए देलक। प्रभवक माए जोर-जबरदस्ती, झगड़ा-झाँटीक बीच समय काटए लागल। मुदा एहि बेर ओ लोकनि एहन कुचक्र चालि चललक जे सभटा सत्यानाश भए गेल। एकरा माएकेँ सुतली रातिमे देहपर मटिआ तेल ढारि आगि लगा सुड्डाह कए देलक। एकबेर फेरसँ दोबारा प्रभव बुढ़िआ नानी लग आपस आबि गेल। आब के लड़त ओकर लड़ाइ! आब तऽ जानि नहि एकर बुढ़िआ नानीक मरलाक बाद समय कोन करोट फेड़त। प्रभवक की दशा होएत?

बुआजी : बुझू जे भगवानक अहाँ ऊपर असीम कृपा अछि। कहाबत छैक, बान्हल घर आ पालल-पोसल बेटा तऽ भागमन्तेकेँ प्राप्त होइत छैक। तेँ अहाँ परम प्रसन्नतापूर्वक एकर माएक सदृश बनि पालन-पोषण करू। एक दिन अहाँक ममत्वक प्रति एतेक अनुरक्त भए जाएत जे अपनहुँ कोखिसँ जनमल बेटाक कान काटत। **(बात बदलैत)** देखू आरती, गप-सप करैत कोन दएकेँ समय निकलि गेल से पते नहि चलल।

एखन धरि मालती आ धननजीमेसँ केओ आगाँ डेग नहि ससारलाहेँ ?

आरती : आइ विशेष चिकित्सक मण्डली ओहि महिलाकेँ अस्पतालसँ छुट्टी दैक निर्णय लेलक अछि। ओ लोकनि सुरक्षा दृष्टिएँ आब ओकर इलाज घरहिमे राखि कएल जाएबाक बात कहै गेलाह अछि। ताही भाग-दौड़मे मालती दीदी अपसियाँत होएतीह।

बुआजी : आरती एहि केसमे हम जतए तक थाहैत छी, तेजाब उझलएबला गुटक साँटी-पाटी राजनीतिक दल सभसँ होइक से बात कोनो अनसोहाँत सन नहि लगैत अछि। तेँ जाँचक क्षेत्र वृहत अछि। अहाँ लोकनि अपन-अपन डेग फूकि-फूकिकेँ आगू बढ़ाएब।

(एहि बीच मालती दीदीक लीरी-बीती होइत प्रवेश होइत छनि। ओ अबिते अपन तानल छाताकेँ मोड़ैत ओकरामे अटकल बरखाक जलकेँ झाड़ि-झाड़ि हटबैत छथि। जाहिसँ बुझना जाइत अछि, बाहर बरखा भए रहल अछि। आब ओ अपन बैग आ छाताकेँ व्यवस्थित करैत समुचित स्थानपर राखैत छथि। एम्हर प्रभव बेर-बेर नव-नव आगन्तुकक प्रवेशपर उथल-पाथलसँ युक्त घरक मोख लग आबि-आबिकेँ हुलुक-बुलुक करैत देखि-देखि जाइत अछि। आ फेर भीतर आपस चलि-चलि जाइत अछि।)

मालती बुझना जाइत अछि अहाँक छाता बरखाक आगाँ छोट पड़ि गेल होए!

मालती दीदी : बुआजी! बाहर झमाझम निराओ वर्षा बरिस रहल अछि। तेँ तऽ पानि छुटैक आशमे आबयमे एतेक देरी भेल। मुदा वृष्टिक निरन्तरताक झड़ी लधनहि अछि।

बुआजी : जे होएक, धुरिआ साओनसँ तऽ नीक ने पनिआएल साओन। आब कहू अपन हाल-चाल! काज कतए तक अगुआओल?

मालती दीदी : **(चिन्ता भावमे)** ई केस आइ फेर दोसर मुँहक बाट धए लेलक अछि। ओहि महिलाक परिवार ओकरा स्वीकार करैसँ

पाछाँ हटि रहल छैक। ओकर सासु-ससुर उनटे ओहि महिलाक ऊपर अधलाह चालि-चलनक आरोप लगाकेँ अपन बेटाकेँ फाँसमे फँसएबाक बात पुलिस लग दर्ज कएलक अछि।

बुआजी : ओकर परिवार दबंगक अनसैनसँ दबावमे पड़ि एहि तरहक बकतब दए रहल अछि। अहाँ सभकेँ एहि बातपर अचरज नहि हुअए जे जानि ने जानि काल्हिखन जाकेँ ओ सभ ओकरा धन्धाबाली महिलाक रूपमे धब्बा लगाओत।

आरती : ओकर पतिसँ घटनाक परात जेना गप-सप भेल ताहि अनुसारे ई सभटा षड्यन्त्रकारीक दुरभि सन्धि थिक। ओ सभ घटनाकेँ नीपा-पोती करैक ध्येयसँ चाप दए रहल अछि।

मालती दीदी : बुआजी, हमरा तऽ ओकर पतिए लचर लगैत अछि।

बुआजी : से कोना...?

मालती दीदी : हमर अन्तरात्मा एहि बातकेँ स्वीकार करैसँ बेर-बेर वर्जन करैत अछि। पति-पत्नी घरमे संग-संग होएत। बदमासक गिरोह जखन घरमे घुसल होएत, कतेक हल्ला-गुल्ला भेल होएत। महिलाक संग जोर-जबरदस्ती भेल। पीड़िताक प्रतिशोधक कारणे ओकरा देहपर तेजाब ढारल गेल होएत। एतेक भेलाक पछातिओ ओकर पतिकेँ वा ओहि परिवारक कोनो आन सदस्यकेँ चाँछ तक नहि लागल अछि?

आरती : मुदा प्राथमिक अनुसन्धानमे लिखल गेल अछि, ओकर पति तखन घरमे नहि छल। एतबे नहि, ओहिमे इहो बात स्पष्ट लिखल अछि, दुर्व्यवहार आ तेजाब उझलबाक घटना घरमे नहि भए निर्जन जगहपर भेल। घरसँ महिलाक बलपूर्वक अपहरण भेल।

बुआजी : आरती, प्राथमिक अन्वेषणक सत्यताक पुष्टि तऽ महिलाक मुँह खुजलाक बादहि स्पष्ट भए पाओत। किन्तु मालती जाहि दृष्टिकोणसँ तथ्य तक पहुँचैक प्रयास कए रहली अछि, ओहो विवेचनक दिशा, जाँचक विषय बनि सकैत अछि। किएक तऽ एहि बातसँ पहिने घटनाक मुख्य अभियुक्त ओकरा परिवार लग विवाहक प्रस्ताव कएने छल। भए सकैत अछि

एहि सभ तरहक शंकालु बातपर पति-पत्नीक बीच पूर्वहिसँ विवाद चलैत हुअए? घटनाक दिन बाता-बाती भेल होइक? अनेक तरहसँ घटनापर चर्चा कएल जाए सकैत अछि। ओहिसँ पहिने हमरा लोकनिकेँ देखबाक अछि, पुलिस अपन डाँरि कोम्हर खिचैत अछि?

(एहि परिचर्चाक बीच धननजी मारकीन सन जलफाँफी एकरंगा कपड़ामे जाँतिकेँ बान्हल बही-खाता आ कागत-पत्तरक गठरी कान्ह पर लधने प्रवेश करैत छथि। हुनक दोसर हाथमे तानल छाता अछि जे भीजिकऽ बोदमबोद भेल अछि, जाहिसँ टप-टप पानि चूबि रहल अछि। हुनक प्रवेश कालहिसँ बुझना जाइत अछि जे ओ बहुत कठिनसँ एहि खाता-बहीक गठरीकेँ पानिमे भिजबासँ बचाकेँ अनलाहेँ। ओ सर्वप्रथम ओहि गठरीकेँ टेबुलपर राखैत छथि, फेर छाताकेँ मोड़ि एक कात लगाकेँ राखैत छथि।)

आउ, धननजी। आरती, हिनक परिचय भेल श्री धननजी ठाकुर। ई अपन महिला मण्डलीमे कार्यालय सहायक छथि। आओर धननजी ई भेलीह श्रीमती आरती नारायण। अपन महिला मण्डली संस्थाक नव नेत्री। **(दुनू गोटए एक-दोसराकेँ अभिवादन करैत छथि।)**

मालती दीदी : धननजी, अहाँक काज कतए तक अगुआएल?

धननजी : मैडम जी! महिलाक परिवारक तऽ दूरक बात भेल। सर-सम्बन्धीमेसँ सेहो केओ अपनएबाक लेल नहि तैआर भेल। अन्तमे ओकरा महिला अश्रममे ठाम धराएल गेल अछि।

बुआजी : महिलाक अवस्था केहन अछि?

धननजी : ओ आब सुधि-बुधिमे अछि। अनुमान लगाओल जाए रहल अछि जे काल्हिखन ओकर बयान जिला पुलिस पदाधिकारीक सन्निधिमे रिकोर्ड कए संरक्षित आ सुरक्षित कएल जाएत।

.बुआजी : धननजी, ई सभ तऽ भेल कोनो सरकारी काजक निपटाराक

नियमित कार्यविधि। आब हमरा ई बताउ , अन्यायी, अनसैनी सभ कहिआ तक धराएत? आ कि आनहि घटना जकाँ एकरो रसातलमे गाड़ि राफ-साफ कए देल जाएत?

धननजी : पुलिस अधिकारीगणक मतानुसार चारिसँ पाँच दिनक भीतर तहकिआत कऽ उद्भेदन कए देल जाएत।

बुआजी : मुदा हम तऽ एखन धरि इएह देखैत अएलहुँ अछि जे कोनो घटना घटलाक बाद त्वरित उद्भेदनक घोषणापर कार्यान्वयन नाम मात्र ततबा कालधरि चलैत अछि, जाबत कालधरि वातावरण गरम रहैत अछि। फेर सभटा ठण्डा बस्तामे बान्हि दबा देल जाइत अछि।

आरती : एहि बेर एहि घटनामे ओना किछु नहि होएत, जेना आन-आन काण्डमे एखनधरि विधिक विरुद्ध होइत आएल अछि।

बुआजी : एही बातक अहाँ सभसँ आशा करैत हम रश्मि सिन्हा माने अहाँ लोकनिक बुआजी चलली अपन मुम्बइ नगरिआ। तऽ आरती महोदया, सम्हारू अपन खाता-खतिआन...।

(एकाएक बुआजी बात बजिते-बजिते उठि अपन आधुनिक झोड़ाकेँ गरामे धरैत बिदा होएबाक सुर-सार करए लगैत छथि। ई देखि मालती दीदी आ धननजी सेहो अपन-अपन आनल सामान सभ समटए लगैत छथि। एहि तरहे सभ गोटे बाहर दिस प्रस्थान करैत छथि। जएबाक उपक्रम शुरू होएतहि प्रभव अपन स्वभावक अनुरूप एकबेर फेर मोख लग आबि टकटकी लगाएकेँ देखए लगैत अछि। एहि अन्तर्गत स्वचालित सीढ़ीकेँ ऊपर आबि रूकबाक, ओकर पट फुजबाक, लगबाक आ फेरो नीचाँ दिस जएबाक स्पष्ट ध्वनि पसरैत छैक। जेना कि अएनाइ-गेनाइ काल सभखन एना होइत रहैत अछि। एहि बीच आरती हुनका लोकनिकेँ अरिआति मोख लग प्रवेश करैत अछि तऽ ओकर नजरि टकध्यान लगओने प्रभवपर पड़ैत अछि। ओ आतुरतापूर्वक ओकरा लग आबि जाइत अछि।)

आरती : प्रभव, आजुक बैठकी तऽ अहाँक पढ़ाइ-लिखाइकेँ चौपट कए देलक।

प्रभव : मौसी अहाँ सत्ते बजैत छी। आब तऽ बहुत देरी भए गेल। आब हम एखन घर जाइत छी।

आरती : नहि-नहि, अहाँ अपन स्कूल बस्ता आनि पढ़ए लेल बैसू। किछु काल पढ़ि लेब आ स्कूलमे भेटल घरक काज तैआर कए लिअ। फेर छुट्टी...।

(चाहक टेबुल दिस देखबैत।)

ता धरि हम एकरा सभकेँ भीतर राखैत छी।

(प्रभव मोखहि लगसँ 'ठीक अछि मौसी' कहैत मूड़ी हिला सेहो 'हँमे हँ' मिलबैत अछि आ झट दए भीतर जाए अपन स्कूल बस्ता आनि सोफापर धरैत अछि। ताधरि आरती टेबुलपर राखल चाहक बर्तन सभ उठबए लगैत अछि तऽ प्रभव रजिस्टर आ कागत-पत्तरक गठरी उठबए लगैत अछि जे बहुत कठिनसँ उठा पबैत अछि। ओ आरतीक पाछाँ मोख लग जाइत-जाइत लए-दएकेँ खसि पड़ैत अछि। ताधरि आरती आपस आबि ओकरा उठबैत अछि आ ओ गठरी भीतर लए जाइत अछि कि हठात् कौआ जंगलासँ काँओं-काँओं करैत भीतर टेबुलपर बैसि अपन हिस्साक रोटी लेल टाहि मारैत अछि। प्रभव घरमे कौआकेँ आएल देखि आश्चर्यसँ भरल खुश होइत, उपर-झापर करैत जोर-जोरसँ आरतीकेँ चिकरए लगैत अछि।)

प्रभव : मौसी...मौसी...कौआ...कौआ...घरमे कौआ आबि गेल। काँओं. ..काँओं...कौआ बाजए काँओं...काँओं...।

(प्रभवक एहि खुशीक व्याकुलतासँ कौआ कखनहुँ खिड़की तऽ कखनहुँ केबाड़, घरक सभ भागमे उड़ि-उड़ि बैसैत अछि। देखिकेँ एहन अनुभूति होइत अछि जेना एकटा अबोध बालक आ कौआक बीच चोरा-नुक्की सन बालक्रीड़ा भए रहल होइक। ताबत आरती रोटीकेँ टुकड़ी-टुकड़ी

करैत बाहर अबैत अछि। ओकर आँखि ई दृश्य देखि गद-गद भए जाइत छैक।)

आरती : प्रभव, आब बस करू। कौआकेँ बेसी तंग करब तऽ ओ घर आएब-जाएब बन्न कए देत!

प्रभव : देखू ने मौसी, ओ हमरा कतेक तंग कए रहल अछि। हमरा पकड़मे नहि अबैत अछि।

आरती : ओकरा उड़ैक लेल पाँखि-पँखुड़ी छैक। ओ कोना पकड़ए देत!

प्रभव : हँ मौसी, अहाँ सत्य कथा बजलहुँ। देखू ने-देखू ने... घरक भीतर ओ कोनाकेँ फड़फड़ाए-फड़फड़ाएकेँ उड़ैत अछि। देखैत कतेक नीक लगैत अछि। छै ने मौसी!

(आरती रोटी लए खिड़की दिस बढ़ैत अछि।)

आरती : आउ, आब एकरा अहरा दैत छी।

(खिड़की लग जाए रोटी दैत अछि। दैत देरी कौआ झपट्टा मारि-मारि लुझैत अछि। ई मनोरम दृश्य देखि प्रभव आनन्दित भए उठैत अछि। आरतीकेँ जखन रोटी देब सम्पन्न होइत अछि तऽ प्रभव ओकर दुनू हाथकेँ पकड़ि अपना दिस अनबाक प्रयासमे बल लगबैत घरक केन्द्र स्थलमे अबैत अछि। प्रभवक मुँहक मुद्रा एकाएक भंग होइत, कोंढ़फट्टू सन बनि जाइत छैक। आरती अपन साड़ीक आँचरकेँ माथ परसँ उतारि आँचरक खूँटसँ प्रभवक नोर पोछैत अछि।)

प्रभव, एखनहि अहाँ कतेक हँसैत छलहुँ। फेर ककर नजरि लागि गेल जे एहन हसनमुह नेना कानए लागल!

प्रभव : मौसी अहाँ कतेक मानैत छी एहि कौआकेँ, ठीक ओतबे जतेक हमर माए हमरा मानैत छल।

(प्रभवक बात सुनि आरतीकेँ सहसा गामबाली मोन पड़ि जाइत छैक। ओकर अपनहुँ कोढ़ फाटैत अछि। आँखिसँ नोर झहरए लगैत अछि। ओ अपन आँखिक नोर नुकबैत पोछैत अछि।)

आरती : धुर बकलेल! हम अहाँकेँ अहाँक अपन माएसँ कम मानैत छी?

प्रभव : **(मूड़ी डोलाए 'नहि, नहि' कहैक स्वीकृति सूचित करैत)** अहाँ तऽ हमरा अपनहुँ माएसँ बेसी मानैत छी मौसी। मुदा आइ हमरा बहुत दिन पर हमर माए यादि आबि गेल। **(कहैत अचानक एकबेर फेर कानए लगैत अछि। आरती ओकरा माए तुल्य संवर्धन-संरक्षण करैत भरि पाँजकेँ पकड़ैत अपन करेजमे साटि लैत अछि। ओम्हरसँ कौआ आबि आरतीक पाँखुरपर बैसि कुचरए लगैत अछि। धीरे-धीरे मंच अन्हारमे अलोपित भए जाइत अछि।)**

अंक दोसर : दृश्य पहिल

(स्थान आ समय पूर्ववते अछि। धननजी सोफापर बैसि रजिस्टर सभकेँ दुरुस्त करएमे तल्लीन छथि। हुनका आगाँ टेबुलपर गेटिकेँ राखल खाता-बही, साहित्य अनेकहु संचिकाक ढेर लागल अछि। जाहिमेसँ जरूरतिक हिसाबसँ बाछि-बाछिकेँ विवरण दर्ज करैत छथि। क्षणहिमे सोझाँ राखल अपन लैपटॉपपर सेहो काज आरम्भ कए दैत छथिन। थोरबा कालधरि काज कएलाक बाद धननजीक भाव-भंगिमा प्रदर्शित करैत अछि जे आब हुनक काज समाप्त भए गेल अछि)

धननजी : **(कण्ठ स्वरसँ चिकरैत)**। मैडम जी...आरती मैडम...हमर काज पूर्ण भए गेल।

आरती : **(भीतरहिसँ)** हँ धननजी...इएह अएलहुँ। **(अल्प समयक बाद आरतीक प्रवेश होइत अछि।)** धननजी अहाँक निश्चिन्ततासँ लगैत अछि, आइधरिक सभ काज निस्तारित भए गेल।

धननजी : हँ महोदया, एखन तक सभ तथ्यक समावेश रजिस्टर सभमे कए देल गेल अछि।

आरती : तऽ एखन आब अहाँ एतएसँ कोम्हर बहरएबाक नेआर कएने छी?

धननजी : तत्खनात एतएसँ कोर्ट जाए ओहि पीड़ित महिलाक फर्द बयानक नकल निकालबाक अछि।

आरती : हँ, हँ, बयानक नकल निकाललाक बाद जँ भए सकए तऽ ओकर प्रतिलिपि आइए हाथमे थम्हाए देब।
(गोट चारिए चिट्ठी उठबैत बेरा-बेरी सभक चर्च करैत धननजीकेँ हाथमे दैत अछि।)
दोसर ई किछु चिट्ठी-पतरी अछि, ई भेल राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोगक, दोसर राज्य पुलिस मुख्यालयक, ई लिअ राज्य

महिला आयोगक आ ई अन्तिम, बाल संरक्षण कार्यालयकेँ आइये एहि पत्र सभकेँ प्रेषित कए देबैक।

(धननजी सावधानीपूर्वक सभटा पत्रकेँ अपन बैगमे धरैत छथि।)

एखनहि किछु मोन पड़ल छल। **(नाकपर हाथ रखैत)** हँ यादि आएल...धननजी, किछु दिन पहिने बच्ची सभकेँ मानव तस्करक चाँगुरसँ मुक्त कराओल गेल छल। तकरा सभक जानकारी एकत्रित कए तथ्य सभक लिखित प्रारूप तैआर करू। जाहिसँ ओकरा सभक हित लेल नीक नाहित काज भए सकत।

धननजी : एकसँ दू दिनक भीतर ओकर प्राथमिकता दैत काज शुरू कए देब। ...तऽ महोदया एखन हम चलै छी?

आरती : बेस...ठीक अछि बिन देरी कएने अहाँ निकलू...।

(धननजी जएबाक लेल पहिल डेग देहरिसँ बाहर करितहि छथि कि अवधेशक प्रवेश होइत अछि। ओ धननजीकेँ बाहर निकलैत देखि आँखि गुड़ारिकेँ देखए लगैत अछि मुदा धननजी पर कोनो प्रभाव नहि पड़ैत अछि ओ बाहर चलि जाइत छथि।)

आरती : **(अवधेशक पीठकेँ थपथपबैत)** ओ हमर सभक संस्थाक सहकर्मी धननजी छलाह।

अवधेश : आरती हम अपन विचार अहाँसँ कतेक बेर साझी कए चुकल छी। कोनो सभा-संस्थासँ अहाँक सरोकार स्थापित राखब हमरा पसिन नहि अछि। बेर-बेर बुझौअलहुँसँ एकटा अहाँ छी जे नहि मानैत छी।

आरती : **(बातकेँ टार-मटोर करैत)** सभसँ पहिने अपनेक हमरा ई बुझाउ जे आइ दिन दुपहरिआमे अनासुरती अपन प्रिय कार्यस्थलकेँ त्यागि, किएक फिरि घर अएलहुँ अछि?

अवधेश : एकाएक मनमे उत्साह जागल, किएक ने आइ करामाती कौआक दर्शन कए लेल जाइ।

आरती : मुदा कौआ तऽ रोटी खाएकेँ चलि गेल।

अवघेश : से तऽ जाइत हमहुँ देखलहुँ।

आरती : (आश्चर्य करैत) अहाँ कौआकेँ जाइत देखलहुँ?

अवघेश : कहैक तात्पर्य, हम कहि रहल छी जे बाटमे कौआकेँ उड़ैत देखलहुँ।

आरती : बाटमे कौआकेँ उड़ैत देखलहुँ तऽ कोनाकेँ पता चलल जे ई अपने कौआ थिक?

अवघेश : एहनो तऽ नहि भए सकैत अछि जे उड़ैत कौआ आने रहत। अपनो कौआ तऽ उड़िते होएत।

आरती : हाकिम! हम तऽ अहाँकेँ कतेक बेर कहने होएब, बेर-बेर कहने होएब कौआक अवलोकनक हेतु पूरा दिनक छुट्टी चाही।

अवघेश : हम तऽ आब सभ दिनक छुट्टीक आवेदन देमए चाहैत छी। आब ई नौकरी ककरा लेल करब?

आरती : जकरा लेल एखन पर्यन्त कएलहुँ अछि।

अवघेश : ओकरा हमर कमाएबसँ पूर्ण पूर्त्ति नहि भए पबैत अछि। दोसर आब ओ अपनहि बहुत कमासुत भए गेल अछि।

आरती : अवधेश! आएल दिन अहाँमे हमरा प्रति जागृत होइत असहाय बनबैक प्रवृति, असहयोगक अवधारणा, प्रवंचनाक प्रलेप हमरा भीतर अनकट असहजताक सहजहि निर्माण करए लागल अछि।

अवघेश : अहाँ अनसोहाँत, अप्रिय वातावरणक अनुष्ठान कए सहज गतिएँ हमरा प्रति अन्यायक ढोल पीट रहल छी।

आरती : तऽ आइओ एकबेर फेर दोष हमरे माथ लागत?

अवघेश : दोष ककरा माथ लागए तकर निराकरण केओ अपनहि अन्दर झाँकि करए तऽ बेहतर रहत।

आरती : अहाँक नेआरल गृहित भावना निराकार, निराधार आ निराश करएबला अछि। अभिप्राय चूड़ी पहिरैबाली महिलाकेँ अचल भारथी बना ओकरा घरक साज-सज्जाक वस्तुसँ जोड़ि राखब, आधुनिक समयमे नृशंसतामूलक सोच थिक। जे मनसुबा कहिओ फूलित-फलित नहि भए सकत।

अवधेश : अहाँ पति-पत्नीक बीच निस्प्रयोजनीय प्रतिस्पर्धाक बीआ रोपन करैत छी। प्रतिष्ठाक परिसीमनक तोड़-फोड़ कएकेँ हमरा सामाजिक दृष्टिएँ उलड़ बनबैक ताना-बाना बुनि रहल छी।

आरती : ताना-बाना तऽ हम अहाँक सुनैत-सुनैत तंग आबि गेल छी। बेर-बेर अपन उत्कर्ष देखबैत अभिमानपूर्ण विवादक बिहड़ि कोड़ैत रहैत छी। अहाँकेँ हमर कामयाबीपर एतेक जलन किएक होइत अछि? किएक हमर बढ़ैत प्रभावकेँ रोकए चाहैत छी? की हमरा रूकलासँ अहाँक मोनक सम्पूर्ण मनोरथ पूर भए जाएत? एकटा आरती नारायणक आवाजकेँ दबाए असंख्य नारी जातिक भीतरका आक्रोशित स्वरकेँ भंग कए सकब? हमरा तऽ नहि विश्वास भए रहल अछि। अहाँक प्रतिष्ठा, अहाँक मान-सम्मानक अपनहि मोनमे तिरस्कृत होइत हीन भावक कल्पना करब हमर समझसँ बाहरक बात अछि। हमरा रोकिकेँ अहाँ की सन्देश देबए चाहैत छी जे नारी सर्व तन्त्र स्वतन्त्रताक अधिकारिनी नहि थिक?

अवधेश : ई सभटा चिन्तारहित विरह-वेदना थिक। हम ककरो सर्वांगीण सफलतासँ ईर्ष्याग्रस्त नहि भेल छी आ ने ककरो तेजकेँ रोकए चाहैत छी।

आरती : तऽ फेर एहि दुपहरिआमे कार्यस्थल छोड़ि बिन प्रयोजनक घर आपसी कएकेँ कोन बातकेँ मानबाक तर्कपूर्ण युक्ति सिद्ध करए चाहैत छी?

अवधेश : आब प्रमाणिकता सिद्ध करए लेल बाँचिए की गेल अछि!

आरती : **(बातकेँ अकानैत, भावावेशमे।)** हँ-हँ... चुप किएक भए गेलहुँ? जखन मुँह खोललहुँ तऽ मनोगत भाव स्पष्टे कए लिअह। किएक तऽ आब हमरो दुनू कान उलहन-उपराग सुनैत-सुनैत बहीर भए गेल। हमर विवशता एकर निराकरण चाहैत अछि।

अवधेश : हमरो दिससँ अन्तिम चेतावनी बुझि बाट बदलब तऽ नीक रहत। अहाँकेँ महिला मण्डली आ ओकर संरचनाक स्वप्नक

स्वर भंग कए ओकरा त्यक्त करए पड़त।

आरती : जँ हम नहि त्यागब तऽ?

(अवधेश ओकरा दृढ़निश्चयसँ ओत-प्रोत भेल देखि चुप रहैत अछि।)

अवधेश हम अहींसँ पुछि रहलहुँ अछि। जँ हम अपन सामाजिक कार्यकर्त्ता बनैक रूचिकेँ नहि त्यागब तऽ?

अवधेश : **(ओझराहटिमे ताओ देखबैत)** नहि त्याग करब? तऽ फरिछाएल शब्दमे बुझि लिअ, आइसँ हमर घर अहाँ कोनहु स्थितिमे नहि अजबारब। ओतबे नहि, आजुक बाद सभा-संस्थाबाली जे केओ हमर घरमे पएर रखतीह हुनकर घोर अपमान होएत।

आरती : **(दूर हटि आश्चर्य करैत)** हमर घर? हमर घर, तोहर घर ई सभ वितर्कक बात कहिआसँ सोचए लगलहुँ अछि? **(थोपड़ी पाड़ैत)** वाह! वाह अवधेश। एकरे कहैत अछि माथक मोल बुद्धिक इयत्ता। ई सुन्दरसन घर अहींक तऽ थिक? हमर नहि। एहि घरकेँ सिरजएमे अहींटाक श्रम लागल अछि? हमर नहि।

अवधेश : आरती अहाँ मुख्य मुद्दाकेँ पलटि रहल छी। अहाँ हमरा नहि चाहलाक बादहु एहि घरकेँ सार्वजनिक कार्यालयकेँ रूपमे फलीभूत कए रहल छी।

आरती : अहाँ स्वार्थवश हमर पएरमे घुरघुरा बान्हैक कोशिश कए रहल छी जे आवश्यक आधारभूत सिद्धान्तक विरुद्ध थिक। अहाँक द्वारा ई उद्देश्यहीन निरर्थक बहस जानि-बुझिकेँ केवल हमर अभिव्यक्तिकेँ काटक हेतु कएल जाए रहल अछि। अवधेश, हम एतए एतेक अपमान सहलो उपरान्त अहाँसँ नेहोरा करैत छी। अहाँ हमर जरूरतिकेँ नहि जोड़ू अपन जिद्दसँ।

अवधेश : बन्न करू उचिती-मिनती। हमरा अहाँक बीच बात-विवाद आगाँ बढ़ए ओहिसँ पहिनहि अहाँकेँ अपन फैसला बदलए पड़त।

आरती : **(ठोस आत्मबलक संग)** हमर फैसला स्थिर आ स्पष्ट

अछि। अहाँक सन्देह संधानविहीन अछि।

अवधेश : (नृशंसतापूर्वक) तऽ अहाँ कोनहुँ हालतिमे अपन पथक परिवर्त्तन नहि करैत संगठनक दोकान चलएबे करब?

आरती : (आवेशमे आबि तेज स्वरे) भनहि कतबो कष्टकर हो, हम ई बाट चलबे करब। कतेक बेर बजाएब, सए, दू सए, हजार, दस हजार बेर... हम ई संगठन चलाएब...चलाएब...चलाएब...।

अवधेश : (क्रोधसँ बमकैत) हम ई संगठन नहि चलए देब...नहि चलए देब...नहि चलए देब...।

(अवधेश सहसा उत्तेजित होइत टेबुलपर राखल कागज-पत्र, डिक लागल रजिस्टर आ ढड्ढर सभकेँ नष्ट करैक ध्येयसँ ओकरा सभकेँ छीरी-बित्ती करए लगैत अछि। एहि बीच आरती अपन स्वप्नक अटारीकेँ धाराशायी होइत देखि, ओकरा बचबैक अथक प्रयासमे अवधेशक संग छीना-छपटी करैत अछि। जाहिसँ घरमे आसमर्द-अनघोल मचैत अछि। अन्ततोगत्वा बचएबाक कोनोटा चेष्टा नहि सफल भेलापर आरती नेहारून भए क्रन्दन करैत अति व्यथित, अशान्त आ विक्षिप्त सन करए लगैत अछि। ओ असह्य दुखक अनुभूतिक उहापोहक बीच यत्र-तत्र छिड़िआएल, खसल-पड़ल कागतक टुकड़ा-टुकड़ीकेँ बटोरैत अछि जेना भविष्यक कोनो धरोहरि रहैक। अवधेश जखन डिक लागल कागजात गोट-गोटकेँ नाश कए देलक तऽ ओकर ध्यान आरती दिस आकृष्ट होइत छैक। आरती अपन बिछल एकत्रित कागत सभकेँ बचबैक अथक कोशिशमे सामर्थ्य लगओलाक उपरान्तो अवधेशक असत, असगुन बल ओकरा असमर्थ बना दैत अछि। ओ परिणामस्वरूप कोंढ़मे साटैत हृदय विदीर्ण होइत जोर-जोरसँ हबोढकार कानए लगैत अछि। ओ नहि देबाक जिचमे पाछाँ हटैत जाए रहल अछि मुदा पाछाँ देबाल छैक। अवधेश अपन पुरुष होएबाक अभिमान देखबैत ओकरासँ जबरदस्ती

छिनैत उपेक्षापूर्वक एम्हरसँ ओम्हर फेकबाक क्रममे धक्का मारैत दूर भगबैत अछि। आरती प्रहारक आघातसँ आहत-प्रकुपित होइत देहरि लग पढ़ैक लेल तत्क्षण आबि रहल प्रभवक पएरपर खसैत अछि। प्रभव, आरतीक ई दशा देखि ओकर पक्षमे चित्कार करैत कक्षक मध्यधरि पहुँचि अपन सर्वांग शरीरकेँ बेढ़ सन अभेद्य आकार बनबैत अवधेशकेँ आगाँ बढ़ैसँ रोकैत अछि। अवधेशक पएर थिर नहि रहि पबैत अछि। ओ पाछाँ हटैत अछि। प्रभव सेहो अपन विराट स्वरूपकेँ धीरे-धीरे समटैत सामान्य अवस्थामे आपस आबि पाछाँ घुमैत अछि जतय टकटकी लगा आरती प्रभवकेँ परम सहायक भावसँ प्रतिक्षा कए रहल अछि। ओ आरतीक समीप अबैत अछि तऽ आरती प्रभवकेँ पकड़ि जोर-जोरसँ कानए लगैत अछि। अवधेश सेहो अपन कुकृत्यपर अपगरानि सन लगबाक नाटक करैत अछि। धीरे-धीरे मंच अन्हारमे अलोपित भऽ जाइत अछि।)

दृश्यः दोसर

(स्थान उत्तरोत्तर। समय भिनसर। दृश्य-दशा सभटा ओहिना देखार रहैत अछि जेना आरती आ अवधेश काल्हि दिनमे एक-दोसरासँ अपन शक्तिक अनुरूप स्पर्द्धा करैत जाहि तरहें घरक हालति बना छोड़ने छल। अवधेश सोफापर निस्तब्ध भए घोर निन्दमे सुतल रहबाकं अनुकरण करैत दयाक पात्रक निदर्श बनल अछि। आरती भीतर घर दिससँ तौलिआ नेने प्रवेश करैत अछि। ओ तौलिआकेँ मोखक समीपबला कुर्सीक डण्टापर राखि दैत अछि। ओकर शक्ल-सुरति चिंतासँ पीड़ित, निद्राक अभावमे राति भरि नहि सुतबाक सादृश्य प्रकट करैत अछि। ओ अबिते घरक दुर्दशाकेँ पश्चातापक आगिमे जरैत निहारि-निहारि देखए लगैत अछि। ई तारतम्य किछु कालधरि चलैत अछि आ कि ओकर चिन्तन-मननक मुद्रा भंग होइत छैक। ओ एकबेर फेरसँ भीतर घर आपस चलि जाए रहल अछि। एहि बीच आरतीक छिलमिल होइत मनःस्थितिकेँ पढ़ैत अवधेश उकस-पाकस करए लगैत अछि। आब ओ आपस जाए रहल आरतीक पाछाँ पड़ैत पएर मारि-मारिकऽ पछोड़ करैत अछि मुदा मोख लग जाइत-जाइत ओ हठात् स्तब्ध भए ततमतमे पड़ि खुट्टा जकाँ ठाढ़ भए जाइत अछि। ओम्हर एकबेर फेरसँ आरतीक अएनाइक आहट होइत अछि। अवधेश बिनु देरीक चट सोफापर जाए पूर्वक अवस्थामे व्यवस्थित भए जाइत अछि। एहि बेर आरती चाह आ पानि आनि टेबुलपर रखैत अछि। ओ अवधेशक पएर लग जाए ओकरा उठबैक ध्येयसँ हिलबैत-डोलबैत अछि। अवधेश अनठाए-मनठाएकेँ गबदी मारैत आर बेसी निन्दमे सुतल

रहबाक अभिनय करैत अछि।)

आरती : (आह्लादसँ) उठू अवधेश। प्रात कखनि कहाँदनि भेल। आइ काजमे जाएब कि नहि? आइ जँ देरी करब तऽ अहाँक सहकर्मी लोकनिकेँ चिन्ता-फिकिर होएतनि तखन तऽ ओ लोकनि खोज-पुछारी करब शुरू करताह। तखनि हुनका लोकनिकेँ की जवाब देबनि?

(स्वतः बीतल समयक स्मरण करैत)

सभ बेर हमहीं हारैत छी। हमरे चूक रहैत अछि। तेँ हमहीं हारिओ मानैत छी। अवधेश अहाँकेँ पछिला सभ बात स्मृतिसँ हटि गेल? की अहाँकेँ ओ बात सभ स्मरणमे नहि रहि सकल जकरा कहिओ नहि बिसरबाक सप्पत खएने छलहुँ! अहाँ इहो बात बिसरलहुँ जखन हम खचाखच भरल न्यायालयमे अपन पितासँ विमुख, विमुक्त होइत, अहाँक स्वरमे-स्वर मिलबैत एकबेर बनल धारणापर अड़ल रहि, चिकरि-चिकरि घोषणा कएने छलहुँ, 'माइ लॉर्ड, अवधेश हमर हरणहार नहि, तारणहार थिकाह। हमर पिता सामाजिक आडम्बरक रक्षार्थ अवधेशकेँ फँसएबाक ध्येयसँ हमर अपहरणक हलफनामा प्रस्तुत कएने छथि। माइ लॉर्ड, हमर उमेर अठारह पार कए चुकल अछि। भारतक संविधान हमरा अपन जीवन संगी पसिन्न करबाक मौलिक अधिकार देने अछि। जकर प्रयोग करैत हम स्वेच्छापूर्वक गान्धर्व विवाह कए एक-दोसराकेँ स्वीकार करैत सुख-दुखक सहभागी बनि पति-पत्नीक रूपमे ग्रहण करबाक आ जीवन निर्वाह करैक निर्णय लेलहुँ अछि।' कोर्टसँ बाहर निकललाक बाद हमर पिता हमरा लेल अन्तिम पाँति जे कहला, 'जो कुलच्छना कुलबोरनि, आइसँ तोँ हमरा लेल मरि गेलें आ हम तोरा लेल मरि गेलहुँ।' **(मन्द-मन्द कानैत)** आ अपन छातीपर पाथर रखैत बज्रतुल्य, दृढ़तासँ भरल, अपन आत्मजा, प्राणसँ प्रिय आरतीकेँ त्यागि बिन पाछाँ तकनहि ओ चाण्डाल हमर दृष्टिपथसँ दूर आगू बढ़ि गेलाह आ हम एहन अभागलि बनि गेलहुँ जकरा सँ पिता

पर्यन्त अप्रसन्न भए गेलाह।

(आरती द्वारा अतीतक घटनाक पुनःस्मरण कएलापर अवधेश सेहो अभिभूत होइत अछि। आरती द्वारा कहल जाए रहल एक-एकटा बातक झलक ओकरा आँखिक समक्ष दृश्यगत होमए लगैत छैक। ओ अवसर पाबि उठि आरतीक पाछाँ ठाढ़ भए जाइत अछि।)

अवधेश : **(साहस जुटबैत आरतीक कन्हाक आस-पास अपन तरहत्थीसँ थपथपी करैत)**

पुनः की भेल?

(आरती पाछू मुँह घुमबैत अवधेशकेँ अपन अवलम्बनार्थ बुझि ओकर हाथ पकड़बाक चेष्टा करैत अछि।)

आरती : पुनः! पुनः अहाँकेँ अपन अवलम्बनार्थ बुझि ई हाथ हम पूर्ण सत्यता आ दृढ़ धारणाक संग गहिकेँ पकड़ि नेने छलहुँ। **(ओकर कोंढ़ फाटैत छैक)**

अवधेश, अहाँ ओहि आरतीक अभिसिक्त अभिप्सित चरित्रपर सन्देहक छाह लगएबाक प्रयास कएलहुँ?

(अवधेश आरतीकेँ सस्नेह चुप करबैक प्रयत्न करैत अछि।)

अवधेश : आरती हमरा लोकनि अपन बाट 'निर्बाध संग देब' सन जीवनक मूल-मन्त्रसँ आरम्भ कएने छलहुँ। मुदा आइ स्वार्थवश कही वा परबुद्धीक खेल, दुनू गोटए दूराहापर ठाढ़ भए फराक-फराक सड़क दिस बढ़बाक प्रयासमे पृथक-पृथक कृत्रिम कार्य क्षेत्रक निर्माण कए रहल छी। किछु दिनसँ ई जे विचारमे अन्तर आएल अछि सएह तऽ विवाद थिक।

आरती : अवधेश, जँ हम अहाँसँ कही अहाँ बैंकक नोकरी छोड़ि दिऔक? अछि हिम्मति...?

(आरतीक प्रश्न सुनि अवधेश छटपट करए लगैत अछि।)

अवधेश : ई प्रश्न जतबे हास्यास्पद अछि, ओतबे लोलुपतासँ भरल सेहो। नोकरी आ समाज सेवा दुनू दू ओरक काज थिक। ठीक ओहिना जेना सुरक्षा आ असुरक्षाक दूटा छोर।

आरती : हम मानैत छी अहाँक ई बात। हम जाहि रास्ता पर निकलि चललहुँ अछि से अतिशय दुरुह, दुर्गम्य काँट-कुशसँ भरल भयाओन अछि। मुदा हाथमे मेहंदी लगाकेँ काजसँ दूर भेलि बैसलि रहबो तऽ अकर्मन्यताक लक्षण थिक। अहाँ हमरापर पूर्ण भरोस राखू। ओहिपर चलिनिहारिओ तऽ निर्भीक, निडर, न्यायप्रिय छथि। बुआजी आ मालती दीदी सन विजित, विख्यात प्रतिरूपक छत्रछाया अछि।

अवधेश : बुआजी आ मालती दीदी घर-परिवारसँ छुट्टाहुल, छुट्टा घुमएबाली निरंकुश महिला छथि।

आरती : ओ लोकनि असाधारण प्रकारक कार्यक सार्वजनिक प्रदर्शन एवं समाजक प्रति दायित्व निमाहएबाली आत्मनिर्भर महिला थिकीह। अहाँक आरती सेहो तऽ ओहने प्रतिबद्ध बनए चाहैत अछि।

अवधेश : एहि प्रतिबद्धतासँ अहाँ की सिद्ध करए चाहैत छी? जे आरती महिला समाजकेँ बदलि देतीह?

आरती : आरती महिला समाजकेँ बदलि सकतीह आ कि नहि से तऽ समय बताओत। मुदा आरती नारायणक जीवन अवश्य बदलि जेतनि से हमरा पूर्ण विश्वास अछि।

अवधेश : तऽ अहाँ महिलाक बीच आदर्शक प्रतिबिम्ब बनैक प्रत्याशासँ महिला लेल सामाजिक काज करए चाहैत छी?

आरती : हम ककरो बीच आदर्शक प्रतिबिम्ब नहि बनए चाहैत छी। वास्तवमे हम नारीक दुर्दशासँ प्रभावित भए ओकरा लेल चिन्तित छी। हम महिलाक जीवन नैहर आ सासुर दुहूठाम पेंडुलम जकाँ अछि। दुनू जगहपर उचितसँ अधिक श्रम कएलाक उपरान्तो ओकर जीवन चरित अतिसंवेदनशील संशयसँ भरल रहैत अछि। जखन कि दुनू जगहपर हमरा सभक संविधान बराबरीक अधिकार देने अछि। हम चाहैत छी एकैसम शताब्दीक महिलाक अधिकार कागतपर लिखलेटासँ नहि, धरातलपर हासिल करबाक ओरिआओन सेहो होएबाक चाही जाहिसँ नारी समाज आर्थिक रूपसँ समृद्ध होएत।

अवधेश : **(आरतीक जिचकेँ जीतबैत)** आरती हम नहि बुझि पएलहुँ अहाँ एतेक अगुआएल छी। जँ स्वेच्छया अंगीकृत कोनो आन्दोलनसँ जुड़ए चाहैत छी तऽ ई बात विचारणीय रहत। काल्हुक घटनाकेँ घटना नहि दुर्घटना बुझि हमरा क्षमा करी।

आरती : काल्हुक दुर्घटनामे हमरो गलतीकेँ कमतरि नहि आँकल जाए सकैत अछि। तेँ एकर विस्मरण ई कहि करी बड़का-बड़का बातक लेल छोटछिन बातकेँ कहिओ काल होइत रहब जरूरी छैक।

(ततबा काल धरिमे प्रभव स्कूल जएबाक परिधानमे बैग पीठ पर टँगने, हाथमे आरती-अवधेथक लेल भोजनक डिब्बा-डिब्बी लए प्रवेश करैत अछि। ओ आरती-अवधेशक बीच मेल-मिलाप देखि अकचकाइत अछि।)

प्रभव : जाह! आब बुढ़िआ नानी एतए कि करैक लेल औतीह! अहाँ लोकनिक झगड़ा तऽ निसफाल भए गेल।

(कहैत भोजनसँ भरल डिब्बा-डिब्बी टेबुलपर रखैत अछि।)

अवधेश : तोहर की विचार छह? मौसा-मौसीक झगड़ बाझल रहए! बौआ एहिठाम बात भेल बासी, झगड़ा-झंझटि गेल कासी। बटुक, एहि भारी-भरकम डोलची-कमंडलमे की सभ अनलहुँ अछि?

प्रभव : एहिमे थिक अहाँ लोकनिक भोजन-भात।

अवधेश : भोजन-भात? माने भोज! से कोन खुशीमे?

प्रभव : खुशीमे? खुशीमे नहि घनघोर दुखीमे। अहाँ सभ झगड़ा जे कएने छलहुँ।

आरती : से की भेल प्रभव, कने फरिछिआएकेँ कहू?

प्रभव : से इएह भेल मौसी, काल्हिखन एतएसँ गेलाक बाद बुढ़िआ नानी अहाँ लोकनिक कुशल-क्षेम पुछलक तखनि तऽ एहिठामक भेल खिस्सा-पिहानी सभटा सुना देलियैक। ओ तऽ साँझक झलफलीमे ओकर आँखि नहि सुझैत अछि तेँ काल्हि नहि आएल भेलैक। एखन बाटमे आबि रहल अछि।

आरती : से ओ कोना आबि रहली अछि?

प्रभव : **(ओ अपन बुढ़िआ नानीक यथावत् मिलैत-जुलैत हाव-भावक सदृश्य चित्रण करैत देखबए लगैत अछि।)** से ओ अपन आँखिमे गाँधी चश्मा लगा आ हाथमे फराठी लेने साक्षात् गाँधीजीक डान्डी यात्रा सन चलैत आबि रहल अछि।

आरती : बुढ़िआ नानी आबि रहलीहें?

प्रभव : हँ...जे घड़ी जे पहर ने पहुँचलीहें एहिठाम।

अवधेश : से एतेक हड़बड़ाएकँ किएक आबि रहलीहें?

प्रभव : एकहि टा बात कतेक बेर कहू, कहैत-कहैत मुँह दुखा गेल। ओ अहाँ लोकनिकेँ बौंसबाक वास्ते आबि रहल अछि।

अवधेश : मुदा एतए तऽ झगड़ा निरबार भए गेल!

प्रभव : झगड़ाक निरबार एसकरेमे कोनाकेँ भए गेल? से जानए बुढ़िआ नानी, जानब अहाँ लोकनि...।

(बात होइते छल कि घड़ीक घण्टा बजैत अछि। प्रभव स्कूलक लेल हड़बड़ाइत अछि।)

बाप रे...आठ बाजि गेल...हमर स्कूल...!

(ओकरामे एकाएक स्कूल पहुँचबाक आतुरता बढ़ि गेल छैक।)

आरती : **(आह्लादसँ)** ठीक अछि प्रभव, अहाँ आब यथाशीघ्र स्कूल दिस प्रस्थान करू...।

नहि तऽ भए रहल अछि अहाँकेँ देरी...।

प्रभव : **(जाइत-जाइत)** नमस्ते मौसी...।

नमस्ते मौसा...।

(ओ दूर तक पाछाँ घुमि-घुमि हाथ उठाए-उठाएकेँ अभिवादन करैत चलि जाए रहल अछि, जकर अनुशरण करैत आरती सेहो ओकरा स्नेहसूचक ध्वनिसँ प्रोत्साहित करैत अछि।)

आरती : चलि गेल...आब ओ बहुत दूर बढ़ि गेल...।

अवधेश : प्रभव दिनानुदिन बहुत बेसी बुधिआर भेल चलि जाए रहल अछि।

आरती : सएह गुणधुन करैत छगुन्तामे पड़ल छी जे नान्हिटा बच्चा कोनाकेँ अपन बुढ़िआ नानीकेँ बुझा सकल होएत जे ओ बौंसए आबि रहल छथि।

अवधेश : मैडम ओतबे नहि ने, संग-संग भोजन-भातक व्यवस्था कए अहाँकेँ भण्डार घरमे घोसिअएबासँ आजुक दिनक लेल मुक्ति देलक। **(भोजन हेतु आतुरता देखबैत भोज्य वस्तुक निकट नाक आनि सुगन्धि लेबाक ध्वनि करैत)** जे से. ..समाज सेविका आरती मैडम हमरा तऽ विविध भोज्य वस्तुक सुगन्धि मात्रसँ पेटमे मुसरी चौका-छक्का मारि रहल अछि...।

आरती : निःसन्देह! अपनेक भूखल होएबाक फिकिर करैत, अपनेकेँ आदेश देल जाइत अछि जे अपने यथाशीघ्र तैआर होउ, ततबा काल धरिमे लगबैत छी अहाँक पनिपिआइ...। **(सोफापर बैसि टेबुलपर ठोकैत)** ऑर्डर! ऑर्डर...इजलासक हुकुमनामा तामिल होओ। **(आरती प्रभव द्वारा आनल भोजनक डिब्बा-डिब्बी उठबैत विदा होइत अछि। ओकर नजरि कुर्सीक डण्टापर राखल तौलिआपर पड़ैत छैक ओ एकबेर फेर डिब्बा-डिब्बी टेबुलपर राखैत, तौलिआ लए अवधेशकेँ सौंपैत अछि। अवधेश-आरतीक बीच तौलिआ देनाइ-लेनाइक लाथे एक-दोसराक बीचमे अन्तर्निष्ठासँ भरल प्रगाढ़ प्रेम उमड़ि छिलकैत अछि। धीरे-धीरे मंच अन्हारमे अलोपित भऽ जाइत अछि।)**

दृश्य : तेसर

(स्थान क्रमानुसार पूर्वतन। समय सन्ध्याकाल। अर्थात गदहबेरमे अवधेश सोफापर बैसि लैपटॉपपर तन्मयतासँ कोनो काज कए रहल अछि। ओकर आँगुर टंकन करैमे निरन्तर बाझल छैक। ठोर पटपटबैक आ टंकनक कट-कट करैत ध्वनि ओहिना सुनल जाइत अछि। बीच-बीचमे ओ सहसा कोनो-कोनो पाँती जोरसँ उच्चारण करैत अछि। जाहिसँ प्रतीत होइत अछि जे ओ कोनो अंगितक नामे पत्र टंकन कए रहल अछि। थोरबा कालमे स्पष्ट भए गेल जे टंकन कएल जाए रहल पत्र ओ अपन पिताकेँ लिखि रहल अछि। ई निरन्तरता चलिए रहल छल कि तत्क्षण नीचाँसँ ऊपर दिस ककरो अबैक पदध्वनि सुनल जाइत अछि। अवधेश अपन लैपटॉप परहक काज जल्दी-जल्दी करैत यथाशीघ्र निपटएबाक प्रयत्न कए रहल अछि। ताही क्षण आरतीक प्रवेश होइत अछि। ओ प्रसन्न मनसँ आनन्दक जयघोष करैत अछि। अपन देहक सकल अंग-प्रत्यंगसँ भरि मोन प्रसन्नता व्यक्त कएलाक बाद मिठाइक डिब्बासँ मिठाइ निकालि अवधेशक लाख मनाहीक बादहुँ ओकरा खुअबैत, अपनहुँ खाइत अछि।)

अवधेश : आइ ई मिठाइ कोन खुशनामामे बाँटल जाए रहल अछि?

आरती : ई मिठाइ नहि, नैवैद्य थिक।

अवधेश : नैवैद्यो तऽ भगवानकेँ कोनो अपेक्षा राखिएकेँ चढ़ाओल जाइत छनि। जरूर कोनो मनोरथ सिद्ध भेल होएत।

आरती : अवधेश आइ हमरा अपेक्ष-निरपेक्षक ओझराहटिमे जुनि ओझराओ। हमर प्रारब्धक यथोचित सफलता, हमरा लोकनिकेँ आरो दूर धरि चलबाक, बहुत ऊँच तक चढ़बाक ऊर्जा-शक्ति बढ़ा देलक अछि।

अवधेश : जँ कने अपन खुशीक आडम्बरकेँ साझी करैत नीक जकाँ वस्तुस्थितिकेँ बुझा सकब तऽ हमहुँ अहीं सन हर्षमग्न भए सकब।

आरती : जरूर अवधेश। हमरा लोकनिक एहि सार्वजनिक सफलतामे दू-दूटा शुभ समाद अछि। पहिल तँ बलात्कार आ तेजाबसँ पीड़ित महिला, आब ओ पूर्ण अविकृत रूपमे विद्यमान भए गेली। एहि तरहक जानकारी ओकरा देखि रहल विशेष चिकित्सकीय दल द्वारा देल गेल अछि।

(पीड़ित महिलाक बात अबिते अवधेश उदास होइत अछि आ यथाशीघ्र एहि बात सभसँ निबटए चाहैत अछि।)

अवधेश : **(अनोन-विसनोन सन)** पहिल तऽ बहुत रोचक छल। आब दोसर शुभ समाद जल्दी-जल्दीमे कहि सुनाउ?

आरती : जल्दी-जल्दी किएक कहि दिअ? एतेक पैघ बात कम समयमे कहलो कोना जाएत! की अहाँकेँ ई बात सभ सुनि प्रसन्नता नहि भेल जे एकटा महिला अपाहिज होइसँ बाँचि पूर्ण स्वस्थ भए गेल?

अवधेश : खूब खुशीक बात थिक। दोसर, जे बात सभ सुनलासँ मीठ-मधुर खएबाक अवसर प्रदान करत से सभ बात कतहु अरूचिगर लागए! आब तऽ मोन आतुर भेल अछि दोसर शुभ-मंगल समाद सुनए लेल।

(अवधेश जखन मीठ-मधुरक बात बजैत रहैत अछि तऽ आरती द्वारा आनल मिठाइक डिब्बा जे टेबुलपर राखल छैक ओहिमेसँ मिठाइ निकालि-निकालि लपालप खाइत रहैत अछि।)

आरती : दोसर शुभ समाद महिला समाजक लेल बहुत पैघ जीत थिक। आइ तेजाब काण्डक घटना परसँ परदा हँटबैत पुलिस पदाधिकारी एकटा विशेष वार्तामे उद्भेदन करैत बजलाह जे पीड़िताक बताएल हुलिआक आधारपर तैयार बहुत रास आकृति सभमेसँ चारिटा दुष्कर्मी सहित पाँचम तेजाब उझलैबला

खुनिआक पहिचान कए लेल गेल अछि। जकरा लोकनिकेँ धाँइ-धाँइ पकड़बाक लेल धर-पकड़ अभियान तेज कए देल गेल अछि।

(आरती गम्भीरतापूर्वक) हँ अवधेश, एकटा बात कहनाइ तऽ बिसरिये गेलहुँ?

अवधेश : एखनहुँ समय बाँचल अछि, कहू-कहू...।

आरती : **(एकटा आकृतिक प्रतिलिपि निकालि देखबैत)** चिन्हू तऽ एहि फोटोकेँ !

अवधेश : **(आकृति देखि असमंजसमे)** तऽ आब एहि घरकेँ पुलिस स्टेशन बनबए चाहैत छी...। खुफिआ जाँच पड़ताल केन्द्र बनबए चाहैत छी...?

आरती : अहाँ अनेरो असन्तुलित होइत छी। हम तँ प्रसंगवश बात रखलहुँ...।

अवधेश : ई आकृति देखाकेँ की कहए चाहैत छी?

आरती : अवधेश ककरो गप्पक बीचमे असम्बद्ध कथा बाजब उचित नहि, ई हुलिआ देखलाक बाद हम अनुमान लगेलहुँ जे जँ एकर आकृतिसँ दाढ़ी कम कएल जाएत तऽ अहाँक सदृश फोटो बहरा सकैत अछि। ओना ई अनुमानित आकृति थिक।

अवधेश : तऽ अहाँक हृदयगत भाव एतए तक अनुमान लगबए लागल जे अवधेश ओहि महिलाक संग बलात्कार कएलक...ओकरा ऊपर तेजाब उझिललक...?

आरती : **(उत्तेजक भावनासँ रहित, अवधेशकेँ शान्त करबाक ध्येयसँ)** शान्त-शान्त...अवधेश अहाँ तऽ एना करए लगलहुँ जेना सत्तहिमे पुलिस अहाँक नाम सन्दिग्धक सूचीमे दए देलक अछि। ई तऽ ओहिना सोचए लगलहुँ जेना ओ कहबी भेल जे कौआ ताड़क गाछपर की बैसल, गाछ खसि पड़बाक शंकामे पड़ि गेल। बस एकटा आकस्मिक कल्पना हम कएलहुँ, मसखरी करबाक उद्देश्यसँ...।

अवधेश : **(आकुल होइत)** देखू आरती, ई केस दिन प्रतिदिन सर्वाधिक

संवेदनशील बनल चलि जाए रहल अछि। ई सम्भव भए सकल महिला मण्डलीक समवेत समर्पण आ आन्दोलनसँ। तैओ ई सभ एतेक जल्दीमे कोना सम्भव भए सकल?

आरती : आजुक समय विज्ञानक युग थिक। जाहिमे असम्भव शून्य अछि। सरकारक इच्छाशक्ति जागल। पुलिस इमानदारीपूर्वक तत्परता देखौलक तऽ भण्डा-फोर भए गेल।

अवधेश : आब महिला मण्डली केहन डेग उठाओत?

आरती : आब हमर सभक संगठन सरकार आ पुलिस प्रशासनपर आर बेसी दबाव बनाओत जे पहिचान कएल गेल आकृतिक आधारपर ओकरा सभकेँ यथाशीघ्र गिरफ्तार कएल जएबाक चाही। जाहिसँ ओ महिला साक्षात् पहिचान कए सकत। तखनहि वास्तविक सत्य बाहर आओत।

(अवधेशक अन्तःकरणमे आरतीक एक-एकटा शब्दक अनुसन्धान चलैत रहैत अछि। जेना ओकरा लग अन्तःसाक्ष्य उपस्थित होइक।)

अवधेश : तऽ ओहि वार्तामि अहूँ उपस्थित छलहुँ?

आरती : हँ...मुदा किएक...?

अवधेश : सत्यानाश। सर्वस्वान्त। संग-संग हमर अहाँक सकल शरीरक सेहो भए जाएत अन्त।

आरती : ई कोन अभिनय आरम्भ भए रहल अछि?

अवधेश : अभिनय नहि यथार्थ थिक। बड़ा अएलहुँ उमंग भरल क्रिया-कलापक संग आनन्दक जयघोष करैत, प्रसन्नतासँ सकल अंग-प्रत्यंगकेँ डोलबैत-डालबैत। एखनहुँ समय हाथसँ निकलल नहि अछि। आबहु अहाँ अपन पएर पाछाँ खीचि चेत जाउ। कोनो संकट अएबासँ पूर्व सूचना दए रहल छी। अहाँ अपन अहित स्वयं अपनहि बेसाहि रहलहुँ अछि। अहाँ खतराबला रास्तापर ठाढ़ भए खतरनाक खेल खेलएबाक बाध्यताक जालमे फँसल चलि जा रहलहुँ अछि। जाहिमे प्राण जएबाक आशंका सदति बनल रहत।

आरती : अवधेश, अहाँ बहुत बेसी डराए रहल छी। आजुक परिप्रेक्ष्यमे

एतेक डरनाइ सेहो ठीक नहि।

अवधेश : अहाँ जे बूझी। हमरा बुझएमे कोनो दुविधा नहि रहल। एहि घटनाक तार कोनो बदमाश गिरोहक सरगना सभसँ जुड़ल होएत।

आरती : हँ-हँ, ओ प्रभावशाली लोकनि आओत आ हमरा लोकनिकेँ गिड़ि लेत! हम पुछैत छी अहाँ हमरा उद्बोधन कए रहल छी आ कि धमकी दए रहल छी?

अवधेश : ई केहन अधलाह बुद्धि कपारपर असबार अछि? एहि अघोर कालमे के ककरा लेल ठाढ़ होइत अछि!

आरती : अहाँक अनुसारे कुकर्मी कुकर्म कए सड़कपर आजाद घुमैत रहै! महिला अपन मुँह सीने रहए!

(अवधेश हक्का-बक्का भए आरतीक मुँह निहारए लगैत अछि कि ताहीखन टेबुलपर राखल अवधेशक मोबाइल बजैत अछि। ओ फोन उठबैत बात करिते-करिते भीतर दिस चलि जाइत अछि। जाहि तरहे फोनपर अभिवादन कएलक अछि ताहिसँ प्रदर्शित भेल जे फोन ओकर पिताक छल। आरती माथाकेँ घमबैत थोड़े तरकीब लगबैत अछि। टेबुलपर राखल लैपटॉपकेँ छुब-छाब करैत कोनो विशेष जानकारी हासिल भेलापर ओकरा पढ़ए लगैत अछि। ओकरामे अनिश्चयक भाव उत्पन्न होइत अछि। ओ लैपटॉप छोड़ैत अवांछित स्थितिक सम्भावनासँ विचलित होइत स्वतः बाजए लगैत अछि।)

आरती : ओ... तऽ आब पोल खुजल अहाँक कार्य-योजनाक। हमरा ठीक-ठाक करैक लेल अपन माए-बापकेँ बजाओल जाए रहल अछि। अवधेशजी तऽ आब अहाँक नव चालिक परामर्शदाता माता-पिता भेलाह अछि जे हमरासँ मेल-मिलाप कएकेँ बन्हनमे बन्हबाक परामर्श देलाह अछि...**(अवधेशक शेष बात करैत प्रवेशक संग मोबाइल परहक वार्तालाप समाप्त होइत अछि। मोबाइल पुनः टेबुलपर रखैत अछि।)**

अवधेश : (खुशी मोनसँ) आजुक दिन हमरा दुनू गोटेक लेल खुशीक

खजाना खोलिकऽ आएल अछि। एकरा संयोगे मानल जाए सकैत अछि। आरती, हमर माए-बाबू हमरा क्षमा करैत ओ सभ एतए पहुँचि रहलथिनहें। देखब, हमर माए अहाँ लेल कतेक रास रंग-विरंगक कपड़ा-लत्ता, किसिम-किसिमक गहना-गुड़िआ लओतीह। आ...हे, अहूँ कने अपन रंग-ढंग, रहन-सहन, पहिरन-ओरहन सामान्य पुतोहु जकाँ बना लेब।

आरती : एहि तरहक कार्य-योजनाक रूपरेखा कोन परिप्रेक्ष्यमे तैयार कएलहुँ अछि?

अवधेश : ई तैयार कएल परियोजना नहि, यथाक्रम अनायास घटि रहल अछि।

आरती : अहाँ मिथ्या बाजि रहल छी। ई सभटा अहाँ द्वारा रचल-बुनल कृत्रिम परिस्थितिक निर्माण मात्र थिक। सहजहि, बिनु कोनो विशेष कारणहि एहन चमत्कार होएब स्वभावतः अविश्वसनीय लागि रहल अछि।

अवधेश : एकटा एहन माए-बाप जकर बेटा ओकरा लोकनिक मोन-मतिसँ विवाह-दान नहि कए अपन पसीनक जीवन संगिनी चुनलक। एहिसँ पारिवारिक मतान्तर भेल। माए-बापकेँ बेटासँ सम्बन्ध-विछोह भेल। आए ओ लोकनि हमरा क्षमा करैत अपन पुतोहुक विधिवत् दर्शनक जिज्ञासार्थ एतए पहुँचि रहल छथि। एहिसँ बेसी कोनो बात एहि सम्बन्धमे नहि बनाओल जाए सकैत अछि!

आरती : अवधेश, हम अहाँक मेल कएल पत्र लैपटॉपपर पढ़ि चुकलहुँ अछि। जाहिमे स्पष्ट शब्दमे लिखल अछि, हमरा आ आरतीक बीच परस्पराश्रितताक सम्बन्ध एहन दुरुह अवस्थामे पहुँचि गेल अछि जे कखनहुँ विरहित होएबाक सम्भावनाकेँ बढ़बैत अछि।

अवधेश : **(लैपटॉप सम्हारैत)** आगाँ एहि पत्रमे इहो लिखल अछि, अहाँ लोकनि पुरना बात सभकेँ बिसरैत आरती-अवधेशक सम्बन्धविच्छेद होइसँ बचबैक खातिर एतए जरूर आएब...।

आरती : कटु वचनसँ ओही पत्रक अगिला भागमे लिखल अछि, ओ

नारी स्वतन्त्रताक नामपर घरहिसँ आन्दोलन आरम्भ कए विगत कतेको दिनसँ गर्दमिसान कएने अछि, जकरा सम्हारब हमर वशक बाहरक बात थिक।

अवधेश : आ अन्तमे लिखल अछि संगठनक ढोल पीटबाक अलावा हमरा घरमे आर कोनो काज-करतेबता नहि रहि गेल अछि।

आरती : एकरा षड्यन्त्र नहि तऽ आर की कहल जाए सकैत अछि?

अवधेश : एकरा कहल जाइत अछि अखण्ड, अगाध, अतिशयपर पहुँचल प्रेम-अनुरागक कथा। जकर रक्षार्थ एसकर केओ संघर्ष करैत अपसिआँत भेल अछि।

आरती : किएक नहि! अहाँ ठहरलहुँ सत्कुलभवक भलमानुस। अवश्ये अपने सन लोक भेटब दुर्लभ अछि! **(बात बदलैत)** की हम बुझि सकैत छी अपनेक माता-पिता कहिआ आबि रहल छथि?

अवधेश : ओ लोकनि काल्हि साँझ धरि पहुँचताह।

आरती : काल्हि? मुदा काल्हिखन तऽ हमर दिल्ली जाएब आवश्यक अछि। ओतहि महिला लोकनिक एकटा बैसार थिक। जाहिमे हमर सहभागिता सुनिश्चित अछि।

अवधेश : देखू आरती, कल्हुका सभ कार्य अहाँकेँ तत्काल स्थगित करए पड़त।

आरती : एना कोना भए सकैत अछि!
(अपन पर्ससँ हवाइ जहाजक टिकस निकालि देखबैत) इएह देखू टिकस। आबयबला भोरहरबा चारि बजेक उड़ान धरबाक अछि।

अवधेश : **(टिकस लए झटसँ फाड़ैत)** तत्खनात एहि टिकसकेँ कएल जाइत अछि निरस्त। अपनेसँ नम्र-निवेदन जे नहि जएबाक मोन-मति बना लेल जाइ।

आरती : एना नहि भए सकैत अछि। काल्हि महिला सम्मेलन थिक। जाहिमे सहभागिताक सुअवसर पाबि अपनाकेँ कृतार्थ बुझैत छी। ओहि सम्मेलनसँ महिलाकेँ एकसूत्रताक बन्धनमे बन्हबाक आ स्त्री सशक्तिकरणक लेल नव-नव विचार, नया बाट

खुजत।

अवधेश : अहाँकेँ सासु-ससुर सन अतिथि सत्कारसँ पैघ महिला सम्मेलन भए गेल अछि?

आरती : दुखक संग कहए पड़ैत अछि, हमर सासु-ससुरक खातिर महिला-सम्मेलनक तिथि परिवर्तन नहि कएल जा सकैत अछि।

अवधेश : ओहिमे हिस्सा लए अहाँ कोन प्रतिष्ठा हासिल कए घुरब?

आरती : ओहिमे महिलाक सम्पूर्ण उत्थान आ ओकर सर्वांगीण विकासपर परिचर्चा होएत। एक क्षेत्रक स्त्रीकेँ दोसर क्षेत्रक स्त्रीक संग भेंट-घाँट होएत। जाहिसँ ओकरामे आत्मविश्वास बढ़त, परिपक्वता आ स्वावलम्बन आओत। ओतबे नहि, जखन एकठाम एकट्ठा होएत आ वृहत संख्यामे धर्रोहि लागल स्त्रीगणक एक स्वरमे आवाज निकलत तऽ सरकारोक कान ठाढ़ होएत।

अवधेश : हमरा तऽ बुझाइत अछि, महिलाक एकजुट भेनाइये थिक पुरुष लेल खतरा!

आरती : एहि तरहक अधलाह मनोवृतिक उत्पति मनोविकार थिक। नकारात्मक सोच थिक। महिला अपन आजादीक बात कए रहल अछि। आब ओ आँगनक कोनटाकेँ पार होइत बाहर दलान-दरबज्जा, खेत-खरिहान तक जाएब-आएबक ओरिआओन कए रहल अछि। एहिमे कहाँ-कतहु देखाइत अछि पुरुषक प्रति विरोधाभास?

(अवधेश-आरतीक एकदिसाह अप्रिय, अरूचिकर भाषण सुनि-सुनिकेँ अनिच्छा भावे मुँह फेरि चुपचाप बैसि जाइत अछि। हठात् आरतीक ध्यान अवधेशपर पड़ैत अछि। ओ ओकर निकट अबैत अछि।)

जा...रे... एकसर बजैत-बजैत कल्हुका बदला एखनहि दिल्ली पहुँचि गेलहुँ। अहूँ तऽ छोट-छिन बातकेँ लए उड़ए लगलहुँ। मोफ्तमे एतेक कालधरि उहापोहक स्थिति बनल। एहन तऽ नहि ने होएत जे ओ लोकनि काल्हि आबि, काल्हिए आपस

चलि जाए जएताह! अहाँ एक मिसिआ चिन्ता नहि करू। हम छी ने आरती नारायण...हुनका लोकनिक मेहमानबाजीमे कोनो, कतहु चूक नहि होएत। अवधेश, हुनका लोकनिक अगमनक खबरिसँ जेना लागए लागल अछि जे हुनकहि सभ जकाँ हमरो माए-बाबूजी सेहो हमरा क्षमादान दैत एक-ने-एकदिन जरूर हमरा-अहाँकेँ देखक लेल आबि जेताह।

(आरतीक आँखिमे नोर भरि जाइत अछि।)

अवधेश : **(बोल-भरोस दैत)** अवश्य, किएक नहि! हुनका सभक आएब असम्भव नहि थिक। आबए ने दिअनु हमर बड़का बाबूकेँ, रस्सामे बान्हि अहाँक सम्मुखमे ठाढ़ कए देताह अहाँक माए-बाबूजीकेँ। सुनू, एहि गपउड्डबलिमे अजुका चाहक बेर सेहो बीति गेल।

आरती : बेर बीति गेल तऽ की भेल! हाकिम, चाह बनेनिहारि हाजिर छथि। अपने बैसिऔक, गरमा-गरम मसालेदार चाह बना पेश करैत छी।

(आरती भीतर दिस जाइक उपक्रम करैत अछि।)

अवधेश : **(आरतीकेँ घेराओ करैत)** राति भरि जागि घरक खगताक समानक सूची तैयार करू। तकर बाद घरक कोन-कोनखी तक सफाइ करैत ओकरा साज-सज्जासँ सुसज्जित कऽ दियौक। जाहिसँ हमर महामालिक प्रफुल्लित भए उठता...।

आरती : **(आश्चर्यसँ)** महामालिक...?

अवधेश : **(जीह कुचैत)** महामालिक...मतलब...बस...महामालिक...माने हमर घरक मालिक...माने हमर पिताश्री...हमर बड़का बाबू... आरती छोड़ू ने ई बात, सम्हारू घरक सभ भार...।

आरती : अहाँ ई सभ चिन्ता छोड़ि चैनक निसाँस छोड़ू आ लिअ। हम छी ने सभटा सम्हारि लेबै। घरक साज-सज्जाक लेल अपन धननजी छथि ने। हुनका घरक कुंजी थम्हा देबनि ओ पूरा इन्तिजाम सुविन्यस्त आ समुचित ढंगसँ सम्पादित करैत जेताह।

अवधेश : **(एकाएक चौंकैत)** मुदा साज-सज़्जाक लेल धननजी किएक?

हम किएक नहि? हम अपनहुँ कए सकैत छी एहि सभ वस्तुक बन्दोबस्त...।

आरती : हमरा मामिलामे अहाँ जुनि पड़ू। हमर सासु-ससुर आबि रहला अछि तेँ हुनका लोकनिक अभिनन्दन समारोहक ओरिआओनक अधिकार हमरा लेल सुरक्षित अछि। हुनका लोकनिक स्वागतमे मुखदेहरिक समीप एकटा भव्य, मनमोहक वन्दनवार बनाओल जाएत। ई सभटा काज अहाँ बुते नहि सम्भव भए पाओत। एहि सभक लेल धननजी उपयुक्त व्यक्ति छथि।

अवधेश : **(हुज्जति नहि पसारबाक ध्येयसँ स्वीकार करैत)** जानी अहाँ, जाने अहाँक काज आ जानथि अहाँक काज कएनिहार! हमरा तऽ बस अहाँ ऊपर पूर्ण भरोस अछि...।

आरती : **(अपन चेहरा देखबैत)** किएक नहि, एसकर एक मात्र हमहींटा जे छी...।

(आरती ई बात कहैत खट-मधुर हँसी हँसैत अवधेशक नाक तीरैत, हास्य-विनोद करैत प्रस्थान करैत अछि। एम्हर आरती सन सर्वजया पत्नी पाबैक उमंगमे अवधेश विभोर होइत घरक मध्य आबि आरती दिस देखैत अपन भाग्यकेँ धन्य मानैत अछि।

धीरे-धीरे मंच अन्हारमे अलोपित भए जाइत अछि।)

अंक तेसर : दृश्य पहिल

(स्थान यथाक्रम, जहिना एखनधरि चलि आबि रहल अछि। समय प्रदोष कालक अर्थात साँझ बाती दैक बेर। वस्तुस्थितिक अनुरूप जेना कि स्पष्ट भए चुकल अछि जे आइ आरतीक सासु-ससुर अपन पुतोहुक पहिल बेर मुँह देखबाक लेल एतए पधारि रहलखिन अछि। हुनका लोकनिक स्वागतार्थ घरसँ बाहर पर्यन्त परिमार्जन कए देखनुक सन साज-सज्जासँ साजल गेल अछि। घरमे नहुँ-नहुँ मुनहारि साँझक झल-फल इजोतकेँ झाँपनि दैत आधुनिक कृत्रिम प्रकाश पसरैत अछि। खुफिआ पदाधिकारी ए.सी.पी. चतुर चौपाल शत्रुक गतिविधिक जानकारी हासिल करबाक ध्येयसँ ओ अपन अन्वेषण कार्य करएमे लागल छथि। निरीक्षिका पद्मा पाकड़ि भीतर घर दिससँ आबि टेबुलपर राखल खुफिआ कैमरा उठा किछु काल धरि ओकरा निरीक्षण-परीक्षण करैक आशयसँ देखैत-परेखैत छथि। फेर भीतर घर दिस ओहि खुफिआ कैमराकेँ लएकेँ चलि जाइत छथि। एहि बीच बाहर दिससँ डी.सी.पी. तरुण प्रकाश अर्थात धननजी प्रवेश करैत छथि।)

धननजी : (अबिते देरी) ए.सी.पी. चतुर चौपाल। अहाँ लोकनिक काज एखनहुँ पर्यन्त समापन नहि भेल अछि?

(ए.सी.पी. चतुर चौपाल जे गवेषणक कार्यमे लीन छलाह से डी.सी.पी. साहेबक आवाज सुनितहि हुनक तल्लीनता भंग होइत छनि। ओ सहटिकेँ समीप आबि सैन्य-अभिवादन करैत छथि।)

अहाँ लोकनिक काज कतए तक अगुआएल अछि?

चतुर चौपाल : श्रीमान! घरक चप्पा-चप्पाकेँ खुफिआ कैमराक अधीन कए

देल गेल अछि। जाहिमे कोन-सन्हि सहित दोग-दोगहटि पर्यन्तमे ओकरा सभक कएल एक-एकटा किरदानी सभ एहिमे निरन्तर कैद होइत रहत आ तकर वर्तमान गतिविधिक जानकारी तत्क्षण निर्वाध हमरा लोकनिकेँ भेटैत रहत।

धननजी : बहुत बढ़िआँ। आ ओ अहाँक निरीक्षिका पद्मा पाकड़िजी एखनधरि कोम्हर बाझलि छथि?

(ए.सी.पी. चतुर चौपाल सैन्य-रीतिए भीतर घर दिस घुमि थोड़े आगाँ बढ़ि हाक पाड़ैत छथि।)

चतुर चौपाल : निरीक्षिका पद्मा पाकड़ि...यथाशीघ्र बाहर उपस्थित होउ...।

(निरीक्षिका पद्मा पाकड़ि मोखहि लग अपन हाथमे लागल गरदा झाड़ैत डी.सी.पी. साहेबक सैन्य-अभिवादन करैत हुनका लग प्रस्तुत होइत छथि।)

धननजी : निरीक्षिका पद्मा पाकड़ि... केहन तैआरी चलि रहल अछि अभियान निस्तारक?

पद्मा पाकड़ि : महाशय! भीतर पैसि गहन ओ व्यापक अनुसन्धान कएलहुँ अछि। कएल गेल निरीक्षण कार्यक आधारपर हमरा लोकनि एहि स्थिति धरि पहुँचलहुँ अछि जे विस्फोटक भण्डार एतए नहि बनाओल गेल अछि। हँ, तखन थोर-बहुत संख्यामे आन-आन किसिमक हथिआर जरूर पाओल गेल अछि।

धननजी : एकटा बात कान खोलिकेँ सुनैत जाइ जाओ, हमरा अभियान निस्तारक आरम्भसँ पहिनहि आतंकवादी द्वारा एकत्रित कएल गेल अस्त्र-शस्त्रक ढेरीक सटीक पता चाही। कोनो हालमे ओकरा लोकनिक बम-बारुद हमरा लोकनिक हाथ अएबाक चाही। आ हँ, एहि अभियानमे आम नागरिके नहि, एकटा चुट्टी-पिपड़ी पर्यन्त तककेँ नहि क्षति होएबाक चाही से अपेक्षाक अनुरूप उतरि परिणाम तक पहुँचबाक अछि।

चतुर चौपाल : श्रीमान! जाहि तरहक सूचना हमरा लोकनिकेँ प्राप्त भए रहल अछि, आततायी लोकनिक विशाल जमघट एहि शहरमे हुअए जाए रहल अछि। जाहिमे सभटा खुंखार अनसैनी सभ एकठाम जमा भऽ रहल अछि।

पद्मा पाकड़ि : महाशय, ओतबे नहि, ओकरा लोकनिक जमातिक सरगना सेहो पहुँचि रहल अछि।

चतुर चौपाल : सूत्र तऽ एतए धरि अवगत करओलक अछि जे ओ लोकनि शहरक भीड़-भड़क्काबला इलाकामे बम धमाका कए दहशति उत्पन्न करए चाहैत अछि।

धननजी : ओकरा सभक कार्य आरम्भ होएबासँ पहिनहि हमरा लोकनिक अभियानक निस्तारण भए जाएत। एक-एकटा आतंकवादी पकड़ल जाएत। मुदा से तखन सम्भव भए पाओत जखन अहाँ लोकनि कठोर परिश्रम कए ओकरा लोकनिक गोट-गोट कए सभटा सेन्हकेँ नीके-ना नष्ट-भ्रष्ट करैत अस्तित्वलोप कए देब।

चतुर चौपाल : इँ श्रीमान्, हमरा लोकनि पूर्ण आस्थाक संग देशक मान-मर्यादा आ सुरक्षाक वास्ते सभ किछुक उत्सर्ग करैत, कठिनसँ कठिन उत्पीड़न बरदास करैक लेल तैआर छी।

धननजी : अहाँ लोकनिक उत्साहसँ हम बुझि पाबि रहल छी जे देशक दुश्मनक खात्माक लेल उधकैत शोणितक उदमाउर चढ़ल अछि।

पदमा पाकड़ि : एकटा गरमा-गरम खबरि संचार व्यवस्थासँ पाबि रहलहुँ अछि। ओ ई जे अनसैनी लोकनि दिल्ली गेल आरतीकेँ ओतहिसँ अपहरण करैक नव योजना बनौलक अछि।

धननजी : एहि बातसँ निश्चिन्त भए जाउ। दिल्लीमे आरतीक अभूतपूर्व सुरक्षा-व्यवस्थाक प्रबन्ध कराओल गेल अछि। एम्हर एकटा अति संवेदनशील बात जे हमरा लोकनि अभियान निस्तारसँ सम्बन्धित कोनो जानकारी महिला मण्डलीक कोनो सदस्यक संग साझी नहि करब। किएक तऽ एकर गोपनीयताक भंग होएबापर विविध प्रकारक खतरा उत्पन्न भए सकैत अछि। बाँकी आर बात अवसर भेटलापर बुआजी आ मालती दीदी लग आइ प्रकट कए देबाक अछि।

चतुर आ पद्मा: (दुनू गोटएसँ) ठीक छैक श्रीमान...।

चतुर चौपाल : एकटा बात हमर रहि गेल अछि श्रीमान। जे हमर समझसँ

बाहर अछि। अभियान निस्तारक बाद जे नौबति आओत ताहिसँ निमहबाक केहन ओरिआओन कएल गेल अछि?

धननजी : अहाँक चिन्ता पूर्णतः विधिक अनुकूल अछि। प्रश्न सांकेतिक स्वरमे रहितहुँ विस्तार अछि। अहाँ आरतीपर आबएबला आपातकालक घटनाक मादे अपन बात रखलहुँ अछि।

चतुर चौपाल : हँ श्रीमान...।

धननजी : ओकर सम्भावित अनिष्टक आशंकासँ हमहुँ कखनहुँकेँ गुण-धुनिमे पड़ि जाइत छी। मुदा ओकरामे कठोरसँ-कठोर तकलीफ सहाज करैक अदम्य साहस छैक। ओ एतेक दुर्दान्त, निष्ठुर आ निःसहायकक बीच रहितहुँ एकटा उदार विचारबाली बनि निफिकिर भऽ अपन कर्तव्यकेँ निष्ठापूर्वक निमाहबा लेल तत्पर रहैत अछि।

(धननजी अन्तिम पाँतिक वकतव्य बाजिए रहल छलाह आ कि बुआजी एवं मालती दीदीक अनासुरतीमे प्रवेश होइत छनि। बुआजी सहज वाक् सम्पर्क राखबाक ध्येयसँ हुनक अन्तिम पाँतिक वाक्यांशकेँ मुँहसँ लपकैत पुनः दोहराबैत छथि।)

बुआजी : के कर्तव्यकेँ निष्ठापूर्वक निबाहि रहल अछि?

(एतबहि तऽ बजले छलीह आ कि दुनू गोटेक नजरि धननजी आ हुनक सहयोगीपर पड़ैत छनि। ओ लोकनि हुनका लोकनिकेँ वरीय पुलिस पदाधिकारीक वेष-भूषामे देखि अचांचके अचम्भामे पड़ि जाइत छथि। एहि बीच धननजी अपन दुनू अधिकारीकेँ भीतर दिस जएबाक संकेत दैत छथि। ओ लोकनि भीतर दिस चलि जाइत छथि।)

बुआजी : अहाँ...धननजी...आ नहि कि केओ आर...।

धननजी : केओ आर नहि हम धननजी थिकहुँ।

मालती दीदी : एकर आशय एहनो तऽ लगाओल जाए सकैत अछि अहाँ बहुरूपिआ थिकहुँ?

बुआजी : अहाँ तऽ महिला-मण्डलीमे जीवन-निर्वाहक उद्देश्यसँ एकटा

साधारण नोकरीक लेल आवेदन प्रस्तुत कएने छलहुँ?

मालती दीदी : ई सभटा हमरा सभ संग छल-कपट कए मान-सम्मानकेँ घटएबाक कुचालि थिक।

धननजी : सर्वप्रथम अहाँ लोकनिक विश्वासकेँ चोट पहुँचाएबाक धृष्टता कएलहुँ, ताहिसँ हमहुँ व्यथित छी। मुदा जखन केओ कोनो कठिन काज करबाक दृढ़ संकल्प लैत अछि, तऽ समीचीन निराकरण तक पहुँचैक लेल ओहि पथिककेँ कतहु ने कतहु कखनहुँ-कखनहुँ निरादर निराशाक बाटक सामना करै पड़ैत छैक।

बुआजी : अपन राग-त्तानकेँ छोड़ि आबहुँ तऽ अपन असल मूल परिचयसँ परिचित कराउ।

धननजी : असलमे हमर परिचय भेल डी.सी.पी. तरुण प्रकाश, खुफिआ विभाग।

बुआजी-मालती : **(नाम सुनतहि अकचकाइत)** डी.सी.पी तरुण प्रकाश... ई नाम तऽ सुनल-जानल सन लगैत अछि। **(कहि ओहिना चिचिआएत छथि जेना हुनक प्रतिष्ठाजनक उपलब्धिसँ भिज्ञ होएथि।)**

मालती दीदी : अपने एतेक पैघ अधिकारी रहैत हमरा सभक बीच काज करैक अभिनय किएक करए पड़ल?

बुआजी : आखिर हमरा लोकनिसँ कोन एहन जघन्य अपराध भए गेल अछि जे हमरा सभक पाछाँ खुफिआ अधिकारी नियुक्त कएल गेल अछि?

धननजी : अपराध नहि, परोपकार कहिऔक। कखनहुँकाल शासन-प्रशासन देशक हित कएनिहार-सोचिनिहारक पाछाँ सेहो ओकरा सुरक्षा दृष्टिए अधिकारी लोकनिकेँ लगबैत अछि। तखनहि तऽ महिला लोकनिक विशेष माँगपर सरकार त्वरित कारवाइ करैत हमरा तेजाब ओ बलात्कार पीड़िताक काण्डकेँ जाँचक क्रममे सोझरएबाक दृष्टिसँ पठाओल गेल अछि।

बुआजी : कि [illegible] ओहि घटनाकेँ सोझरा पौलहुँ?

धननजी : ओहि पीड़िताक घटनाकेँ बहुत नीकसँ सोझराएल गेल अछि।

मुदा ओकर निराकरण होएतहि एकटा आर महिला ओकरहि जकाँ फाँसल चलि जाइ रहल अछि।

बुआजी : डी.सी.पी. साहेब अहाँ ओहि ओझराइत महिलाक नाम खोलि सकैत छी?

धननजी : हँ! किएक नहि! ओ थिकीह अपन महिला-मण्डलीक सुनेत्री आरती नारायण।

बुआजी : **(चकित होइत)** आरती नारायण...?

मालती दीदी : आइ-काल्हि सरकारी मण्डलीमे आरती नारायणक सुरक्षा व्यवस्थापर बहुत बेसी चिन्तन-मनन चलि रहल अछि। से किएक?

धननजी : चिन्तन-मनन कोना नहि कएल जाएत?
बाते सएह छैक। आरतीक जीवनक खुजल किताब हमरा लोकनि ओहिना पढ़ि पाबि रहल छी। ओकर फुलबन सन जिनगी अधलाह असदवृत्तीक बीच उब-डुबमे पड़ल अछि, जाहिसँ बाहर निकलब ओकरा लेल ओतबहि कष्ट साध्य अछि जतेक एकटा केंचुआएल साँपकेँ अपन शरीरसँ केंचुआ त्यागब।

बुआजी : कोनो एहन मर्मस्पर्शी बात तऽ जरूर अछि, जकरा अहाँ सुस्पष्ट नहि कए अपना लेल कष्टसाध्य बनौने छी।

धननजी : समय आएला पर सभ बात स्पष्ट भऽ आओत। बुआजी हमरा सभक एकटा नव अवधारणा अछि जे जाधरि तेजाब काण्डक पूर्ण रहस्य उद्‌घाटित नहि भए जाएत, ताधरि एहि घर अएबा-जएबासँ आरती नारायणकेँ वर्जन कएल जएह। से ओकरा लेल सुरक्षा दृष्टिएँ अति उत्तम रहत।

मालती दीदी : से ऐना कोना भए सकैत अछि? केओ ककरो अपन घर आएब-जाएब करैसँ कोनाकेँ रोकि सकैत अछि?

धननजी : देखू, वर्तमान परिदृश्यमे एतेक मात्र कहल जाए सकैत अछि जे ओहि महिलाक संग घटल घटना सामान्य प्रवृत्तिक नहि छल। एखन तकक जाँच-परतालक आधारपर कहल जाए सकैत अछि जे ओ एकटा आतंकवादीक घटना छल।

(बुआजी आ मालती दीदीकेँ आतंकवादीक नाम सुनितहि जीसँ सट-सट प्राण ऊपर घीचऽ लगलनि। दुनू गोटए अति भयभीत होइत एक संग बजलीह– की कहलहुँ आतंकवादीक...?)

धननजी : हँ-हँ, आतंकवादीक...।

(ताबतमे भीतर दिससँ ए.सी.पी. चतुर चौपाल जिनका हाथमे आधुनिक मोबाइल रहैत अछि जे दृष्टिगत करैत अछि जे ककरो फोन आएल अछि। चतुर चौपालक पाँछा निरीक्षिका पद्मा पाकड़ि सेहो हड़बड़ाएल प्रवेश करै छथि। चतुर चौपाल अबितहिं डी.सी.पी साहेबक कानमे भनभनाइत कहैत छथि– जहाज जमीनपर उतरि रहल अछि श्रीमान...।)

धननजी : (अव्यक्त स्वरमे बजैत) हुनका लोकनिकेँ कहिअनु ओ लोकनि विदा होइत तऽ संग-संग खबरि करताह...।

चतुर चौपाल : ठीक अछि...जे आदेश श्रीमान...

(कहैत ओ अलग होएत मद्धिम एकान्ती स्वरमे मोबाइल पर बुझबैत)

श्रीमान कहलाहेँ जे ओकरा लोकनिकेँ विदा होइतहि तकर सूचना पठाएब...हँ-हँ...ठीक अछि...

(कहैत फोन काटैत छथि।)

बुआजी : हँ डी.सी.पी साहेब, आतंकवादीक बात अपने कहलहुँ। एना कोना भए सकैत अछि?

धननजी : ए.सी.पी. चतुर चौपाल आ निरीक्षिका पद्मा पाकड़ि अपने लोकनिकेँ तेजाब काण्डक आतंकवादी कनेक्शनकेँ बारेमे विस्तारसँ बुझैताह...।

(डी.सी.पी तरुण प्रकाश अपन हाथक इशारा देखबैत हिनका लोकनिकेँ विस्तारपूर्वक बुझबिअनु...एहि तरहे चतुर चौपाल आ पद्मा पाकड़ि प्रस्तुत होइत छथि अपन प्रस्तुतिक लेल।)

चतुर चौपालः से एना भेल बुआजी...ई बात किछु बरख पाछाँक थिक।

ओहि महिलाकेँ एकटा दुर्दान्त महिला अनसैनी आर्थिक मदतिक प्रलोभन दए अपन बुनल जालमे ओकरा फँसा अपन सहयोगीक संग मिलि अपहरण कए लएकेँ चलि गेल आतंकवादीक शिविरमे। जतए भेटए लागल ओकरा कठोर प्रशिक्षण।

पद्मा पाकड़ि : किछु दिन तक ओहि आतंकवादी शिविरमे समय बितओलाक बाद ओतुका उग्र, अस्वाभाविक, असुविधाजनक आ असहनीय उछन्नरसँ तंग आबि ओ महिलाकेँ ओतएसँ उगरास पेबाक लेल उखी-बिखी लागए लागल।

चतुर चौपाल : ओकर उताहुल मोन अपन उद्देश्यपूर्ति करबाक हेतु योजनाबद्ध रूपसँ माथा घमबए लागल।

पद्मा पाकड़ि : फेर एक दिन अपन तर्कपूर्ण आत्मबुद्धिक प्रयोग करैत ओ कोनो ने कोनो धरानी ओहि आतंकवादीक शिविरसँ झाड़-झाँखुरमे ओझराइत रने-बने बौआएत ओतएसँ मुक्ति पाबि अपन घर आपस आबि गेल।

चतुर चौपाल : घर तऽ आपस आबि गेल मुदा जाहि उत्साहसँ ओ युवती अपन जन्मस्थानक घरकेँ अपना लेल पूर्ण सुरक्षित बुझि ओतए आपस आएल छल से सभटा पनिमरू साबित भेल।

पद्मा पाकड़ि : ओकर जीवन एक बेर फेरसँ छहोछित भए छिड़िआए गेल। सर-समाजसँ लएकेँ सर-सम्बन्धी धरि पर्यन्त ओकरासँ विभक्त होइत लगबए लागल व्यभिचारिणी स्त्रीक थप्पा।

चतुर चौपाल : अन्तमे ओकर अपन परिवार सेहो सामाजिक ताना-बानासँ तंग आबि ओकरा त्याज्य कए घरसँ अलग-थलग कए देलक।

पद्मा पाकड़ि : आब तऽ ओकर जीवन असहाय आ घोर अभावक सामना करैत सामर्थ्यहीन बनैत नरकतुल्य कष्ट काटए लागल।

चतुर चौपाल : आ ओहि विरहावस्थामे पड़ल, सहायहीन समयमे भेटल छल ओकर ई वर्तमान पति। जकर पहिल पत्नीक मुइलापर दोसर विवाहक इच्छासँ ओहि महिलाकेँ साहचर्य बनबैत, पति-पत्नीक रूपमे परस्पर अंगीकार करैत विधिवत विवाहित पत्नी बना अपन देहरिक भीतर जगह देने छल।

पद्मा पाकड़ि : ओतहु ओकर अधलाह अभाग्य संग नहि छोड़लक। ओ

जाहि दिनसँ आतंकवादीक शिविरसँ भागल छल, ताहि दिनसँ अनसैनी सभ ओकर पछोड़ करैत शिविरमे फेरसँ आपस लऽ जएबाक चक्रचालि रचने छल।

धननजी : बुआजी, अन्तमे ओ देशद्रोही अकर्मक अपकर्मीक गिरोह ओकरा एकबेर फेरसँ अपहरण कए, ओकरा संग सामुहिक बलात्कार संग जघन्य अपराध कएलक। ताहूसँ जखन मोन नहि भरल तऽ जेना ओकरा लोकनिक सरगना आदेश देने छल ओकर हत्या करैक, ताहि उद्देश्यक पूर्ति हेतु ओकरा ऊपर तेजाब फेकि-फेकि तेजाबसँ स्नान कराओलक...।

बुआजी : **(अपन दुनू कान बन्द करैत)** बस आब नहि...पर्याप्त भए गेल। एहिसँ बेसी ओकर दुर्दिनक खिस्सा सुनैक हिम्मति हमरा भीतर नहि बाँचि सकल अछि। ओ कोइली जकाँ सतत् वियोगसँ व्यथिते रहि गेल

मालती दीदी : एतेक पैघ अन्याय आ एखनहुँ अन्यायी अहाँ सभक एतेक जाल बिनि-बिगलाक बादहुँ पकड़सँ बाहर अछि? की देशक संगठनसँ पैघ अछि अनसैनिक संगठन?

धननजी : हमरा लोकनि आतंकवादीक सभ ठेकानकेँ चिन्हित कए लेलहुँ अछि। एकसँ दू दिनमे परिणाम सभक सामने आओत।

बुआजी : डी.सी.पी. साहेब। हम पुछैत छी परिणाम आबयमे एतेक देरी किएक?

धननजी : किछु मानवीय मानक मूल्यकेँ बचएबाक उद्देश्यसँ तऽ दोसर मानवीय नोकसानकेँ कम करैक ध्येयसँ अन्तिम परिणाम आबएमे देरी भए रहल अछि।

(एहि बीच ए.सी.पी चतुर चौपाल आ निरीक्षिका पद्मा पाकड़ि अपनामे जानि-बुझिकेँ एकटा चालि फेकैक ध्येयसँ थोड़े पृथक भए एकटा गुप्तरूपे योजनाक तैआरी सांकेतिक रूपसँ करैत अछि जे धननजीक कथानक वक्तव्यक समापन होइतहि सम्पन्न भए जाइत अछि।)

चतुर चौजाल : **(एकाएक वर्तमान परिस्थितिमे परिवर्तन अनबाक ध्येयसँ)** श्रीमान! ओहि महिलाकेँ आश्रममे रहलासँ ओतए ओकर

जीवन खतरामे अछि।

धननजी : (अँटकर लगबैत) ओकर सुरक्षा आर बेसी बढ़ाओल जएह।

पद्मा पाकड़ि: श्रीमान! ए.सी.पी साहेबक कहब छनि, किएक नहि ओहि महिलाकेँ एहि घर माने आरती नारायणक घरमे आनि राखल जएह। जतए ओहि पीड़ित महिलाक संग-संग आरतीकेँ सेहो समुचित सुरक्षा भेटि जाएत।

धननजी : एनाकेँ कहू ने एक पंथ द्विकाज! बुआजी जाहि दिन हमरा लोकनि आतंकवादी सभक धड़-पकड़ करबाक अभियान चलाएब, ताहि दिन हमरा लोकनि चाहैत छी ओ महिला आरतीक संग आरतीक घरमे रहए...।

बुआजी : एहन अनुबन्ध कोना सम्भव भए सकैत अछि। आरती तऽ मानिओ जाएत मुदा ओकर पति जकर संस्कार आ सरोकार घर-बार आ कार्यस्थलक अलावा आन ककरोसँ नहि रहल अछि से एतेक छूट अकस्मात् ओ कोना दए सकैत अछि! दोसर, अवधेशकेँ पूर्वहिसँ ओहि महिलाक प्रति झड़कबाहि लागल छैक। ओ शुरूहेसँ ओकर विरुद्ध बाजैत आबि रहल अछि। तेँ एना कए सकब असम्भव होएत...।

चतुर चौपाल: (धननजीसँ) श्रीमान, हमरा लग एकटा युक्तिक बेओंत अछि...ई तखन सम्भव होएत जखन बुआजी समर्पण भावसँ एकर तानी-भरनी भरतीह।

धननजी : अहाँ राखू अपन तैआर कएल युक्ति...बुआजीकेँ कहुना कोनहुँ उपाय करहे पड़तनि।

चतुर चौपाल: जेना कि हमरा लोकनि सभ गोटे जानि रहलहुँ अछि जे आरतीक सासु-ससुर पहिल बेर एतए आबि रहल अछि? आरती जखन दिल्लीसँ एतए अओतीह तऽ ओहि आगमनकेँ किएक नहि मानल जाइ जे ओ सासुर पहिल बेर द्विरागमन भए आबि रहली अछि...।

धननजी : बस करू...बस करू...सभटा हम बुझि गेलहुँ अहाँक प्रासंगिक उत्पादनकेँ...बहुत नीक परिकल्पना...सारस्वत कथानकक कौशलपूर्ण युक्ति। (बुआजीसँ) बुआजी बनाओल योजना

विचारणीय अछि...उत्सवक अवसर तऽ उचित बनैत अछि। आ ओहि लोक-पाबनिमे आरती जरूर नेओतत ओहि पीड़ित महिलाकेँ। जखनहि नेओत पड़त तऽ नेओता पुरबाक हेतु ओहि महिलाकेँ उपस्थित कएल जाएत एहिठाम...बाद बाँकी सभटा हमरापर छोड़ल जाए...हम देखि लेब...।

(धननजी पीठ ठोकि चाबासी दैत ए.सी.पी चतुर चौपालकेँ)

हद कए देलहुँ अपने...आश्चर्य अछि अहाँक दिमागक जड़ैत बत्ती...।

(ततबहि कालमे एकबेर फेर चतुर चौपालक मोबाइल बजैत अछि। ओ अपन मोबाइल धननजीकेँ थम्हबैत छथि जे पहिनहिसँ जाइक लेल आतुर छथि।)

धननजी : हँ...हँ...हम डी.सी.पी तरुण प्रकाश बाजि रहलहुँ अछि...की कहलहुँ? ओ लोकनि हवाइ जहाजसँ उतरि मोटर कारमे बैसि विदा भए गेल अछि...ठीक छैक...सुनू, अहाँ लोकनि सम्पूर्ण बाट-चौबाटकेँ चौबन्हा बान्ह जकाँ बेधि, अभेद्य सुरक्षा-व्यवस्था प्रदान करैत चाँकि बरतैत एतए तक पहुँचू...जाहिसँ अपराधी हिल-डोल तक नहि कए सकए... ठीक अछि...हमरा लोकनि सेहो विदा भए रहलहुँ अछि...।

(कहैत मोबाइल चतुर चौपालक जिम्मा लगबैत छथि।)

तऽ बुआजी आब हमरा लोकनिकेँ आज्ञा देल जाइ, किएक तऽ पाहुन-परख जे घड़ी, जे पहर ने पहुँचएबला छथि। कहबाक अभिप्राय आरतीक सासु-ससुर पहुँचि रहलाह अछि...।

(धननजी, चतुर चौपाल आ पद्मा पाकड़ि खमखम करैत देशक सिपाही होएबाक अभिमानसूचक व्यवहार करैत बाहर दिस प्रस्थान करैत छथि। बुआजी आ मालती दीदी एहि नव परिस्थितिमे चिन्तासँ अन्यमनयस्क सन भऽ जाइत छथि। हुनका सभक मुँह मलीन भऽ जाइत छनि। बिनु पल खसओनहि मुखदेहरि दिस टकधियान लगओनहि रहि जाइत छथि। धीरे-धीरे मंच अन्हारमे अलोपित भए जाइत अछि।)

दृश्य : दोसर

(स्थान पूर्ववते। समय प्रातःकालीन। कक्षमे अतिकाय महामालिक चिन्तामग्न टहलि रहल अछि। कलीमक माए तन्त्रगामीक बगए-बानिमे सोफापर बैसल अछि। ओकर मुँहपर तामस छैक। अवधेश दुविधाजनक स्थितिमे पड़ि ओकरा लोकनिक सेवक बनि नेहोरा-विनतीक भावमे ठाढ़ अछि। हठात् कलीमक माए भाओ खेलएनिहारि भक्तिन जकाँ अशोभनीय नृत्य करए लगैत अछि।)

कलीमक माए : **(सहसा चिचिआइत)** कठिनतम...अतिशय कठिनतम...एतएसँ हमरा सभक बाहर निकलब अति कठिनतम।

महामालिक : शान्त...शान्त...शान्त भए जाउ कलीमक माए...अहाँ प्रतिक्षण हड़ाशंख हड़संहारि जकाँ भविष्यवाणी प्रस्तुत कए-कएकेँ अपनहि राग अलापैत रहैत छी।

कलीमक माए : हम कोनाकेँ शान्त भए जाउ महामालिक! हम कोना नहि अपन राग अलापब! हमर करोड़ो टाकाक परियोजनासँ तैआर कएल गेल कार कौआ हमर हाथसँ निकलि गेल। **(अवधेश दिस इंगित्त करैत)** महामालिक, जकरा हम स्वार्थ राखि नान्हिटासँ पोसि-पालि पोसपूत बनेलहुँ जे एकरा एक दिन अहींसन महामालिक बनाएब। मुदा कटुता करैत ई फँसिहारा फाओ-दाओसँ महाजालमे बझा देलक। आब हमरा लोकनि एहिठाम अथबल, उपेक्षित भेल काँओं-काँओं करैत रहब, बालु फँकैत रहब। नहि...कथमपि नहि...कठिनतम...अतिशय कठिनतम...एतएसँ बाहर निकलब अति कठिनतम...।

(एकबेर फेरसँ हाकरोस करैत कानि-कानि अजगुत नृत्य पुनः आरम्भ कए दैत अछि।)

अवधेश : शान्त...शान्त...! शान्त भए जाउ कलीमक माए...सभटा ठीक भए जाएत...कलीमक माए, हमरा लोकनि आइ राति धरि एतएसँ अवश्य पड़ा जाएब। भोर होइत-होइत हमरा

लोकनिक ठेकान बदलि जाएत...। दोसर, हम अहाँकेँ वचनबद्धतापूर्वक कहैत छी जे बहुत जल्दी ओ कार कौआ रूपी आधुनिक मशीन एकबेर फेरसँ अहाँक हाथमे आपस आनि देब आ ओहि कौआक जे अपहरण कएलक अछि, ओकरा सभक देहक सकल अंग-प्रत्यंगकेँ एहि तरहें क्षत-विक्षत करब जाहिसँ ओकरा असह्य कष्टक सामना करय पड़ैक।

महामालिक : देख, तों बेसी फफड़दलाली जुनि कर। तोरा एतए मिशन पूरा करबाक लेल पठाओल गेल छल मुदा तों...।

कलीमक माए : **(मुँहक बात छिनैत)** ई तऽ एतए हमरा सभक बताओल कार्य-पद्धतिकेँ चक्कापर राखि, काम-तृप्तिक हेतु सभटा बिसरि धोरबीक मोहजालमे फँसिकेँ रंग-रभसमे लागि गेल।

अवधेश : अहाँ लोकनिक दोषारोपन अनर्गल अछि। कलीमक माए, हम अपन गत्र-गत्रकेँ अहाँ लोकनिक उद्देश्यक निमित्त उत्सर्ग कएने छी।

महामालिक : ...तऽ तोरा इएह उद्देश्यसँ पठाओल गेल छल जे एतए आबि तोँ मटरगश्ती कर! आ कि कर्नल अवध नारायणक खोज-खबरि लेल पठाओल गेल छल...!

अवधेश : महामालिक, हम कर्नल अवध नारायणक खोज-खबरि एकत्रित कए, अपन कर्तव्यमे निष्ठापूर्वक लागि, सभ कार्य सम्पन्न कएकेँ निश्चिन्त भए चुकल छी। ओकर एकमात्र ललनाकेँ अपन अधिनस्थ कए चुकल छी। आब अहाँकेँ मिशन समापन होएबाक घोषणा करबाक अछि।

महामालिक : तऽ ओ छौड़ी कर्नल अवध नारायणक बेटी थिक?

अवधेश : हँ महामालिक...जहिना अहाँक सभसँ प्रिय सन्तानकेँ शिविरक भीतर ढुकि मुठभिड़ाओमे मारि खसेलक...ओकर बदला लए चुकल छी। **(मरल सन्तानक चर्चा सुनि महामालिक आ कलीमक माए थोड़े द्रवित होइत अछि।)**
आब ओ अपन एकमात्र सन्तानक सन्तापसँ जीबैत लहास सन जीवन व्यतीत कए रहल अछि...।

महामालिक : **(प्रसन्न होइत)** कलीमक माए, आइ हम अति प्रसन्न छी

(जोर-जोरसँ भभा-भभाकेँ हँसैत) कर्नल अवध नारायण जे अपनाकेँ बहुत बड़का देशभक्त बुझैत छल, आब ओ समय आबि गेल अछि ओकरासँ भेंट-घाँट करबाक। ओ जखन अपन बेटीक लेल हमर लातपर खसि-खसिकेँ गिड़गिड़ाएत तखन ओकरा उपेक्षापूर्वक अपन गिरोहपर कएल एक-एकटा हमलाक स्मरण दिआए-दिआएकेँ ओकर घाओपर नोन छींटब। तखन चिकड़ि-चिकड़ि हम ओकरा कहबैक देशक वीर सपुत, आब जोर-जोरसँ सोर पार अपन देशक सिपाही, अधिकारी आ ओहि जनता जनार्दनकेँ जकरा सभक लेल अपन जबानी उसरगि देने छें।

(एक बेर फेर ओहिना पछिले हँसब सन हँसीकेँ दोहराबैत अभद्र, क्रूर चेहरा प्रतिबिम्बित करैत अछि। आ कि मुखदेहरि लगसँ आहटिक आवाज आ किछु खड़बड़एबाक स्वर प्रस्फुटित होएतहि ओ चौंकैत अछि। ओकरा सुबहा होइत अछि जे केओ बाहर दिससँ चर-चीत लेबाक हेतु प्रयास केलक अछि। ओ सचेष्टता देखबैत... 'के छी...के छी बाहर...' **कहैत मुखदेहरिक बाहर निकलैत अछि जतएसँ प्रभवकेँ क्रूरतापूर्वक आनैत अछि। प्रभव स्कूल जाइक वस्त्राभरणमे अछि। ओकर कान्हपर स्कूलिया बस्ता सेहो टाँगल छैक। ओकर भाव-भंगिमासँ प्रतीत होइत अछि जेना ओ घरक भीतर भेल सभटा गप-सप सुनि लेलक अछि। ओ अतिशय भयभीत भेल अछि।)**

महामालिक : तोँ केँ छिऐं? एतए की करैक लेल आएल छलैं? जल्दी बाज...चोर जकाँ नुकाए तोँ की सभ सुनलीही?

(प्रभव, महामालिकक एकहुटा प्रश्नक उत्तर नहि दैत अछि। ओकरा डरसँ बकार बन्न भए जाइत छैक। जाहिसँ महामालिक अति प्रचण्ड रूप धरैत ओकर नरेठी पकड़िकेँ ऊपर दिसकेँ उठबैत अछि। ओ छटपट करैत घिघिआइत रहैत अछि। अवधेश ओकरा बचएबाक प्रयासमे... 'हा...हा...' **करैत आगाँ बढ़ैत समीप अबैत**

अछि।)

अवधेश : महामालिक...महामालिक, ओकरा छोड़ि दिऔक...छोड़ि दिऔक ओकरा महामालिक...ओ मरि जाएत...ई केओ आन नहि अपन प्रभव थिक...स्कूल जाइत काल नित रोज अपन मौसीसँ मिलबाक लेल अबैत अछि।

(आब जाकेँ प्रभवक नरेठी छोड़ैत अछि महामालिक। कने कालक लेल तऽ प्रभव अचेत भए जाइत अछि। अवधेश, ओकर आँखि-मुँहपर पानिक छिच्वा दैत अछि तखन ओकरा होश अबैत अछि।)

महामालिक अहाँ पागल भए गेलहुँ अछि! एखनहि होतसँ होतांग भए जइतए। अहाँ अपन अहित अपनहिसँ करए लगलहुँ? एनामे भेलो काज बिगड़त!

(एतबेमे बुआजी आ मालती दीदी आबि तुलएलीह। हुनका सभकेँ देखि प्रभवकेँ कतहुसँ जानमे जान आएल। ओ ततखनात सहटिकेँ बुआजीक लग आबि हुनक साड़ीक कोर पकड़ि हिचुक-हिचुक कानए लगैत अछि। इशारासँ महामालिक दिस देखबए लागल कि अवधेश ओकरा टिटकारैत-चुचकारैत अछि। अपन गढ़ि-गढ़ि कल्पित गपक जालमे फँसा बहटारबाक बहाना बनबैत परतारैत अछि। ओ बुआजीकेँ सुनबैत बाजए लगैत अछि।)

दू दिनसँ एकर मौसी की घरसँ अनुपस्थित भेलीह, एकरा अपने घर अनठिआ सन लगैत अछि। लगबो कोना नहि करत बुआजी, घरमे दू-दूटा अनदेशी-परदेशी लोक जे आबि ठहरल छथि!

बुआजी : **(आश्चर्यसँ)** की कहलहुँ..., अनदेशी-परदेशी! से के थिकाह...?

अवधेश : अनदेशी माने हमर बड़का बाबू आ हमर माताराम जे पहिल बेर एतए एलीहे।

बुआजी : अच्छा...अच्छा...।

अवधेश : **(प्रभवकेँ सहटारबाक प्रयास करैत)** बौआ, आब बालकानन

बन्न करू आ अहाँ बिनु देरी कएने स्कूल चलि जाउ...नहि तऽ कटि जाएत अहाँक आजुक हाजिरी।

मालती दीदी : हँ...हँ...कोनो बेसी चिन्ता नहि करबाक छह। आइ साँझधरि तोहर मौसी अवश्य आबि जएतीह।

(प्रभव जे किछु कहए चाहैत अछि से बात सभ ओकर मुँहक-मुहे रहि जाइत अछि। ओ बुआजी आ मालती दीदीक मुँह अनाथ सदृश तकैत विवश भए स्कूलक लेल विदा भए जाइत अछि।)

बुआजी : अवधेश बाबू, हमरा लोकनि अपनेक माता-पिताक समक्ष कन्या पक्षक प्रतिनिधि बनि एकटा प्रस्ताव लएकेँ अयलहुँ अछि?

महामालिक : हँ-हँ, किएक नहि! राखल जाइ अपन प्रस्ताव।

बुआजी : विचारार्थ उपस्थापित विषय इएह अछि जे हमर-अहाँक अनुपस्थितिमे जे किछु हमर आरती आ अहाँक अवधेश कएलक, सभटाकेँ बिसरैत आइ साँझखन जखन आरती एहि घरमे पएर रखतीह तऽ किएक नहि ओहि घड़ीकेँ द्विरागमन उत्सवक रूपमे मनाओल जाइ। जाहि उल्लासपूर्ण आयोजनमे दुनू परिवारक सभ व्यक्ति समाविष्ट होथि।

कलीमक माए : नहि! नहि... नहि! एना कोना भए सकैत अछि...?

मालती दीदी : किएक नहि भए सकैत अछि। एहिमे बेसी खर्चो नहि आओत। बस उल्लासपूर्वक कार्य आरम्भ करैक प्रेरणा चाही।

महामालिक : नहि, एहि तरहक पर्व मनाएब हमरा लोकनिक लेल असौकर्य होएत। दोसर, कलीमक माए जे बजलीह सएह एतय अन्तिम व्यवहार होएत।

बुआजी : **(अपन बुद्धिकेँ आँकैत)** कलीमक माए...?

महामालिक : हमर कहबाक तात्पर्य अवधेशक माए...।

कलीमक माए : हमरा लोकनि जे होअओ, अपन पुतहुकेँ लए आइ राति धरि अपन गामक लेल प्रस्थान कए जाएब...।

बुआजी : ई कोन कथा बाजि रहल छी! एखन तऽ सरि भएकेँ एहिठामक लोक सभसँ चिन्हो-पहिचिन्ह नहि भेल अछि। मात्र दू दिन

रहि कोना चलि जाएब?

अवधेश : बुआजी, बात असलमे एहिठाम कोनो वस्तुक थिर-थमान नहि अछि तैँ जाहि उत्सवक बात अहाँ लोकनि कए रहल छी से हमर महामालिक...।

बुआजी : महामालिक? से के थिकाह?

अवधेश : महामालिक माने बड़का बाबू... हमर पिता...।

बुआजी : अच्छा... अच्छा... तऽ अहाँक बड़का बाबू एहि उत्सवकेँ नहि मनबए चाहैत छथि?

महामालिक : गृहवधुक पहिल बेर घर अएबाक जे हमरा लोकनिक एक संस्कार थिक तकरा सामुहिक रूपें अपन स्थायी वासस्थानेपर निष्ठापूर्वक मनाओल जाएत, अन्यत्र आर कतहु नहि...। कारण हमरा लोकनिमे एकटा धारणा बनल अछि जे जँ एतए व्यभिचारार्थ गुप्त रूपे एहि पाबनिकेँ सम्पन्न कएल जाएत तऽ परिवारमे आपसी वैमनस्यता उत्पन्न होएत।

मालती दीदी : ओ... तैँ अहाँ लोकनि बोरिआ-बस्तर बान्हि आइ एतएसँ निकलए चाहैत छी?

महामालिक : अवश्य, आब तऽ नववधूक प्रतीक्षामे कालयापन कए रहल छी। ओ अओतीह आ हमरा लोकनि तत्क्षण विदा भए जाएब।

बुआजी : नहि भाइ साहेब, आकस्मिक एहि जाएबकेँ निरस्त करए पड़त। किएक तऽ एहि विशिष्ट उत्सवक हकार बहुत गोटेकेँ हम सभ दए चुकल छी...।

कलीमक माए : **(अस्वीकार करैत)** असम्भव...। कोनो हालतिमे अहाँ लोकनिकेँ पूर्वसँ कएल विचारकेँ परित्याग करए पड़त...।

बुआजी : से एतए अहींक हठधर्मिता नहि स्वीकार कएल जाएत। जँ एकतरफा एहन स्थितिक अनुवर्तन करब तऽ आएल कहुतिया बिनु कनिआँक एसकर वरक संग गाम फिरताह... बात जानी राफ-साफ...।

अवधेश : बुआजी, कहबी अछि गरा पड़ल ढोल बजबहि पड़ैत छैक। तैँ अहाँ लोकनि जे कहबैक सएह-सएह होएत। जाहि घरसँ

वर विवाहक लेल निकलल छल... द्विरागमनो भए कनिआँ ओतए अओतीह...।

बुआजी : इएह तऽ हमहुँ सुनए चाहैत छलहुँ। तऽ शुरू करू शुभ उत्सवक तैआरी उल्लासक संग **(कलीमक माएकेँ अवधेशक मुँहसँ उत्सव आयोजनक स्वीकृतिक स्वर सुनतहि ओ एक बेर फेर** 'असम्भव...असम्भव...' **कहैत सहसा चिचिआइत वएह अजगुत अशोभनीय नृत्य आरम्भ कए दैत अछि।)**

कलीमक माए : अनर्थ...घोर अनर्थ...,कठिनतम...अतिशय कठिनतम... एतएसँ हमरा लोकनिक बाहर निकलब अति कठिनतम...!

(एक बेर पुनः महामालिक आ अवधेश मिलि कलीमक माएकेँ शान्त करबाक चेष्टामे लगैत अछि। ई सभ दृश्य देखि बुआजी आ मालती दीदीक नाक-मुँह घोकचए लगैत छनि। ओ लोकनि अचरजमे पड़ैत अपन साड़ीक आँचरक खूटकेँ नाकपर धरैत छथि।

धीरे-धीरे मंच अन्हारमे अलोपित भए जाइत अछि।)

दृश्य : तेसर

(स्थान अवधेशक शहरी निवासगृहक बैसार कक्ष। समय संध्याकाल। आइ ई गृह एकबेर फेरसँ दुलहिन सन सजि-धजिकेँ दुरगमनिआ कनिआँक आगत-स्वागतक लेल प्रतीक्षारत अछि। वाद्य-यन्त्रक मद्धिम स्वर प्रस्फुटित होइत अछि। घरमे उपस्थित सभ गोटे नव-नव परिधान पहिरने सुसज्जित छथि। बुआजी घरक गिरथाइन बनल एहि घरसँ ओहि घर अत्यन्त हर्षित मुद्रामे जाइत-अबैत देखाइत छथि। ततखनात चारि-पाँचटा स्त्रीगणक प्रवेश होइत छनि। देखतहि बुआजी अनुराग छिड़िअबैत छथि।)

बुआजी : कहू तऽ... गीत गओनिहारि आइ-माइ लोकनि, अहाँ सभ आबएमे कतेक बिलम्ब लगाए देलिए! आब कखनि गाओल जाएत गोसाउनि ब्राह्मणक गीत। जे घड़ी, जे पहर ने कनिआँक मोटरगाड़ी मोख लागए बला अछि।

(एहि बीच बुआजी हुनका लोकनिकेँ एकटा पटिआ ओछाए ओहिपर आह्लादिकेँ बैसबैत छथि। जाहिपर बैसैत ओ सभ भगवतीक गीत उठा दैत छथिन...

मैया अहाँ बसै छी
मिथिला नगरिक माँटिमे
पुण्य भूमि उच्चैठमे ना...

जाहिमे बुआजी सेहो अपन भास दैत छथिन। ई सभ होइत देखि महामालिक आ कलीमक माएकेँ नीक नहि लगैत छैक। ओकरा लोकनिक मोन घिरता-धिन लगैत अछि। ओ सभ गुम्हड़ैत रहैत अछि। देखलासँ लगैत अछि ओ लोकनि किछुमे ओझराए गेलहेँ। तखनहि बाहर नीचाँ दिससँ कोनो गाड़ीक ठाढ़ होएबाक आवाज

अबैत छैक। दू-चारि बेर गाड़ीक सीटी सेहो बजैत अछि। सभसँ पहिने प्रतीक्षारत बुआजी उठि बालकनीसँ निहुड़ि नीचाँ दिस तकैत छथि। फेर ओ आतुरतासँ भरल मोनसँ आपस अबैत छथि।)

बुआजी : उठै जाए जाउ... बहुरिआक मोटरगाड़ी नीचाँ कोनटा लागि गेल।

(बुआजी भीतर घरसँ झट-झटकेँ बेरा-बेरी दूटा लाल चंगेरा आनि रखैत छथि। जाहिमे धान-पान देल रहैत अछि। एकटा चंगेरामे दीप सेहो जड़ैत रहैत अछि। जाहि चंगेरामे दीप जड़ैत रहैत अछि से उठा एकटा बएसगर महिलाकेँ थम्हबैत छथि तऽ दोसर चंगेरा अपनहि उठबैत छथि। सभ गोटए बर-कनिआँकेँ नीचाँसँ ऊपर आनैक लेल हेड़ बना टोप-टहंकारसँ... 'अएलै शुभाकेँ लगनमा शुभे हे शुभे...' **सन मंगल गीत गबैत विदा भए जाइत छथि। महामालिक आ कलीमक माएकेँ कतहुसँ होश आएल।)**

कलीमक माए : महामालिक, ई कतए आबि हमरा फँसा देलहुँ? ई कोन तरहक खेल एतए चलि रहल अछि?

महामालिक : इएह प्रश्न तऽ हमरो भितरे-भीतर खकसिआह कएने चलि जाए रहल अछि।

कलीमक माए : हमरा तऽ लगैत अछि जे विरोधी हमरा लोकनिक थाह पाबि लेलक अछि। तेँ हमरा लोकनि दूध महक माछी बनी, ताहिसँ पहिने एतएसँ पड़ाएब नीक रहत।

महामालिक : मुदा एतएसँ कोनाकेँ पड़ाएब? हमरा सभक सभ आधुनिक संचार भंग भए चुकल अछि।

कलीमक माए : कोनो ने कोनो उपाय सोचए पड़त महामालिक!

(एही वार्तालापक बीच नीचाँ दिससँ गीतगानि सभ गीत गबैत वर-कानिआँकेँ ऊपर आनि रहलीह अछि। हुनका सभक अएबाक स्वरकेँ सुनतहि ओ लोकनि सचेत भए जाइत अछि। ताधरिमे आरती नारायण वस्त्राभूषणादिसँ

सजलि नवागता कनिआँ बनलि छथि तऽ अवधेश सेहो लाल धोती आ कसीदा कएल रेशमी कुर्ता धारण कएने अछि। कान्हपर दोपटा छैक तऽ माथपर घुनेस लागल पाग आ ललाटपर चानन काएल अछि। एहि दुरगमनिआ वर-वधुकेँ लएकेँ आबि रहल लोकक मेला मोख लग पहुँचैत अछि जतय सभ गोटे मिलि वर-कनिआँकेँ द्विरागमन संस्कारक विधि-व्यवहार जेना, गुरहत्थी, देहरि छेकाओन, परिछनि, चुमाओन आदि सभ पारम्परिक, औपचारिक रीति-रेबाज सभ हँसी-ठट्ठा, हाहा-हीही संगहि विधक गीत-नादक बीच कएल जाइत अछि। एहि विधि-व्यवहारक बीच महामालिक, कलीमक माए आ अवधेशक बीच कोनो गुप्त मंत्रणा चलैत अछि। एकरा सभक बीच होइत दुटप्पी देखि बुआजी चौकन्ना भेल एम्हर-ओम्हर तकैत षडयन्त्रक बात ध्यानपूर्वक बुझबाक प्रयास करैत छथि। महामालिकक ध्यान बुआजीपर पड़ैत अछि तऽ ओ हुनकापर आँखि गुड़ारैत अछि। बुआजी दृष्टिगत नहि होएबाक आ गुड़रल आँखिकेँ प्रभावहीन बनबैक प्रयासमे अनबुझ बनैत कलीमक माएकेँ पकड़ि-धकड़िकेँ मुखदेहरि लग भए रहल उत्सवमे सम्मिलित करैत छथि।)

बुआजी : देखै जाइ जाउ... बिनु देहरि छेकाओनक विधि कएने नवागता वर-कनिआकेँ घर नहि पैसए दै जाएब।

(बुआजीक कहितहि एहि रेबाजक अनुपालन होइत अछि आ एकटा ढिठगरि, दिदगरि सन महिला मोख छेकबाक लेल अवधेशक बहिनि बनि ठाढ़ि भए जाइत अछि। तकर बाद अवधेशसँ इनाम पओलहिपर नवागता भाउजि आरतीकेँ घर पैसए दैत अछि। एहि प्रकारें देहरि लगसँ वर-कनिआकेँ ओहि दुनू चंगेरामे पएर रोपबाबैक विध करैत अरछि-परछि भीतर आनि सोफापर बैसाओल जाइत अछि। एही काल अचांचकेमे मालती दीदी तीन

पहिआबाला कुर्सी जे 'हाथसँ चलाओल जाइत अछि' ताहिपर बैसाए बलात्कार आ तेजाबसँ पीड़ित महिलाकेँ अनलीह अछि। जकरा देखि अवधेश, महामालिक आ कलीमक माए अचरजमे पड़ि जाइत अछि। ओकरा लोकनिक मुँहपर फुफड़ी पड़ए लगैत छैक ओ लोकनि ओकरासँ ओनाकेँ मुँह चोरबैत चौकन्ना भए जाइत अछि जेना अपराधी होएबाक कारणे केओ समक्ष अएबामे संकोच करैत अछि। तहिना आब लागए लगैत अछि जे वएह सभ ओकरा संग निकृष्ट अपराध कएने अछि। आरती तऽ ओकरा देखैत देरी अपनहिसँ आदरपूर्वक अनेक लेल उठि बिदा होमए लगैत अछि मुदा सभ गोटए 'हँ...हँ...' कहैत ओकरा उठएसँ मना करैत अछि। एहि बीच एक बेर फेरसँ महामालिक, अवधेश आ कलीमक माएक बीच इशारा-इशारामे बातचीत होइत अछि। ताधरि मालती दीदी पहिआदार कुर्सीकेँ आगू बढ़बैत दुल्हा-दुल्हिनक समक्ष पहुँचि जाइत छथि।)

बुआजी : (आह्लादिकेँ प्रस्तुत करैत) आउ, अहाँ आगमनक शुभारम्भ अपन सहलोलनीकेँ बधाइ दैत करू।

(ओ महिला, आरतीसँ मिलि अपना ऊपर कएल उपकारक कृतज्ञता व्यक्त करैत शुभकामना दैत अछि। अहिरेबा एना किएक भेल? अवधेशसँ नजरि मिलैत देरी ओकरा अन्तःकरणमे पाछाँ घटल अन्यायपूर्ण घटना सभ स्वतः स्मरण आबए लगैत छैक। ओ एकाएक असहज हुअए लगैत अछि। ओकर चेतना भंग होइत अछि। ओकर आँखि अन्हरेबाक कारणे ओकरा आगाँ चहुँदिस अन्हारे-अन्हार पसरए लगैत छैक। मुसलाधार बरखा, बिर्रो-बिहाड़ि, बज्रपातक गर्जना, बिजलौका आदि चमकए लगैत छैक। जाहिसँ ओ बहुत बेसी उद्विग्न होइत पहिआबला कुर्सीसँ उठैत हाकरोस करैत ओकरा सभसँ दूर भागैत अछि।)

पीड़ित महिला : बचाउ...बचाउ...केओ हमरा एहि अधम मनुष्य सभसँ बचाउ... एकरा सभसँ बचाउ...ई सभ आतताइ, अनसैनी, आतंकी अछि... दुष्ट, कुकर्मी मनुष्यक रूपमे राक्षस थिक...।

(ओ एक बेर फेरसँ अपनाकेँ असहाय बुझैत हृदयविदीर्ण कानब कानए लगैत अछि। ओकर ई दशा देखि सभ भयभीत होइत अचरजमे पड़ि बकर-बकर ताकए लगैत अछि। बुआजी आ मालती दीदी साहस देखबैत ओकरा शान्त करैक ध्येयसँ ओकर दुनू गट्टा कसिकेँ पकड़ैत छथि।)

बुआजी : अहाँ अपन मोन-मतिकेँ अपन अधीन करू...। एहन धूमधामसँ मनाओल जाए रहल सामूहिक आशीर्वाद आ अभिवर्धनाक एहि शुभ समारोहमे अनियन्त्रित अभिव्यक्तिक अभिप्राय की अछि?

पीड़ित महिला : **(अवधेश दिस इशारा करैत)** बुआजी, इएह ओ निर्दय, निष्ठुर कुकर्मी थिक जे हमरा संग सामुहिक बलात्कार कएलक। इएह ओ चण्डाल हमर हत्या करैक उद्देश्यसँ हमरा ऊपर तेजाब ढारलक।

(कलीमक माए दिस देखबैत) ...आ ई व्यभिचारिनी बुढ़िआ. ..महिलाक नामपर कलंक, आतंकी लोकनिक सरदारनी छी। हमरा आर्थिक मदति पहुँचएबाक प्रलोभन दए बहला-फुसिआकेँ आतंकवादी शिविर तक लए गेल। **(महामालिक दिस इशारा करैत)** आ ई ऐन-मेन आरती दीदीक ससुरक प्रतिरूप जिनका अहाँ लोकनि आदरणीय व्यक्ति बुझैत छी, सएह थिक आतंकवादी गिरोहक सरगना। इएह बुढ़बा हमरा महिला आतंकवादी बनबैक षड्यंत्र रचने छल।

बुआजी : लगैत अछि अहाँक मोन-मति भ्रमिंत भए गेल अछि। मनमे हर क्षण अपन दुखक भावनामे निरन्तर डूमल रहलाक कारणे अहाँक दिक् भ्रमित भए गेल अछि। तेँ अहाँक एहि आरोपकेँ हमरा लोकनि कपोल कल्पित बात मानैत छी!

मालती दीदी : हँ, सत्ते कहैत छथि बुआजी! जकरा सभक उपर आतंकवादी होइक संगीन आरोप लगा रहल छी ओ लोकनि भद्रजन छथि। ओ भेला अवधेश, आरतीक पति जे बैंक प्रबन्धक

थिकाह। तिनका बगलमे नव आगन्तुक पाहुन आरतीक सासु-ससुर...बाँकी हमरा लोकनि सर-समाजक लोक भेलहुँ। एहिमेसँ के अहाँकेँ आतंकवादी बुझाइत अछि?

पीड़ित महिला : **(विक्षिप्त जकाँ हँसैत)** की कहलहुँ बैंक प्रबन्धक अवधेश... सासु-ससुर...बाप-बेटा...!

(ठठा-ठठाकेँ परिहासपूर्ण हँसैत अछि।) एतए केओ ककरो नहि थिक। ई सभटा आरती दीदीकेँ फँसएबाक चक्रव्यूह थिक। एहि नाटकमे केओ बैंक प्रबन्धक अवधेश बनल अछि तऽ केओ ओकर माए-बापक पाट अदाए कए रहल अछि। एक बेर आरती दीदी एकरा सभक फाँसमे फँसि एकरा लोकनिक शिविर तक पहुँचि जेतीह फेर तऽ दुइएटा रास्ता बचत, या तऽ हमरा जकाँ बनती, नहि तऽ महिला आतंकवादी...**(गम्भीर होइत)** हमरा ऊपर अहाँ लोकनि विश्वास करू। हम एकरा सभक नगर घूमि आएल छी। इएह सभ हमर एहि दुर्दशाक कर्ता-धर्ता थिक...इएह लोकनि एकटा कुलीन परिवारक महिलाकेँ कुलक्षणी, कुलटा, अलछखापड़ि बना देलक... **(झोंकमे)** बचाउ...बचाउ... ई सभ आततायी, अनसैनी, आतंकवादी थिक...।

(दुखसँ बेकल भए ओ रोदन पसारि दैत अछि। ओम्हर अनसैनी सभ ओहि महिलाक प्रति आँखि-मुँहसँ क्रोध प्रकट करैत पकपकाइत अछि। अवधेश तामससँ तमतमाइत अपन पौरुष प्रदर्शन करैत कसाइ सदृश ओहि महिला दिस बढ़ैत ओकर घेंट पकड़ि मोकए लगैत अछि। ओ छटपट करैत किकिआइत अछि। ओकर सकबक किछु नहि चलैत छैक। एम्हर महिला-मण्डली सेहो ओकरा बँचबैक प्रयास करैत अछि मुदा हुनको लोकनिक कोनो चेष्टा सफल नहि भए पबैत अछि। तेहुना समयमे धननजीक प्रवेश होइत छनि। ओ अबितहि पीड़ित महिलाकेँ मुक्त करबाक ध्येयसँ प्रहार करैत छथि। किछु कालक खीचा-तानीक बाद अवधेश ओकरा

छोड़ैत अछि। एम्हर, अवधेशक ऊपर अपराधी होएबाक आरोपक कारणें आरती 'की करी, की नहि करी'क इतस्ततः मे पड़ि जाइत अछि।)

आरती : अहाँ बेर-बेर ओहि महिलाक प्राण किएक लिअए चाहैत छी? की ई बात सत्य थिक अहाँ बैंक प्रबन्धक अवधेश नहि थिकहुँ? की इहो सत्य थिक जे जिनका अहाँ माए-बापक दर्जा दए एहि घरमे प्रवेश करैलहुँ, ओ लोकनि अहाँक असल माए-बाप नहि थिकाह? एहि महिलाक संग भेल बलात्कारक अधिनायक अहाँ थिकहुँ! एकरा ऊपर तेजाब अहाँ उझललहुँ! ठीके अहाँ लोकनि देशद्रोही छी! आततायी, अनसैनी छी! अहाँ लोकनि आतंकवादी छी! जँ नहि तऽ अपन मुँह किएक बन्न कएने छी? कहि दिअनु हिनका लोकनिकेँ जे एहि महिलाक मोन-मिआदि अपन काबूमे नहि छैक? एकर सभक सभटा आरोप-प्रत्यारोप फूसि थिक। मनगढ़न्त मनकथा थिक।

धननजी : आरती जी, अहाँ ककरासँ बात कए रहलहुँ अछि? की अहाँक लाख प्रयत्न कएलाक बादहु ओ एकहुटा प्रश्नक उत्तर सटीक दए पाओत?

आरती : **(जोर-जोरसँ अवधेशकेँ पकड़ि झकझोरैत)** अवधेश, हमर पूछल गेल प्रश्नक हमरा उत्तर चाही। हमरा पूर्ण विश्वास अछि अहाँ हमरा संग छल नहि कए सकैत छी। हमरा-अहाँक बीच विश्वसनीयताक ताग भग्न नहि भए सकैत अछि...जँ अहाँ किछु नहि बाजब तऽ एतेक तऽ कहिए सकैत छी जँ अहाँ अवधेश नहि छी तऽ फेर अहाँ के थिकहुँ?

धननजी : आरती मैडम, एहिठाम एकरा सभक जन्म कुण्डलीक चिट्ठा एकमात्र हम खोलि सकैत छी। अहाँकेँ अपन मोन-मतिकेँ मनबए पड़त। किएक तऽ ओहि पीड़ित महिलाक लगाओल एक-एकटा आरोप-प्रत्यारोप सद्यः सत्य अछि। ई सभ एकटा दुर्दान्त आतंकवादी थिक। एकरा सभकेँ पकड़बाक खातिर सरकार लाखोक इनामक घोषणा कएने अछि।

आरती : ...तऽ फेर ओ बैंकक भवन, बैंकक नामक टाँगल पट्टिका...

तकर भीतरक भागमे एकटा आधुनिक कार्यालय... ओतेक सहकर्मी लोकनि... धननजी, अहाँ हमरा कथीमे ओझराएबै चाहै छी? हमरा तऽ सभटा समझिसँ बाहर लागि रहल अछि...।

धननजी : ई सभटा अहाँकेँ वशमे अनबाक खातिर कृत्रिम प्रदर्शन कएल गेल छल। मोन भरबाक लेल एकटा तमाशा कएल गेल छल, जे अहाँ पतिआए गेलहुँ।

आरती : तमाशा... एकटा नाटक...?

धननजी : हँ, ओ सभटा एक दिनक लेल एकटा काल्पनिक दृश्यक ढाँचा तैआर कएल गेल छल। तकर बाद फेर दोहराकेँ अहूँ तऽ जाँच-पड़तालक ध्येयसँ ओतए नहिए गेलहुँ? आब जँ ओतए जाएब तऽ देखब जे ने ओ ठाँओ अछि, ने ओ देवी आ ने ओ कराहे बाँचल अछि...।

आरती : एतेक पैघ खुरापात किएक रचल गेल अछि हमरा संग?

धननजी : ओतबे नहि, आब देखू एकरा सभक वास्तविक किरदानीक खेल...। **(बुआजीसँ)** बुआजी लाउ हमर ओ झोड़ा...।

(बुआजी तिनपहिआ कुर्सीमे टाँगल झोड़ा आनिकेँ दैत छथि। धननजी झोड़ासँ हू-ब-हू ओहने कार कौआ निकालैत छथि जेहन आरतीक घरमे ओकर परम मित्र बनि रोटीक लोभे हेम-छेम जोड़ने छल। एक क्षण लेल आरती देखिकेँ अचरजमे पड़ि गेल। कलीमक माए देखितहि हाथ बढ़ाए छिनबाक लेल आतुर भए जाइत अछि।)

ई कौआ जकरा अहाँ एतेक प्रेमसँ रोटी खुअबैत छलहुँ से वास्तविक कौआ नहि थिक। ई तऽ कौआक समान एकटा कृत्रिम यन्त्र काग रोबोट थिक। जकर निर्माण कौआक आधार राखि कएल गेल अछि। ई अत्याधुनिक ड्रोन कैमरा सन उपकरण तकनीकसँ सुसज्जित अछि। ओतबे नहि, एकरामे सामान्य कौआ सन गुण-रूप विद्यमान छैक। ई कुचरबामे सेहो ततबे सक्षम अछि। जकरा बिनु जाँच-पड़ताल कएने, असली थिक आ कि रोबोट, तकर पहिचान करब कठिन अछि। ई दृश्य-श्रव्य-प्रक्षेप यन्त्रक काज करैत अछि। एहि

अग्रसोची उपकरणक उपयोग विशेषतः जासूसी कार्यमे कएल जाइत अछि।

आरती : जासूसी...! तऽ हमर निगरानी भए रहल छल?

धननजी : हँ, एहि कौआकेँ सन्देशवाहक प्रतिनिधिक रूपमे प्रतिनियुक्त कएल गेल छल। अहाँक एक-एकटा क्रियाकलापक एहि कौआक माध्यमे ई लोकनि तत्क्षण नीक जकाँ, बिनु कोनो असुविधाक जानकारी पबैत छल...।

महामालिक : **(अवधेशकेँ आदेश दैत)** मुँह की तकैत छेँ। जखन पानि नाक छू लेत तखन बुझबें! आक्रमण... आक्रमण...।

(अकस्मात् अवधेशक चित्त विक्षेप होइत अछि। ओ अपन डाँड़सँ पिस्तौल निकालि आरतीक माथामे सटाए दैत अछि। संगहि अपन बाहुपाशमे ओकर घेंटकेँ फँसा लैत अछि। ओतए हाहाकार मचि जाइत अछि।)

अवधेश : **(क्रोधसँ)** जे जतए छेँ ततए तहिना ठामहि ठाढ़ रह... केओ अपन डेग उठएबाक प्रयास जुनि करिहें। जँ दुःसाहस करबें तऽ एहि पिस्तौलक एक-एकटा गोली एहि चम्पाकली सन छोकड़िआक छलड़ीकेँ छिलैत, मगजकेँ फाड़ैत, एहि पारसँ ओहि पार भए जाएत। हँ...से बुझि रखिहें।

महामालिक : **(कलीमक माएसँ)** अहाँ हमर मुँह की निहारैत छी। आब एतएसँ यथाशीघ्र प्रस्थान करबाक तैआरी करू...।

कलीमक माए : **(तेजाब पीड़ित महिला दिस इशारा करैत)** एहि अक्खज माउगिकेँ सेहो संग लए चलू। एकरे कारणे एतेक हरमाद उठबए पड़ल अछि।

(महामालिक ओहि पीड़ित महिलाकेँ केश धरैत ओकरा संग अमानवीय व्यवहार करैत अछि। ओ जोर-जोरसँ अट्टहास करैत, धननजीक मखौल उड़बैत ओकरा हाथसँ कौआ छिनि लैत अछि। ओम्हर अवधेश पिस्तौलक नोकपर आरतीकेँ लए विदा होइत अछि। ओ सभ एक डेग सरि भएकेँ हनबो नहि कएने छल कि धननजी अपन पिस्तौल निकालि पाछाँसँ अवधेशक कनपट्टीमे

भिड़ा दैत छथि। ओ लोकनि ठकमका जाइत अछि आ एक-दोसराक संग आँखिक इशारासँ गुप्त मंत्रणा करैत अछि। धननजी ओकरा सभकेँ काबूमे अनैत आरतीकेँ मुक्त करैत छथि आ ठीक ओहिना जेना आरतीकेँ वशमे करैक लेल हत्थकण्डाक आत्मसात् कएने छल, तहिना अवधेशक गड़दनिकेँ अपन बाहुपाशक फानीमे फँसबैत ओकर हाथक पिस्तौल छिनि अपन अधिनस्थ करैत छथि। फेर प्रमाण स्वरूप जेबीसँ अपन नाम-ठेकानक चिट्ठा निकालि ओकरा आँखिक समक्ष प्रस्तुत करैत छथि।

धननजी : पढ़! एहिमे की-की लिखल अछि... जल्दी-जल्दी पढ़...?
(अवधेश मोनेमोन चिट्ठापर लिखलकेँ पढ़लाक बाद हकुलाए लगैत अछि। ओकर आतुरता बढ़ि जाइत छैक।) हम कहलिऔक एहि चिट्ठापर की लिखल अछि तकरा पढ़ैक लेल... (ओ हिआ हारैत कहुना-कहुनाकेँ पढ़ैत अछि।)

अवधेश : डी.सी.पी. तरुण प्रकाश... खुफिआ विभाग...।
(अवधेशकेँ पढ़िते देरी महामालिक आ कलीमक माए हतप्रभ भए जाइत अछि।)

धननजी : हँ, डी.सी.पी. तरुण प्रकाश...। तोँ सभ की सोचि रहल छलही...! एहिठामक शासन-प्रशासन हाथपर हाथ दए बैसल अछि! तोरा लोकनि छुट्टा भए एतए अपना मनपसीनक घटना सभक आविर्भाव करैत रहबें आ हर्षादिसँ बटगबनी गबैत रहबें! तोरा लोकनिक देशक सीमानमे पएर पड़ितहि जन्म-जन्मान्तरक जन्म-कुण्डली खँगारब आरम्भ कए देल गेल छल। (अवधेशकेँ दरमेसैत) बता... आरती नारायणक संग एतेक बड़का चक्रचालिसँ भरल नाटक किएक कए रहल छलें? जल्दी बता नहि तऽ भोंट चहकाए देबौक? (दोहरा-तेहरा कए एकहि बातकेँ घुमा-फिराकेँ पुनः पूछैत छथि।)

अवधेश : हम किछु नहि जनैत छी...।

धननजी : तोँ सभ किछु जनैत छेँ ...एहि चक्रचालिक सर्वज्ञाता थिकेँ। जँ सोझ रीतिएँ जवाब नहि देबें तँ हाथ घुमाए नाक पकड़ाएब

हमहुँ जनैत छी...।

(धननजी ओकरा देह सिहराबैबला यातना दैत छथि, जाहिसँ ओ त्रस्त होइत बतबैक हामी भरैत अछि।)

अवधेश : नहि...आब नहि...आब बस करू... बतबैत छी...हमरा किछु नहि करू...हम सभटा बतबैत छी...।

धननजी : तऽ जल्दी बता...।

अवधेश : आरती नारायणक पिता कर्नल अवध नारायणकेँ अपन देशसेवाक अवधिमे देशक सीमा पर आतंकवादीक संग आमने-सामने मुठभिड़ाओ बजरि गेल छल। जकर मोकाबला करैत-करैत दूर आतंकवादीक शिविरक भीतर ढूकि गेल छल। जतए अपन वीरताक अदम्य पराक्रम देखबैत ओ अपन देशक असंख्य दुश्मन सभकेँ परास्त करैत मारि खसेलक। ओहि युद्धमे महामालिकक एक मात्र पुत्र कलीमक सेहो इन्तकाल भए गेल छल। ताहि दिन महामालिक, कलीमक माएकेँ सान्त्वना दैत प्रतिज्ञा कएने छलाह जे कर्नल अवध नारायणक सन्तानकेँ आतंकवादी बना, ओकरा अपनहि देशक खिलाफ लड़ाका बनाकऽ बदला लेल जाएत।

धननजी : ...आ एहि मिशनकेँ पूरा करबाक दायित्व तोंही उठओने छलें...!

अवधेश : हँ...ई भार हमरे सौंपल गेल छल...।

धननजी : आ तोँ तकरा क्रियान्वित करैक लेल उचित-अनुचित नहि सोचि, अनठेकानी निधोक भए एहि शहर चलि अएलें...। फेर की कएलें...?

अवधेश : एतए पहुँचलाक बाद पता चलल कर्नल अवध नारायणकेँ पुत्र नहि एक मात्र सन्तान ओकर बेटी आरती नारायण अछि...एहि आरती नारायणक ताक-हेरमे भूल-चूकक कारणे **(पीड़ित महिला दिस संकेत करैत)** एहि महिलाकेँ आरती नारायण बुझि ओकरा कलीमक माएक चक्रचालिमे फँसा शिविर तक लए गेलहुँ। मुदा जखन भेद खुजल जे ई महिला आरती नारायण नहि थिक तऽ हमरा एक बेर फेरो एहि शहर

आपस पठाओल गेल।

धननजी : ...आ एहिबेर सत्तहिमे आरती नारायण तोरा सभक चतुर चालिमे ओझराकेँ फँसि गेल। आ ताबतमे ई पीड़ित महिला तोरा लोकनिक प्रशिक्षण शिविरसँ फरार भए गेल...।

अवधेश : हँ! पीड़ित महिलाक फरार भेलापर महामालिककेँ अन्देशा भेल जे कहीं ओ महिला, शिविरक गोपनीय सूचना पुलिस तक नहि पहुँचा दिअए...।

धननजी : तेंतों आतंकवादीक सरगना महामालिकक गोपनीयताक रक्षार्थ ओकरा संग बलात्कारक बाद ओकरा ऊपर तेजाब उझलि देलही...?

अवधेश : हँ...मुदा एहिमे हमर कोनो कसूर नहि छल...हमरा शख्त आदेश देल गेल छल...एहि महिलाकेँ प्राण-दण्ड देबाक लेल...हमर महामालिकक आदेश जँ पुड़ित नहि होएतनि तऽ फेर हमरा प्राण-दण्ड देल जइतए...।

धननजी : अच्छा...से बात छल...आब तों ई बता, आरती नारायणक लेल आर की-की आदेश देल गेल छलौ...?

अवधेश : आरती नारायणकेँ पूर्णतया अपना अधीनमे अनलाक बाद आब एकरा महामालिकक अधीन करबाक बेर आबि गेल छल... ओ एतएसँ आतंकवादी प्रशिक्षण शिविर लए जाएकेँ महिला आतंकवादी बनैक प्रशिक्षण दिअबितथि...।

(एतबेमे महामालिक जे पहिनहिसँ बघुआएल रहैत अछि, से अपन नव दाओ-पेंच खेलाइत क्रोधसँ तमतमाइत अवध ेशक ऊपर प्रहार करैत टूटि पड़ैत अछि। ओकर उद्देश्य धननजीक हाथक पिस्तौल छिनैक सेहो रहैत अछि।)

महामालिक : **(अवधेशसँ)** धोखाबाज, कालकण्टक! जाहि थारीमे खएलें ताहीमे भूर कएलें...? आइ तोरा नहि छोड़ब...!

(धननजी ओकरा लोकनिक युक्तिकेँ भाँपि गेल छलाह। ओ ओहि तिकड़मकेँ मुँहे भरे खसबैत असफल करैत छथि। एकबेर फेरसँ धननजी ओकरा सभकेँ दहसतिमे आनि अपन कृपा भावक पात्र बना लैत छथि।)

धननजी : ...तऽ तोरा लोकनि एहि देशक युवक-युवतीकेँ मतिभ्रम कए

मिथ्या दिशाक बाट देखएबाक ओरिआओन कए रहल छलें?

(ताहीखन बाहर नीचाँसँ उच्च गम्भीर ध्वनिमे लाउडस्पीकरसँ संत्रासवादी सभकेँ चेताओल जाइत अछि। सूचनाक प्रसारण सुनि ओ लोकनि हतोत्साहित होइत अछि आ वातावरण शान्त भए जाइत अछि)

उदघोषणा : **(नेपथ्यसँ)** महामालिक, तोरा सभ चहुदिससँ घेराए गेलह अछि, तेँ बेसी चालाकी करैक चेष्टा नहि करियह आ सुभग मोने अपनाकेँ जिन्दा गिरफ्तारी दए दै जाह अन्यथा सैनिक दल अपन पराक्रम देखाओत तऽ बँचबाक गुंजाइस नहि रहतह...।

(आब कोनो उपाय नहि देखि पड़ैत अछि तऽ कलीमक माए तत्क्षण अपन तरकसक अन्तिम प्रहारक रूपमे अशोभनीय नृत्य शुरू कए दैत छैक। एहि क्रममे ओकरा देहसँ साड़ीक आँचर शनैः शनैः हटैत नीचाँ खसि पड़ैत अछि। तकर बादक भयानक दृश्य देखि सभ आश्चर्यमे पड़ि जाइत अछि। ओकरा गाड़ामे भारी-भरखरि बमक माला पहिराओल अछि। ओ आत्मघाती बनि जोरदार ठहाका मारि-मारिकेँ हँसैत क्रमशः सभ गोटेपर प्रबल भए जाइत अछि। सभ केओ अपन मृत्युक निश्चितताकेँ देखि, प्राण संकटसँ बचएबाक हेतु 'त्राहिमाम्-त्राहिमाम्' करय लगैत अछि। एकबेर फेरसँ अनसैनी लोकनिक मुखक शोभा स्वच्छन्द भए जाइत छैक।)

कलीमक माए : कठिनतम... अतिशय कठिनतम... तोरा लोकनिकेँ एतएसँ प्राण बचाकेँ निकलब... अति कठिनतम... महामालिक आब मुँह की ताकि रहलहुँ अछि! निकालू एहि पहिराओल वर-मालाक दूरहिसँ नियन्त्रण करैबला यन्त्र आ अपन प्राणक रक्षा करैत टीप दिऔक ओकर बटनकेँ, देखाए दिऔक आतंकवादीक तागतिकेँ!

महामालिक : सुनै जाइ गेलही ने! कलीमक माएक मुखारवृन्दसँ निकलल एक-एकटा शब्दक अमृतवाणी स्वरूप विज्ञप्ति! ओ जे पूरा-पूरी सए अट्ठाबज्जरिक माला, अर्थात एकसए आठ बमसँ बनल सुभग गिरिमिहार देखि रहलिही ने, तकर नियंत्रण यंत्र हमरा

हाथमे महजूत अछि। (यंत्र देखबैत) एकर बटमकेँ टिपतहि क्षण भरिमे सभटा स्वाहा...। चिथरा-चिथरा भए जेतौक, तोरा लोकनिक ई सुन्नर-सुन्नर, कोमल-कोमल, खाएल-पील काया! चिन्ह-पहचिन्ह सभटा मटिआमेट भए जेतौक... देखै जाइ जो हमरा लग समय बहुत अल्प अछि... तें जऽ अपन जान बचएबाक छौक तऽ जेना-जेना कहैत छिऔक तेना-तेना बिन झीका-तीरीक कएने चलि जाइ जो अन्यथा सोचि ले...!

(आब अवधेश अपनाकेँ मुक्त होइत धननजीक हाथसँ दुहू पिस्तौल छिनि तकरा हवामे भँजैत हुनका संग घोर अभद्र व्यवहार करब शुरू कए दैत अछि।)

अवधेश : घेघ छल मोरा, पलटि गेल तोरा... तों देखलहक कि नहि कोनाकेँ तोहर जीतल बाजी छिनि हमरा लोकनि अपन अवसरमे परिवर्तित कए लेलहुँ... एकरे नाम थिक आतंकवादी अनसैनी, संत्रासवादी... हँ... आब हम पाँच तक गिनती करबौक... ताधरिमे तों सभ एहि भीतुरका कमरामे ढुकि जाइ जो... हँ तऽ आब शुरू करैत छी ओ गिनती...एक...दू...।

(सभ गोटेकेँ बलपूर्वक हुर-बरेड़ा करैत, हाहाकार मचबैत एक-एक कएकेँ भीतर कोठली दिस ढुकबैत जाए रहल अछि। सभ केओ 'गे माइ, गे दाइ' करैत, आतंक आ विस्मयक सामना करैत, अति व्याकुल भए त्राणक लेल त्राहि-त्राहि करैत चीत्कार करए लगैत अछि। महामालिकक प्रचण्ड अट्टाहास, कलीमक माएक उत्पाती नृत्य वातावरणकेँ डेराओन बना देलक अछि। अवधेशक गिनतीक 'तीन-चारि. .. पाँच' पूरा भए जाइत अछि। मुदा धननजी, आरती आ बुआजी भीतर जाइसँ मना करैत छथि।)

महामालिक : हमरा लोकनि जतबे कहैत छिऔक, ततबे करै जाइ जो... अन्यथा एतेक लोक जे अपटी खेतमे मारल जाएत... तकर जिम्मेदार तोंही सभ होएबें...।

बुआजी : तोरा सभकेँ बुझै गुण भ्रम छह। तोरा लोकनिक पापक भण्डा फूटि चुकल अछि। आब ओहिसँ निकलल एक-एकटा चिनगी

तोरा सभक छल-प्रपंची दुनिआकेँ डाहि सुड्डाह कए देत। जँ कनिओ काल एना रहि गेल तऽ जे दुर्दशा होइ जेतह से देखत एहि देशक लोक...।

महामालिक : हे... बुढ़िआ तोहर एतेक साहस जे महामालिकक समक्ष अपन जुबान खोलबें...ठहर बुढ़िआ, निकालैत छी तोहर हेकड़ी...।

(ओ सभगोटे बुआजीपर टूटि पड़ैत अछि। ताहिखन नाटकीय ढंगसँ ए.सी.पी. चतुर चौपाल आ निरीक्षिका पद्मा पाकड़ि आक्रमण हेतु बिजलीक वेगसँ आगाँ बढ़ैत महामालिकक हाथसँ दूरवर्ती नियंत्रक यंत्र छिनि लैत अछि। तत्परता देखबैत पद्मा पाकड़ि अपन पिस्तौल तनैत कलीमक माएकेँ अपन काबूमे करए चाहैत अछि। ओम्हर धननजी सेहो सक्रिय होइत अवधेशक दुनू पिस्तौल छिनि ओकरा ऊपर तानि दैत छथि। ताबत धमाधम करैत एकटा सैन्य दलक सेहो प्रवेश होइत अछि। ओ लोकनि आधुनिक हथिआरसँ लैस धाइँ-धाइँ करैत अपराधी सभक पकड़-धकड़ करैत अछि। दुनू पक्षक बीच वेश खीचा-तानी, जोर-जबरदस्ती होइत अछि। अन्ततोगत्वा ओ सभ परास्त होइत अछि। ए. सी.पी. चतुर चौपाल आ पद्मा पाकड़ि कलीमक माएकेँ सावधानीपूर्वक पकड़ि बाहर दिस लए जाइत अछि। बाहर गेलाक किछु क्षणक बाद शृंखलाबद्ध बम धमाकाक आवाज आ बिजलौका छिटकब सन इजोत खिड़की एवं मोख दिससँ अबैत अछि। भीतर घरमे ठूसल लोक सभ कोलाहल करैत बाहर निकलैत अछि। सभ मिलि पीड़ित महिलाक सहयोग करैत ओकरा यहिआबाला कुर्सीपर बैसबैत अछि। धननजी अपन सैन्य दलक सहयोगसँ महामालिक आ आतंकवादी अवधेशकेँ पूर्ण अधीन कऽ लैत छथि।)

धननजी : आब तोरा सभक पचीसी खेलक गोटी अन्तिम घरमे पहुँचि गेल छौक, जतएसँ उनटा चक्कर लगाकेँ निकलब कठिन छौक। तोरा लोकनिक मखरबाक समय सेहो हाथसँ निकलि चुकलहु...सभ तरहक लाइ-लपट आ धुरफन्दीक खेल समाप्त भए चुकल छौक।

आब तोरा सभक जएपन्थीक बेर आबि चुकल अछि। तोरा लोकनिकेँ भारत माताक असंख्य रक्षक लोकनिसँ भेंट-घाँट कराओल जाएत। ओ लोकनि अपन सवा अरब देशवासीक दुश्मनक प्रतीक्षामे छथि। देशक रक्षा करबाक व्रत लेने छथि। ओ लोकनि तोरा सभ सन मुट्ठी भरि छद्म आतंकवादीक मनसुबा कहिओ पूरा नहि होमए देताह। एहि सवा अरब देशभक्तक समक्ष तोरा लोकनि नोसि समान छें... देखलें ने, कोनाकेँ बकाइनि पिआओल गेलौ अछि तोरा लोकनिकेँ ?

(सैन्यदल आतंकवादी सरगना महामालिक आ अवधेशकेँ अपन सुरक्षा घेरामे लैत विदा होइत अछि।)

आरती : **(आक्रोशित होइत)** हँ, लए जाउ एंहि देशद्रोही मनसठ जानमारा सभकेँ। एकरा सभकेँ बीच चौरस्तापर सामुहिक फाँसी दिआउ, एकरा सभक हाड़ आ माँसकेँ कुकुर, गिद्ध, गीदड़ सभसँ नोचबाउ, एकरा लोकनिक एहन दुर्गति कराउ जाहिसँ फेर केओ आतंकवादी एहि देश दिस खराब आँखिसँ देखबाक दुस्साहस नहि करए...।

(आरती बजैत-बजैत विक्षिप्त सन करए लगैत अछि। ओ एकाएक लए जाए रहल आतंकवादी अवधेशपर प्रहार करए लगैत अछि। अपन नहक नोछारसँ ओकर शरीरकेँ ठाम-ठाम दकचम-दकचा कए दैत अछि। एहि झीका-तीरीमे अवधेशक कपड़ा फाटि-चीटि चित्थी-चित्थी भए जाइत अछि। ओकर मुखाकृति लहूलुहान भए जाइत अछि। उम्हर महिला-मण्डली सेहो हरलनि ने फुरलनि महामालिक पर हमला कए दैत छथि। एकटा महिला डोरीक व्यवस्था कए ओहि डोरीमे गाँथि-गाँथिकेँ चप्पलक एकटा माला तैआर कए महामालिकक गड़ामे पहिरा दैत छथि। बहुत मसकिलसँ सुरक्षाबलक जवान लोकनि ओहिसँ पार पबैत दुनू आतंकवादीकेँ लए बाहर दिसकेँ प्रस्थान करै जाए छथि। धननजी सेहो पीड़ित महिलाकेँ लए विदा भए चलि जाइत छथि। एहि बीच लए जाए रहल

आतंकवादीपर आरती दोबारा आक्रमण करैत अछि। मालती दीदी ओकरा पकड़ैत एक थापड़ लगबैत छथि तखन ओकर मति घुमैत अछि।)

मालती दीदी : आरती, अहाँ धैर्यवती बनि क्रोध आ असमर्थताकेँ त्यागि अपन भीतरक अन्तरात्माकेँ जगाउ जे हर्ष वा विषाद भेलहुँपर नीक-अधलाह बुझबाक बौद्धिक शक्तिक आ शान्त चित्तक आविर्भाव करत...।

बुआजी : हँ...जे किछु भए गेल तकर तऽ भरण नहि कएल जाए सकैत अछि मुदा पछिला कएल गलतीकेँ सुधारि अवलम्बहीन असोधारकेँ रोकल जाए सकैत अछि।

आरती : बुआजी, अहाँ सभ हमर मनोव्यथाकेँ हटएबाक उद्देश्यसँ सहानुभूतिपूर्ण वचन बाजि-बाजिकेँ एतेक ढाढस जुनि दिअ। अहाँ लोकनि हमरा बिनु कोनो अवसरक झूठक सान्त्वना हमरा जुनि दिअ। हमरा अपन कएल पापक भोग भोगए दिअ। हम पाथरसन ज्ञान-शून्य बनि एकटा देशद्रोहीक संग देलहुँ...एकटा दुर्दान्त आतंकवादीक संग रहलहुँ...ओतबे नहि, अपन देशक प्रति इमानदारी, नैतिक जिम्मेदारी आ सत्यनिष्ठाक आन्दोलनकेँ अवहेला कएलहुँ अछि। **(धीरे-धीरे हाकरोस करए लगैत अछि।)** हम अपन वंश परम्पराक रक्षक सन्तान नहि बनि, कुबाटपर चलि, अपन कुलवृक्षक अवघात कएलहुँ अछि। कहिओ नहि मेटएनिहार कलंक लगएलहुँ अछि। हम जेहने करनी कएल, तेहने फल भोगबाक अधिकारिणी छी। हमरा द्वारा कएल पापक उचित प्रायश्चित मृत्यु-दण्ड थिक।....छोड़ि दिअ हमरा...हम नहि जीबए चाहैत...छी...हम देशद्रोहिणी छी...हम देशद्रोहिणी छी...।

बुआजी : नहि, अहाँ देशद्रोहिणी नहि छी...ई सभटा जानि-बुझिकऽ नहि, अनजानमे भेल अछि...। भूलवश उन्मार्ग चलि भेल देशक अवघातकेँ सम्परिवर्तित करैत अपन आगाँक जीवन कृत्यसंकल्पित भावसँ सर्वतोभावेन मानवताक सेवामे समर्पित कए दिअनु...ई अहाँक लेल अभ्युदक अवसर थिक...। **(हठात्**

आरतीक शरीरक रक्त संचार रूकबाक कारणे ओकर अंग-अंग गतिहीन होमए लगैत अछि। सभ केओ घबराइत अछि। एकटा महिला ओकर नाड़ीक गति ज्ञात करए लगैत अछि। ताहीखन बाहर सीढ़ीपर नीचाँ दिससँ प्रभव जोर-जोरसँ...'मौसी...मौसी...' चिकड़ैत यथाशक्ति द्रूत गतिमे औहरि मारैत निछोह पड़ाएल चलि आबि रहल अछि। सहसा सभक ध्यान ओहि अएबाक आवाज दिस केन्द्रित होइत छैक। आरतीकेँ सेहो 'मौसी...मौसी...' कहैक प्रभवक आवाज सुनि पड़लापर होश आबय लगैत छैक। आकि प्रभवक प्रवेश होइत अछि। ओ मोख लग ठाढ़ भए अपन उत्तेजित साँसकेँ नियंत्रित करैत अछि।)

प्रभव : मौसी...अहाँ ठीक छी ने? नानी तँ कहलक मौसीक घरहिमे बम फूटल अछि...तेँ हम निछोह दौड़ल अएलहुँ अछि...कहूँ हमर मौसीकेँ... नहि...नहि...ऐना कोना भए सकैत अछि... **(कहैत अपन दुनू कान पकड़ैत अछि।)** अहाँ तऽ हमर माए सदृश मौसी छी...सत्ते, आब हमरा अपन मुइल माए नहि यादि अबैत अछि...मौसी अहाँ जे छी...।

ओ कनैत आरती दिस दौड़ैत अछि। आरती सेहो अपन बाहुपाशमे प्रभवकेँ अँटबैत ओकरा अपन अवलम्ब मानि फफकि-फफकिकेँ कानए लगैत अछि। सभक आँखिमे नोर भरि जाइत अछि। तखने निरीक्षिका पद्मा पाकड़िक प्रवेश होइत छनि।)

पद्मा पाकड़ि : आरती नारायण, नीचाँ अहाँक माए-बाबूजी अहाँक अएबाक प्रतीक्षा कए रहला अछि।

(आरती सहित सभ केओ पद्मा पाकड़िक मुखसँ निकलल शब्दकेँ उदयाचल पर्वतसँ अबैत सूर्योदयक धाही मानि सभ गोटे ओम्हरे ताकए लगैत अछि। धीरे-धीरे मंच अन्हारमे परिवर्तित भए जाइत अछि।)

समाप्त

मुक्ति यात्रा



आनन्द कुमार झा

पिता : स्व. अभय कान्त झा

माता : श्रीमती इन्द्रकाली झा

जन्म स्थान : मेंहथ, झंझारपुर, मधुबनी, बिहार- 847404

जन्म तिथि : 2 मार्च, 1977 ई.

रचना प्रकाशित : मैथिली नाटक

: 1. टाकाक मोल (2000 ई.) 2. कलह (2001 ई.) 3. बदलैत समाज (2002 ई.) 4. धधाइत नवकी कनियाँक लहास (2003 ई.) 5. हठात् परिवर्तन (2005 ई.) 6. मुक्ति यात्रा (2017 ई.)

अप्रकाशित नाटक : 1. पहिल परिचय 2. विचार धारा 3. कलियुगक कनियाँ 4. लाठीक जोर 5. माटिक सीता 6. हतासल युवक 7. चतुर्थीक सेनुर 8. किलोल 9. हिलकोर 10. सहोदर 11. उदाहरण (हिन्दी)

अप्रकाशित उपन्यास : 1. बगलवाली 2. भैयारी बँटबारा 3. मौन प्रेम 4. हरवाहा

यात्रा प्रसंग : कोलकातासँ दिल्ली

पुरस्कार आ सम्मान : 1. साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार-2011 ई.
2. विदेह युवा सम्मान-2011 ई.
3. विनय तरुण युवा पुरस्कार-2011 ई.
4. मिथिला गौरव सम्मान-2012 ई.
एहि संग चेतना समिति, पटना, मिथिला सांस्कृतिक परिषद, जमशेदपुर, जिला प्रशासन, मधुबनी, सहित मिथिलाक ग्राम-गामक रंगमंच सभ पर कतेको बेर सम्मान प्राप्त करबाक सुअवसर प्राप्त।

सम्पर्क : मिथिला स्टेशनरी आ मैथिली पुस्तक केन्द्र
जनता कॉलेजक समीप, कोर्ट चौक, झंझारपुर
जिला- मधुबनी- 847404
मो. - 09939041881

ईमेल : anandmehath@gmail.com



पटना/मधुबनी
navarambhprakashan@gmail.com



मूल्य : ₹150